वैशाख - २

# सर्वोच्च अदालत बुलेटिन

पाक्षिक प्रकाशन

| वर्ष ३४, अङ्क २ | २०८२ वैशाख १६-३१ | पूर्णाङ्क ७८८ |
|---|---|---|

प्रकाशक

## सर्वोच्च अदालत

रामशाहपथ, काठमाडौं

फोन नं. ४२००७१२, ४२००७२९, ४२००७५०, Ext.२२६९ (सम्पादक), २२७० (सम्पादन शाखा), २१७० (छापाखाना), २२७४ (बिक्री)

टोल फ्री : १६६०-०१-३३३५५, फ्याक्सः ४२००७४९, पो.ब.नं.२०४३८

Email: info@supremecourt.gov.np, admin@supremecourt.gov.np / Web: www.supremecourt.gov.np

**सम्पादन तथा प्रकाशन समिति**

| | |
|---|---|
| माननीय न्यायाधीश श्री हरिप्रसाद फुयाल, सर्वोच्च अदालत | - अध्यक्ष |
| माननीय न्यायाधीश श्री सुनिलकुमार पोखरेल, सर्वोच्च अदालत | - सदस्य |
| मुख्य रजिस्ट्रार श्री देवेन्द्रराज ढकाल, सर्वोच्च अदालत | - सदस्य |
| नायब महान्यायाधिवक्ता श्री टेकबहादुर घिमिरे, महान्यायाधिवक्ताको कार्यालय | - सदस्य |
| रजिस्ट्रार श्री भद्रकाली पोखरेल, सर्वोच्च अदालत | - सदस्य |
| अधिवक्ता श्री सुरज खत्री, उपाध्यक्ष, नेपाल बार एसोसिएसन | - सदस्य |
| वरिष्ठ अधिवक्ता श्री हरि शंकर निरौला, अध्यक्ष, सर्वोच्च अदालत बार एसोसिएसन | - सदस्य |
| डा.कृष्णप्रसाद बस्याल, डिन, त्रिभूवन विश्वविद्यालय, कानून संकाय | - सदस्य |
| सहरजिस्ट्रार श्री अर्जुनप्रसाद कोइराला, सर्वोच्च अदालत | - सदस्य सचिव |

**सम्पादक :** श्री कालीबहादुर साम्यु लिम्बू

**सम्पादन तथा प्रकाशन शाखामा कार्यरत् कर्मचारीहरू**

शाखा अधिकृत श्री सुजता उप्रेती
शाखा अधिकृत श्री सुकराम मोक्तान
शाखा अधिकृत श्री विनिता महर्जन
शाखा अधिकृत श्री समिता श्रेष्ठ
नायब सुब्बा श्री सन्तोष घिमिरे
सिनियर प्रुफरिडर श्री रेशम शर्मा
कम्प्युटर अपरेटर श्री विदुर खड्का
कम्प्युटर अपरेटर श्री अर्जुन सुवेदी
कार्यालय सहयोगी श्री अच्युतप्रसाद दाहाल

**भाषाविद् :** श्री रामचन्द्र फुयाल

**बिक्री शाखा**

नायब सुब्बा श्री खिमा पोखरेल

**मुद्रण शाखामा कार्यरत कर्मचारीहरू**

मुद्रण अधिकृत श्री आनन्दप्रकाश नेपाल
सिनियर प्रेसम्यान श्री योगप्रसाद पोखरेल
सिनियर मेकानिक्स श्री निर्मल बयलकोटी
सिनियर कम्पोजिटर श्री श्यामकृष्ण प्रजापति
सिनियर प्रेसम्यान श्री सविता पोखरेल
सिनियर प्लेटमेकर श्री प्रमिलाकुमारी लामिछाने
सिनियर बुकबाइन्डर श्री तारा वाग्ले
सहायक कार्टोग्राफर श्री विपिन अधिकारी
बुकबाइन्डर श्री सरिता चक्रधर
बुकबाइन्डर श्री मदन तिमल्सिना
बुकबाइन्डर श्री कृष्णप्रसाद घिमिरे
प्रेसम्यान श्री केशवबहादुर सिटौला
बुकबाइन्डर श्री अच्युतप्रसाद सुवेदी
कार्यालय सहयोगी श्री धनमाया नगरकोटी
कार्यालय सहयोगी श्री रमेश नेपाल


**विभिन्न इजलासहरूबाट सम्पादन शाखामा प्राप्त भई यस अङ्कमा प्रकाशित निर्णय / आदेशहरू**

| | | | |
|---|---|---|---|
| पूर्ण इजलास | | इजलास नं. ७ | |
| संयुक्त इजलास | | इजलास नं. ८ | ४ |
| इजलास नं. १ | | इजलास नं. ९ | ९ |
| इजलास नं. २ | | इजलास नं. १० | १७ |
| इजलास नं. ३ | ५ | इजलास नं. ११ | |
| इजलास नं. ४ | १० | इजलास नं. १२ | ३ |
| इजलास नं. ५ | | इजलास नं. १३ | |
| इजलास नं. ६ | १ | इजलास नं. १४ | |
| **जम्मा** | **१६** | **जम्मा** | **३३** |

**कूल जम्मा १६ + ३३ = ४९**

# नेपाल कानून पत्रिकामा

प्रकाशित भएका फैसलाहरू (२०१५ सालदेखि हालसम्म)

हेर्न, पढ्न तथा सुरक्षित गर्न

# www.nkp.gov.np

मा जानुहोला ।

**खोज्ने तरिका**

सर्वप्रथम **www.nkp.gov.np** लगइन गरेपश्चात् देखिने पृष्ठमा **शब्दबाट** भन्ने स्थानमा आफूले खोज्न चाहेअनुसारको कुनै शब्द नेपाली युनिकोड फन्टमा टाइप गरी हरियो बटनमा रहेको खोज्नुहोस् भन्ने बटनलाई थिची खोजी गर्न सक्नुहुनेछ । यसबाट खोजेअनुसारको फैसला प्राप्त गर्न नसकेमा मुद्दाको किसिम, मुद्दाको नाम एवं निर्णय नं. तथा ने.का.प. विवरणमा रहेका विविध शीर्षकबाट आफूले चाहेअनुसार फैसला खोज्न सकिनेछ । त्यस अतिरिक्त **नेकाप प्रत्येक वर्ष** र **हाम्रो बारेमा** समेतबाट हेर्न सक्नुहुनेछ ।

**यस पत्रिकाको इजलाससमेतमा उद्धरण गर्नुपर्दा निम्नानुसार गर्नुपर्ने छः**

**सअ बुलेटिन, २०८..., ... .... – १ वा २, पृष्ठ ....**

**(साल) (महिना)**

**उदाहरणार्थः सअ बुलेटिन, २०८२, वैशाख – २, पृष्ठ १**

का.जि.द.नं. ३९।०४९।०५०

## सूचना

**"नेपाल कानून पत्रिका र सर्वोच्च अदालत बुलेटिन"** को **"वार्षिक ग्राहक"** बन्न चाहनेका लागि **२०७६ वैशाख अङ्क**देखि वार्षिक ग्राहक बन्न पाउने गरी सम्पादन तथा प्रकाशन समितिले निर्णय गरेको हुँदा सम्बन्धित सबैको जानकारीका लागि यो सूचना प्रकाशन गरिएको छ।

समितिको निर्णयानुसार मूल्य समायोजन भई **नेपाल कानून पत्रिका रू.१५०** र **सर्वोच्च अदालत बुलेटिन प्रति अङ्क रू.४०** कायम गरिएकोसमेत सबैलाई जानकारी गराइन्छ।

---

**मूल्य रू.४०।–**

**मुद्रकः सर्वोच्च अदालत, छापाखाना**

## विषयसूची


| क्र.सं. | विषय | पक्ष / विपक्ष | पृष्ठ |
|---|---|---|---|
| **इजलास नं. ३** | | | **१ - ४** |
| १. | बन्दी प्रत्यक्षीकरण | AFTAB HAMZA JASNAIK समेत वि. श्री जिल्ला सरकारी वकील कार्यालय बबरमहल, काठमाडौंसमेत | १ |
| २. | उत्प्रेषण परमादेश | गिता भुमी श्रेष्ठसमेत वि. ऋण असुली न्यायधिकरण, कमलपोखरी काठमाडौं समेत | १ |
| ३. | परमादेश | ठाकुरप्रसाद श्रेष्ठ वि. प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय, सिंहदरबार काठमाडौंसमेत | २ |
| ४. | बन्दी प्रत्यक्षीकरण | प्रताप बस्नेतसमेत वि. महानगरीय प्रहरी वृत्त महाराजगन्ज, काठमाडौंसमेत | ३ |
| ५. | वैदेशिक रोजगार कसुर | नेपाल सरकार वि. कपिलकुमारसमेत | ३ |
| **इजलास नं. ४** | | | **४ – १४** |
| ६. | बन्दी प्रत्यक्षीकरण | तुफान सिंह वि. उच्च अदालत पाटन, ललितपुरसमेत | ४ |
| ७. | कर्तव्य ज्यान | नेपाल सरकार वि. रामचन्द्र खनाल | ५ |
| ८. | दूषित लिखत र सो आधारमा भए गरेका सम्पूर्ण कार्य निर्णय बदर गरिपाऊँ | भगवतीप्रसाद डालमिया समेत वि. ज्ञानेन्द्रप्रसाद ढुंगाना समेत, उर्मिला अग्रवाल वि. काठमाडौं जिल्ला, काठमाडौं महानगरपालिका, वडा नं. १० मा रहेको बंगलादेश बैंकसमेत | ६ |
| ९. | नकबजनी चोरी | नेपाल सरकार वि. जितबहादुर गुरूङ | ७ |
| १०. | कर्तव्य ज्यान | नेपाल सरकार वि. रामबहादुर तामाङ | ८ |
| ११. | निर्णय बदर | बिसबहादुर सितिखु वि. केदारप्रसाद जोशीसमेत | ९ |
| १२. | चेक अनादर | राजाराम साख वि. सुनिल कार्की | १० |
| १३. | बन्दी प्रत्यक्षीकरण | अशोक सिजापती वि. जिल्ला अदालत, बबरमहल काठमाडौंसमेत | ११ |
| १४. | उत्प्रेषणयुक्त परमादेशसमेत | विरेन्द्र दाहाल वि. नेपाल सरकार श्रम रोजगार तथा सामाजिक सुरक्षा मन्त्रालय, सिंहदरबार, काठमाडौं समेत | १२ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| १५. | अपहरण तथा जबरजस्ती करणी | नेपाल सरकार वि. उमेश साह | १३ |
| **इजलास नं. ६** | | | **१४ – १५** |
| १६. | हक कायम दर्ता | आशाकाजी तुलाधर समेत वि. सत्यमाया नेपाली समेत, सत्यमाया नेपाली वि. आशाकाजी तुलाधर समेत | १४ |
| **इजलास नं. ८** | | | **१५ – २२** |
| १७. | उत्प्रेषण | धर्मदत्त त्रिपाठी वि. गुठी संस्थान, प्रधान कार्यालय, त्रिपुरेश्वर, काठमाडौंसमेत | १५ |
| १८. | बन्दी प्रत्यक्षीकरण | शिला गुरूङ वि. काठमाण्डौं जिल्ला अदालत समेत | १६ |
| १९. | गैरकानूनी रूपमा सम्पत्ति आर्जन गरी भ्रष्टाचार गरेको | नेपाल सरकार वि. गम्भिरलाल श्रेष्ठ | १७ |
| २०. | बोक्सीको आरोप र कर्तब्य ज्यान | नेपाल सरकार वि. हिरा लामासमेत | २० |
| **इजलास नं. ९** | | | **२२ – ३२** |
| २१. | लिखत बदर दर्ता बदर दर्ता कायम | देव सुनैर यादव वि. सतिला साहु तेली समेत, ओमप्रकाश यादव वि. सतिला साहु तेली समेत | २२ |
| २२. | वैदेशिक रोजगार सम्बन्धी कसुर | नेपाल सरकार वि. सुनिला घिमिरे (देउजा) समेत | २३ |
| २३. | नकबजनी चोरी | नेपाल सरकार वि. नवीन चौधरी समेत | २४ |
| २४. | कैदी भागे भगाएको | सिकेन्द्रप्रसाद यादव वि. नेपाल सरकार, नेपाल सरकार वि. खोमराज पंगाली समेत, रविन्द्रकृष्ण रन्जित वि. नेपाल सरकार | २५ |
| २५. | जबरजस्ती करणी | ध्रुवे भन्ने ध्रुव सार्की (रोक्का) वि. नेपाल सरकार | २६ |
| २६. | जबरजस्ती करणी | नेपाल सरकार वि. खिमराज श्रेष्ठ | २७ |
| २७. | उत्प्रेषण परमादेश | टंकप्रसाद आचार्य वि. काठमाडौ महानगरपालिका, बागदरवार, काठमाडौंसमेत | २८ |
| २८. | वैदेशिक रोजगार कसुर | नेपाल सरकार वि. सन्ध्या के.सी समेत | २९ |
| २९. | आयकर (२०५८/०५९) | ठूला करदाता कार्यालय हरिहरभवन, ललितपुर वि. बोटलर्स नेपाल लिमिटेड बालाजु, काठमाडौं | ३१ |

| इजलास नं. १० | | | ३२ – ५० |
|---|---|---|---|
| ३०. | अंश | कुहुरा मिश्र समेत वि. केशबराम मिश्रसमेत | ३२ |
| ३१. | वैदेशिक रोजगार कसुर | नेपाल सरकार वि. रमेश कमर | ३३ |
| ३२. | कर्तव्य ज्यान | मनोज चौधरी वि. नेपाल सरकार | ३४ |
| ३३. | जबरजस्ती करणी | परिवर्तित शिवनगर (क) ०७५/०७६ वि. नेपाल सरकार | ३४ |
| ३४. | कर्तव्य ज्यान | नेपाल सरकार वि. राहुल कुमार कर्ण | ३५ |
| ३५. | लागु औषध | नेपाल सरकार वि. राजेन्द्र किस्कु | ३६ |
| ३६. | लागु औषध (चरेस) | लालमाया बुढामगर वि. नेपाल सरकार, अम्बर बहादुर बस्नेत वि. नेपाल सरकार | ३६ |
| ३७. | बन्दी प्रत्यक्षीकरण | रिन्कु श्रेष्ठ वि. काठमाडौं जिल्ला अदालत, बबरमहल, काठमाडौं समेत | ३७ |
| ३८. | उत्प्रेषणयुक्त परमादेशसमेत | सोनाम लामा समेत वि. श्री जिल्ला वन कार्यालय सोलुखुम्बु, सल्लेरी समेत | ३९ |
| ३९. | उत्प्रेषणयुक्त परमादेशसमेत | जगतमोहन गौचन वि. काठमाडौं जिल्ला, काठमाडौं महानगरपालिका वडा नं. ११ बबरमहल स्थित प्रभु बैंक लि. समेत | ४० |
| ४०. | लागु औषध (अफिम) | सकुन्तला बुढामगर वि. नेपाल सरकार, विषमाया बुढा वि. नेपाल सरकार, कामना पुन मगर वि. नेपाल सरकार | ४२ |
| ४१. | सम्पत्ति फिर्ता | सरस्वतीदेवी वाग्ले वि. चन्द्रकला वाग्ले | ४३ |
| ४२. | उत्प्रेषण परमादेशसमेत | शान्ता आचार्य वि. श्री चितवन जिल्ला अदालत, भरतपुर चितवन समेत | ४४ |
| ४३. | उत्प्रेषणयुक्त परमादेश | दिगम्बर माझीसमेत वि. गृह मन्त्रालय सिंहदरबार, काठमाडौंसमेत | ४५ |
| ४४. | बन्दी प्रत्यक्षीकरण | प्रेम कुमार राउत वि. श्री उच्च अदालत विराटनगर, धनकुटा इजलास, धनकुटा समेत | ४६ |
| ४५. | मापदण्ड विपरीत निर्माण | आयुक्त दीपक श्रेष्ठ वि. रामदेवी मानन्धर समेत | ४७ |
| ४६. | जग्गा हक कायम, दूषित दर्ता बदर हाल साबिक दर्ता समेत | इन्दु शर्मा वि. मिनाकुमारी मल्ल, मिनाकुमारी मल्ल वि. इन्दु शर्मा | ४९ |

| इजलास नं. १२ | | | ५० – ५२ |
|---|---|---|---|
| ४७. | वैदेशिक रोजगार कसुर | धर्मेन्द्रकुमार यादव वि. नेपाल सरकार, नेपाल सरकार वि. धर्मेन्द्रकुमार यादव समेत | ५० |
| ४८. | हाडनाता जबर्जस्ती करणी | नेपाल सरकार वि. नाम परिवर्तित राप्ती (F), नेपाल सरकार, वि. नाम परिवर्तित राप्ती (F) | ५१ |
| ४९. | बैकिङ्ग कसुर | हरिप्रसाद लामिछाने वि. नेपाल सरकार | ५१ |

## इजलास नं.३

१

**मा.न्या.श्री अनिलकुमार सिन्हा र मा.न्या. डा.श्री कुमार चुडाल,** *०७९-WH-०१३४, बन्दीप्रत्यक्षीकरण, AFTAB HAMZA JASNAIK समेत वि. श्री जिल्ला सरकारी वकील कार्यालय बबरमहल, काठमाडौंसमेत*

निज निवेदकहरूलाई पक्राउ गर्ने, हिरासतमा राख्ने तथा म्याद थप गर्ने कार्यहरू उपर्युक्त फौजदारी न्यायको सिद्धान्त, कानूनी प्रावधान तथा नेपालको सविधानको धारा १७ तथा २० को उपधारा (४) र (९) अनुरूप नदेखिई कानूनविपरीत एवं अनिवार्य रूपमा पालना गर्नुपर्ने कार्यविधि पालना नगरी थुनामा राखेको देखिन आएको, प्रत्यर्थीहरूले समेत आफू हरूसँग उपर्युक्तबमोजिम थुनामा राख्न कानूनबमोजिम अख्तियार देखाउन नसकेको र निजहरूलाई थुनामा नै राख्नुपर्ने कुनै मनासिब एवं कानूनसङ्गतका कारण देखाउन नसकेकोबाट निज बन्दीहरू AFTAB HAMZA JASNAIK, KAJAL RAVI AGRAWAL, GURCHARAN SINGH MEHTA, ANUBHAV VERMA र HARSH SHARMA लाई सर्वोच्च अदालत नियमावली, २०७४ को नियम ३७ बमोजिम आजै यस अदालतको रजिष्ट्रारको रोहवरमा थुनामुक्त गर्नु भनी बन्दीप्रत्यक्षीकरणको आदेश जारी हुने ठहर्छ । निज बन्दीहरूलाई यस अदालतको रजिस्ट्रारको रोहबरमा थुनामुक्त गर्नु भनी छुट्टै संक्षिप्त आदेश जारी भइसकेको हुँदा थप केही गरिरहनु परेन।

कुनै पनि व्यक्तिलाई कुनै कारण देखाई पक्राउ गर्दा निजको विरूद्ध आकर्षित हुने कानूनबारे अनुसन्धानकर्ता र हिरासतमा राख्न म्याद थप गर्ने प्रक्रियामा सहभागी सबै अधिकृतहरू स्पष्ट भई कानूनले निर्दिष्ट गरेको मार्ग अवलम्बन गरेको हुनु आवश्यक भएको तथा हिरासतमा राख्नु व्यक्तिको वैयक्तिक स्वतन्त्रतासँग सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण मानव अधिकारको विषय भएको एवं प्रचलित कानूनको अक्षरश: पालना हुनु अपरिहार्यसमेत हुँदा कानूनको पर्याप्त अध्ययन र विश्लेषण गरी कार्य सम्पादन गर्ने सम्बन्धमा उचित पदस्थापन, तालिम, निर्देशन, छुट्टै ईकाइ गठनलगायत अन्य जो उचित देखिन आउँछ सो उपर्युक्त उपायहरू अवलम्बन गर्न/गराउन प्रस्तुत मुद्दामा संलग्न अनुसन्धान गर्ने, अभियोजन गर्ने र मुद्दा हेर्ने निकायहरूको ध्यानाकर्षण गराइएको छ। ।

इजलास अधिकृत :- निराजन पाण्डे

कम्प्युटर :- विष्णुदेवी श्रेष्ठ

इति संवत् २०७९ साल माघ १९ गते रोज ५ शुभम् ।

२

**मा.न्या.श्री अनिलकुमार सिन्हा र मा.न्या.डा.श्री कुमार चुडाल,** *०७७-WO-०३३७, उत्प्रेषण परमादेश, गिता भुमी श्रेष्ठसमेत वि. ऋण असुली न्यायधिकरण, कमलपोखरी काठमाडौं समेत*

यस अदालतको असाधारण अधिकार क्षेत्र के कस्तो अवस्थामा लागू हुन्छ भन्ने सम्बन्धमा हेर्दा यस अदालतको असाधारण अधिकार क्षेत्रको प्रयोग व्यक्तिको संवैधानिक हकमा अनाधिकृत वा गैरकानूनी रूपमा राज्य वा राज्यका निकायहरू वा अरू कसैले हस्तक्षेप गरेमा वा राज्यले आफ्नो दायित्व पुरा नगरेको अवस्थामा अन्य कुनै वैकल्पिक उपचारको बाटो नभएमा वा भए पनि प्रभावकारी नभएमा तथा राज्यका निकाय हरू ले गरेका कार्यहरूको वैधानिकता परिक्षण गर्ने अन्य कुनै विकल्प नरहेमा अदालतले राज्यका निर्णय वा कार्य हरू को वैधानिकता परिक्षण गरी राज्यलाई गैरकानूनी कार्य गर्नबाट रोकी कानूनी दायित्व पुरा गर्न लगाई व्यक्तिका मौलिक हक अधिकारहरूको प्रचलन गराउनका लागि गरिन्छ । प्रस्तुत निवेदनमा नविल बैंक लि.ले ऋण असुली न्यायाधिकरण मा यी निवेदक संजिब भूमि श्रेष्ठलाई समेत प्रतिवादी बनाई

ऋण असुलीको लागि निवेदन दिएको मा निवेदक न्यायाधिकरणमा उपस्थितभई न्यायिक प्रक्रियामा सहभागी नभएको तथा लिलामी प्रक्रिया कानुन र नियम संगत नरहेको भन्ने दाबी समेत नरहेबाट यी निवेदक सफा हातले निवेदन लिएर अदालत प्रवेश गरेको नदेखिँदा ऋण असुली न्यायाधिकरणको फैसला बमोजिम भएको ऋण असुली प्रक्रियालाई अदालतको असाधारण अधिकारक्षेत्र मार्फत हस्तक्षेप गर्नुपर्ने देखिएन।

ऋण असुली न्यायाधिकरणबाट भएको फैसला कार्यान्वयनको विषय रहेको र उक्त फैसला गर्दा वा फैसला कार्यान्वयनको क्रममा कानूनले निर्धारण गरेको रित नपुगेको भन्ने जिकिर समेत नरहेको अवस्थामा निवेदन माग बमोजिमको आदेश जारी गरिरहनु पर्ने अवस्थाको विद्यमानता देखिएन। प्रस्तुत रिट निवेदन खारेज हुने ।

इजलास अधिकृतः अञ्चन भट्टराई

कम्प्युटर: विष्णुदेवी श्रेष्ठ

इति संवत् २०७९ साल असार १७ गते रोज ६ शुभम्।

**३**

**मा.न्या.श्री अनिलकुमार सिन्हा र मा.न्या.डा.श्री कुमार चुडाल,** ०७७-WO-०२५७, परमादेश, ठाकुरप्रसाद श्रेष्ठ वि. प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय, सिंहदरबार काठमाडौंसमेत

काठमाडौं उपत्यका विकास प्राधिकरण जिल्ला आयुक्तको कार्यालय काठमाडौंले मिति २०७०।११।२४ मा जारी सार्वजनिक सूचनामा सडक विस्तारको क्रममा रेखाङ्कन भइसकेका सडकहरूमा पर्ने सडक मापदण्ड लागु हुनुपूर्व निर्माण भएका, नियमानुसार बनेको / नक्सा पासअनुसार बनेका घर सडक विस्तारको क्रममा हटाउनु भत्काउनु परेमा यस्ता घरहरूलाई यस कार्यालयबाट निरन्तर रूपमा क्षतिपूर्ति दिइरहेको र हालसम्म पनि क्षतिपूर्ति मागदाबी नगर्ने घरधनीहरूले कार्यालयमा क्षतिपूर्तिका लागि निवेदन पेस गरी क्षतिपूर्ति लिनु हुनका साथै सडक विस्तारको क्रममा पूर्ण विस्थापित हुनेहरूलाई घर जग्गाको समेत क्षतिपूर्ति दिइने हुँदा यसरी क्षतिपूर्ति पाउने महानुभावहरूले यस कार्यालयमा निवेदन दिनु हुन भनी सार्वजनिक सूचना प्रकाशित भएको देखिन्छ । उक्त सूचना जारी हुनुभन्दा अगाडि नै मिति २०७०।१०।१० मा जग्गाको सट्टा जग्गा नै पाउनका लागि यि रिट निवेदकले जिल्ला आयुक्तको कार्यालय काठमाडौंमा निवेदन दिएको पाइन्छ। सोही निवेदनलाई जिल्ला आयुक्तको कार्यालय काठमाडौंले मिति २०७०।१०।१० मा मागअनुसार जग्गा उपलब्ध गर्न सक्कल निवेदनसहित काठमाडौं विकास प्राधिकरणलाई पत्राचार गरेको देखिन्छ । तत्पश्चात काठमाडौं उपत्यका विकास प्राधिकरणले शहरी विकास मन्त्रालयलाई पत्र लेख्दै निवेदकले सडक विस्तारमा परेको घरको मुआब्जा बुझिलिएको, सडकमा पर्न गएको जग्गाको समेत जग्गा नै सट्टा माग गर्नु भएकोमा हालको फिल्डको अवस्थाअनुसार स्केच साथै राखी आवश्यक कारवाहीका लागि शहरी विकास मन्त्रालय पठाएको देखिने।

शहरी विकास मन्त्रालयको लिखित जवाफमा काठमाडौं उपत्यकाभित्र कुनै स्थानमा कानूनबमोजिम बाटो विस्तार गर्ने एवं मापदण्डविपरीत निर्माण भएका संरचना भत्काउनु पर्ने अवस्थामा कानूनबमोजिम अधिकार प्राप्त काठमाडौं उपत्यका विकास प्राधिकरणले मापदण्ड एवं प्रक्रिया पूरा गरी गर्न सक्ने कानूनी व्यवस्था रहेको र विपक्षीले पाउनु पर्ने घरको मुआब्जा पाइसकेको र रिट निवेदकले उल्लेख गरेको विषयमा मन्त्रालयबाट कुनै निर्णय नभएको भनी शहरी विकास मन्त्रालयको मिति २०७७।८।१५ को लिखित जवाफ रहेको देखिन्छ। यी रिट निवेदकको निवेदन सम्पत्तिसम्बन्धी हक अधिकारको विषयमा रहेको र सम्पत्तिसम्बन्धी विषयमा यथोचित समयमा निर्णय गरी निवेदकको हक अधिकारको संरक्षण गर्नु

सम्बन्धित निकायको दायित्व हुन्छ । अधिकारप्राप्त निकायबाट निवेदकले दिएको निवेदनमा आवश्यक कारवाही गरी समयमै न्यायपूर्ण निर्णय गर्नु अधिकार प्राप्त निकायको कर्तव्य नै हुन्छ । सम्बन्धित निकायबाट यी निवेदकले दिएको निवेदनउपर लामो समयसम्म कारवाही नगरी कुनै निकासा नदिई राखेको देखिएकोले निवेदकले क्षतिपूर्ति पाउँ भनी काठमाडौं उपत्यका विकास प्राधिकरण जिल्ला आयुक्तको कार्यालय अनामनगरमा मिति २०७०।१०।१० मा दिएको निवेदनउपर अविलम्ब कारवाही गरी निर्णय गर्नु भनी विपक्षीहरूको नाउँमा यस अदालतबाट मिति २०७४।६।२ मा नै परमादेशको आदेश जारी भएको अवस्थामा मिसिल संलग्न कागज तथा विपक्षीहरूको लिखित जवाफबाट समेतबाट यी निवेदकबाट दायर भएको निवेदन नं. ०७३-WF-००२८ मा जारी भएको मिति २०७४।६।२ को आदेशबमोजिम निवेदकको मिति २०७०।१०।१० को निवेदनमा निर्णय भएको देखिएन। अदालतको आदेशबमोजिम अधिकारप्राप्त निकायबाट निर्णय नहुनु विपक्षी काठमाडौं उपत्यका विकास प्राधिकरणको लागि शोभनीय हुँदैन । अतः यो आदेशको प्रतिलिपि प्राप्त भएको मितिले ६ महिनाभित्र निवेदकको निवेदन तथा यस अदालतको मिति २०७४।६।२ को आदेशबमोजिम विपक्षीहरूसँग समन्वय राखी कानूनसङ्गत एवं न्यायपूर्ण निर्णय गर्नु भनी विपक्षी काठमाडौं उपत्यका विकास प्राधिकरणको नाममा परमादेशको आदेश जारी हुने ।

इजलास अधिकृत:- गेहेन्द्रराज रेग्मी

इति संवत् २०७९ साल जेठ २७ गते रोज ६ शुभम् ।

यसै लगाउको निम्न मुद्दा हरूमा पनि यसैनुसार फैसला भएका छन् ।

- *०७५-MS- ००२०, अदालतको अवहेलना, ठाकुर प्रसाद श्रेष्ठ वि. प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय, सिंहदरबार काठमाडौंसमेत*

**४**

**मा.न्या.श्री अनिलकुमार सिन्हा र मा.न्या. डा.श्री कुमार चुडाल,** *०७८-WH-००६१, बन्दीप्रत्यक्षीकरण, प्रताप बस्नेतसमेत वि. महानगरीय प्रहरी वृत्त महाराजगन्ज, काठमाडौंसमेत*

निवेदन मागबमोजिम बन्दीप्रत्यक्षीकरणको आदेश जारी गर्नुपर्ने हो वा होइन भन्ने दोस्रो प्रश्नतर्फ विचार गर्दा, माथि उल्लिखित तथ्यगत अवस्थाको विवेचना गर्दा कानूनको रीत पूरा गरी यी वन्दीहरूलाई थूनामा राखिएको र बहसको क्रममा निवेदकहरूका कानून व्यवसायीले निजहरू मिति २०७८।६।२२ मा धरौटमा छुटिसकेको भनी जानकारी दिएको हुँदा बन्दीप्रत्यक्षीकरणको आदेश जारी गर्नु पर्ने देखिएन ।

निवेदकहरूलाई अनुसन्धानका लागि थुनामा राखिएको अवस्था, उल्लिखित प्रतिपादित सिद्धान्तहरू समेतका आधारमा र निवेदकहरू मिति २०७८।६।२२ मा धरौटमा छुटिसकेको देखिँदा निवेदन मागबमोजिम बन्दीप्रत्यक्षीकरणको आदेश जारी गर्न मिलेन । प्रस्तुत रिट निवेदन खारेज हुने ।

इजलास अधिकृत: भूमिप्रसाद शर्मा/ सुमेधा खनाल

कम्प्युटर : विष्णुदेवी श्रेष्ठ

इति संवत् २०७८ साल कार्तिक १५ गते रोज २ शुभम् ।

**५**

**मा.न्या.श्री अनिलकुमार सिन्हा र मा.न्या.श्री तिलप्रसाद श्रेष्ठ,** *०७२-CR-१७९९, वैदेशिक रोजगार कसुर, नेपाल सरकार वि. कपिलकुमारसमेत*

यसै प्रकृतिको विवादमा "वैदेशिक रोजगार ठगी कसुर हुनको लागि विदेश पठाई रोजगारमा लगाई दिन्छु भनी इजाजत लिएका कम्पनी सञ्चालक हुन वा अन्य जो कोही व्यक्तिले अर्को व्यक्तिलाई झुक्यानमा पारी कुनै सम्पति लिई विदेश नपठाएको र रकम पनि फिर्ता नगरेको अवस्था हुनुपर्ने" भनी सिद्धान्त प्रतिपादन भएको देखिन्छ । यसमा प्रतिवादीहरू कपिल कुमार र रोविन पान्दाकले आफुसँग वैदेशिक रोजगारमा

पठाउने इजाजत भएको कुनै प्रमाण मिसिल संलग्न गर्न सकेको अवस्था छैन । जाहेरवालाहरूलाई वैदेशिक रोजगारमा पठाई लिविया मुलुकमा पठाई दिने भनी रकम लिई लिखित कागज समेत गरिदिएको भए तापनि भनेबमोजिम वैदेशिक रोजगारका लागि विदेश लिविया पठाई नसकेको एवं रकम समेत फिर्ता नगरेको अवस्था विद्यमान देखिँदा वैदेशिक रोजगार ऐन, २०६४ को दफा १० र ४३ को कसुरमा सोही ऐनको दफा ४३ अनुसार "विदेश पठाई नसकेको भए सो सजायको आधा सजाय हुने" कानूनी व्यवस्था अनुसार भएको सुरू फैसला मिलेकै देखिन आयो ।

प्रतिवादीहरू कपिल कुमार र रोविन पान्दाकले वैदेशिक रोजगार ऐन, २०६४ को दफा १० र ४३ को कसुर अपराध गरेको देखिँदा निज प्रतिवादीहरूलाई ऐ. ऐनको दफा ४३ बमोजिम जनही १-६-०(एक वर्ष छ महिना) कैद र रू.१,५०,०००।-(एक लाख पचास हजार रूपैँया) जरिवाना समेत भै जाहेरवालाहरूबाट प्रतिवादीहरूले लिए खाएको हर्जाना समेतको बिगो प्रतिवादीहरूबाट जाहेरवालाहरूले भरी पाउने ठहर गरेको वैदेशिक रोजगार न्यायाधिकरण, काठमाडौंको मिति २०७२।६।१८ को फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत:- लोकनाथ पराजुली/निराजन पाण्डे
कम्प्युटर :- विष्णुदेवी श्रेष्ठ
इति संवत् २०७९ साल वैशाख १४ गते रोज ४ शुभम् ।

## इजलास नं.४

६

**मा.न्या.श्री प्रकाशमान सिंह राउत र मा.न्या.श्री कुमार रेग्मी,** *०८०-WH-००६७, बन्दीप्रत्यक्षीकरण, तुफान सिंह वि. उच्च अदालत पाटन, ललितपुरसमेत*

स्थायी ठेगाना सल्यान जिल्ला, मार्के गा.वि.स., वडा नं. ८ हाल परिवर्तित शारदा नगरपालिका वडा नं. ८ भए पनि २०७८ साल वैशाखदेखि बाँके जिल्ला, रझेना गा.वि.स. ७क हालको कोहलपुर नगरपालिका, वडा नं. ६ मा घर निर्माण गरी सपरिवार बसोबास गरी आएकोमा उच्च अदालत पाटनबाट मेराउपर दायर भएको बैङ्किङ्ग कसुरसम्बन्धी (मुद्दा नं.०७९-CB-०४०४) मुद्दामा हाल म बसोबास गरी आएको ठेगानामा मेरो नामको म्याद सूचना जारी नगरी हाल बसोबास नगरेको पूरानै वतन राखी २१ दिने समाव्हान म्याद जारी गरी घरमा कोही फेला नपरेको भनी मिति २०७९।०६।०४ मा ताल्चा मारिएको खाली घरदैलामा टाँस गरी सोही म्यादलाई रितपूर्वकको मानी मेरो विरूद्धमा लागेको फौजदारी मुद्दामा मलाई सुनुवाईको मौका नदिई प्राकृतिक न्यायको सिद्धान्त विपरीत उच्च अदालत पाटनबाट मलाई कसुरदार ठहर गरी फैसला गरी सो फैसला अनुसार मलाई पक्राउ गरी गैरकानूनी थुनामा राखेको भन्ने निवेदकको मुख्य दाबी रहेको देखिन्छ । निवेदकले २०७८ साल वैशाखदेखि बाँके जिल्ला, रझेना गा.वि.स., ७क हालको कोहलपुर नगरपालिका, वडा नं. ६ मा घर निर्माण गरी सपरिवार बसोबास गरी आएको भने पनि सो बेहोरा पुष्टि हुने गरी निजले सो वतन कहीँकतै उल्लेख गरेको देखिँदैन । निजको नागरिकता प्रमाण पत्रमा स्थायी ठेगाना सल्यान जिल्ला, मार्के गा.वि.स., वडा नं. ८ उल्लेख भएको र सो हाल परिवर्तन भई शारदा नगरपालिका वडा नं. ८ कायम भएको देखिन्छ । यी निवेदकले कुमारी बैङ्कमा खाता नं. ०२५००३५५१५९००००१ खोल्दा र के.वाई.सी. फाराम भर्दा समेत सल्यान जिल्लाको सोही वतन उल्लेख गरेको देखिन्छ । निवेदकले नयाँ वतनमा बसाईसराई गरेको भन्ने देखिने कानूनबमोजिमको बसाईसराईको कागजात समेत पेस गर्न सक्नु भएको देखिँदैन । अस्थायी रूपमा बसाई सरेको सिफारिस गरिपाउँ भनी कोहलपुर नगरपालिका, वडा नं. ६ र शारदा नगरपालिका, वडा नं. ८ मा

यी निवेदकले निवेदन दिँदा निवेदन मागबमोजिम सिफारिस गरिदिएको भनी उक्त वडा कार्यालयहरूबाट सिफारिस गरेको पत्र निवेदकले पेस गरेको देखिए पनि निजको वतन सम्बन्धमा उक्त कार्यालयहरूबाट आवश्यक बुझ्नुपर्ने केही नबुझी निवेदन मागबमोजिम गरिदिएको भन्ने सिफारिस कागजकै आधारमा निवेदक/प्रतिवादीले बसाई सरेको भन्ने तथ्य पुष्टि हुन सक्ने देखिँदैन । मिसिल संलग्न कागजातबाट निज बसाई सरेको भन्ने कहिं नदेखिएको र निजले समेत सो बेहोराको जानकारी कहीँकतै नदिएको अवस्थामा निज अस्थायी रूपमा कहाँ पुगेका छन भनी खोजतलास गर्न सक्ने स्थिति रहने देखिँदैन । निजले कानूनबमोजिम आफ्नो ठेगाना उल्लेख गर्नुपर्ने ठाउँमा वा निकायमा आफ्नो वतन सल्यान जिल्ला, मार्के गा.वि.स., वडा नं. ८ हाल परिवर्तित शारदा नगरपालिका वडा नं. ८ नै उल्लेख गरेको अवस्थामा सोभन्दा फरक वतनको बारेमा अदालतले अनुमान गर्ने वा जानकारी राख्न सक्ने अवस्था रहँदैन । तसर्थ, स्थायी वतनमा म्याद तामेल गरेको मिलेन, बाँके जिल्ला रझेना गा.वि.स. ७क हालको कोहलपुर नगरपालिकावडा नं. ६ मा म्याद जारी हुनुपर्ने भन्ने निवेदकको मागदाबी कानूनसम्मत रहेको मान्न नमिल्ने ।

यसप्रकार उच्च अदालत पाटनबाट मुद्दा नं. ०७९-CB-०४०४ को बैङ्किङ्ग कसुर मुद्दामा निवेदक तुफान सिंह बुढाथोकीको कानूनबमोजिमको ठेगानामा म्याद जारी गरी तामेल भएकोले बेरितको नदेखिएको र सो म्यादमा निज हाजिर नभै गुजारी बसेको अवस्थामा निजले मुद्दामा सुनुवाईको मौका प्राप्त नगरेको र कानूनबमोजिमको प्रक्रिया पूरा नगरी प्राकृतिक न्यायको सिद्धान्त विपरीत फैसला भएको भन्ने नदेखिँदा उच्च अदालत पाटनबाट जारी भै मिति २०७९।०६।०४ मा तामेल भएको म्याद, सो म्यादलाई रितपूर्वकको मानी प्रतिवादीको हैसियतमा रहेका यी निवेदकलाई कसुरदार ठहर गरी भएको मिति २०७९।१०।०६ को फैसला र सोबमोजिम निवेदकका नाममा जारी भएको कैदीपूर्जी लगायतका काम कारबाहीहरू त्रुटिपूर्ण नदेखिएकोले निवेदन मागबमोजिमको बन्दीप्रत्यक्षीकरणको आदेश जारी हुने अवस्थाको विद्यमानता नदेखिँदा प्रस्तुत बन्दीप्रत्यक्षीकरणको रिट निवेदन खारेज हुने ।

इजलास अधिकृत: हेमराज शर्मा

कम्प्युटर: मन्जिता ढुंगाना

इति संवत् २०८० साल भाद्र २६ गते रोज ३ शुभम्।

७

**मा.न्या.श्री प्रकाशमान सिंह राउत र मा.न्या.श्री कुमार रेग्मी,** *०७८-RC-००४१, कर्तव्य ज्यान, नेपाल सरकार वि. रामचन्द्र खनाल*

प्रतिवादीले मौकामा बयान गर्दा मिनादेवी थापासँग पहिलेदेखि नै सामाजिक सञ्जालबाट चिनजान भई कुराकानी तथा भेटघाट भैरहने गर्दथ्यो । वारदातको दिन निजले बोलाएकीले गई निजसँग यौनसम्पर्क समेत भएको र निजले विवाह गरौं भनेकोमा मैले इन्कार गरेकोले निजले मलाई हानी हातबाट रगत समेत आएकोले मैले मृतकको शरीर माथि चढी घाँटी थिची चल्न छटपटाउन छोडी अव मृत्यु भएछ भनी मृतककै पछ्यौराले निजको घाँटीमा बेसरी कसी निजलाई घटनास्थलबाट बोकी केही तल सानो बुटामुनि राखी जंगलै जंगल भागेको हुँ। मृतकको गहना र मोबाइल समेत लगेको र गोरखपुरमा सुनचाँदी पसलमा सबै गहना, रू.१५,०००।– आई.सी.मा बेचेको हुँ भनी आरोपित कसुरलाई स्वीकार गरी बयान गरेको देखिन्छ । निज प्रतिवादीले अदालतमा मैले जानी बुझी योजना बनाई मिनाको हत्या गरेको होइन, निज मिनाको विवाहको प्रस्ताव नमान्दाको विवादमा कुटाकुट हुँदा निजको ज्यान गएको हो भनी निजलाई मारेको कुरा स्वीकार गरेको र चोरीतर्फको कसुरमा इन्कार रही बयान गरेको देखियो । निज प्रतिवादीले घटनाको बारेमा सिलसिलेवार रूपमा गरेको मौकाको

बयान बेहोरा घटनास्थल प्रकृति मुचुल्का, मृतकको शरीरको विभिन्न भागमा चोटपटक रहेको भन्ने लास जाँच मुचुल्का एवं मृतकको टाउको, घाँटी, छाती समेतका शरीरको विभिन्न अङ्गमा घाउचोट रहेको उल्लेख गर्दै मृत्युको कारणमा probably physicai assault भन्ने मृतकको शव परीक्षण प्रतिवेदनसँग मिल्न भिड्न आई समर्थित भैरहेको अवस्था देखिन्छ। मृतकले प्रयोग गरेको मोबाइल नम्बरको कल डिटेल हेर्दा पनि यी प्रतिवादीसँग मृतकको सम्बन्ध रहेको र घटना घटेको दिन पनि निजहरू बिच पटक पटक टेलिफोन सम्पर्क भएको देखिएबाट पनि प्रतिवादीको उक्त बयान बेहोरा थप पुष्टि भएको देखिने।

यसप्रकार प्रतिवादीउपर परेको किटानी जाहेरी, जाहेरी समर्थन हुने गरी जाहेरवाला अमृतबहादुर थापा समेतका वादी पक्षका साक्षीले गरेको बकपत्र, मृतकको मोबाइलको कल डिटेल, घटनास्थल प्रकृति मुचुल्का, मृतकको लाश जाँच मुचुल्का एवं मृतकको शव परीक्षण प्रतिवेदन र मिनादेवी थापालाई आफूले कर्तव्य गरी मारेको भनी प्रतिवादीले गरेको साबिती बयान बेहोराबाट यी प्रतिवादी आकाश भन्ने रामचन्द्र खँदाल भन्ने रामचन्द्र खनालले मिनादेवी थापालाई मनसायपूर्वक कर्तव्य गरी मारेको भन्ने पुष्टि भइरहेको देखिँदा तत्कालीन मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १ नं. र १३(३) नं. को कसुरमा ऐ. १३(३) नं. बमोजिम सर्वस्वसहित जन्मकैद गरेको सुरू तनहुँ जिल्ला अदालतको मिति २०६८।३।१५ को फैसला सदर गरी हाल प्रचलित मुलुकी अपराध संहिता, २०७४ को दफा ४०(२) र केही नेपाल कानून संशोधन, एकीकरण, समायोजन र खारेज गर्ने ऐन, २०७४ को दफा ३९(२) (ग) बमोजिम सर्वस्वको सजाय घटाई जन्मकैद मात्र कायम गरेको उच्च अदाललत पोखराबाट मिति २०७७।३।३० मा भएको फैसला अन्यथा गर्नुपर्ने नदेखिँदा परिवर्तन गर्नु परेन। मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धीको महलको १४ नं. बमोजिम हुन पर्दछ भन्ने निज प्रतिवादीकोतर्फबाट बहस पैरवी गर्ने विद्वान् वैतनिक कानून व्यवसायीको बहस जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने।

प्रतिवादी आकाश भन्ने रामचन्द्र खँदाल भन्ने रामचन्द्र खनाललाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १३(३) नं. बमोजिमको कसुर कायम गरी जन्मकैदको सजाय हुने ।

इजलास अधिकृतः हेमराज शर्मा

कम्प्युटर : मन्जिता ढुंगाना

इति संवत् २०८० साल चैत्र २३ गते रोज ६ शुभम्।

८

**मा.न्या.श्री प्रकाशमान सिंह राउत र मा.न्या.श्री कुमार रेग्मी,** *०७२-CI-०६१६, ०७२-CI-०६२२, दूषित लिखत र सो आधारमा भए गरेका सम्पूर्ण कार्य निर्णय बदर गरिपाऊँ, भगवतीप्रसाद डालमिया समेत वि. ज्ञानेन्द्रप्रसाद ढुंगाना समेत, उर्मिला अग्रवाल वि. काठमाडौं जिल्ला, काठमाडौं महानगरपालिका, वडा नं. १० मा रहेको बंगलादेश बैंकसमेत*

मिति २०५८।०३।२९ मा कि.नं. ८७ को बाग्मती च्याम्बर भवनमध्येका कोठाहरू खरिद गरेपछि मात्र यी पुनरावेदक प्रतिवादी भगवतीप्रसाद डालमिया समेतलाई विवादित कि.नं.१२१ बाटो भनिएको जग्गासँग सरोकार जोडिएको देखियो। मिति २०५८।०३।२९ भन्दाअघि विवादित कि.नं. १२१ को बाटो जनिएको भनिएको जग्गासँग पुनरावेदक प्रतिवादी भगवतीप्रसाद डालमिया समेतको कुनै सरोकार रहे भएको देखिन आएन। सरोकार नै नरहेका पक्षहरूलाई विवादित बाटो भनिएको कि.नं. १२१ को जग्गामा बाटो कायम हुने गरी उर्मिला अग्रवालले मिति २०५०।०९।१८ मा घरसारको कागज गरी दिनुपर्ने कुनै कारण रहेको भन्ने देखिँदैन। पुनरावेदक/प्रतिवादी भगवतीप्रसाद डालमिया समेतले मिति २०५८।०३।२९ मा खरिद गरी लिएको घर जग्गालाई बाटोको आवश्यक पर्छ भनी घर जग्गा खरिद गर्नुभन्दा

अघिको मिति २०५०।०९।१८ मै बाटोको लागि घरसारको कागज गराउनुपर्ने अवस्था के कसरी रहन गयो भनी कहि कतै खुलाउन सकेको देखिँदैन। यसबाट यो विवादित घरसारको कागज विवाद सिर्जना भएपश्चातमात्र तयार भएको भनी वादीहरूले लिएको जिकिर अन्यथा भन्न सक्ने अवस्था नदेखिने।

विवादित कि.नं. १२१ को जग्गा बैंकले लिलाम गरी प्रत्यर्थी/वादी अनिता श्रेष्ठको नाममा दर्ता हुन आएकोमा यिनै प्रतिवादी भगवतीप्रसाद डालमिया समेतले यिनै वादी अनिता श्रेष्ठउपर दूषित धितो लिलाम बदर र दाखिल खारेज नामसारी निर्णय बदर मुद्दाहरू दर्ता गराएकोमा सो मुद्दाहरूमा वादी दाबी पुग्न नसक्ने ठहऱ्याई सुरू तथा पुनरावेदन अदालतले गरेको फैसला सदर हुने गरी आज यसै इजलासबाट फैसला भएको छ। कि.नं. १२१ लाई बाटो नमानी धितो सुरक्षण स्वीकारी भए गरेको लिलाम र सो बमोजिमको दा.खा. नामसारीको निर्णय सदर कायम भएको अवस्थामा सोही कि.नं. १२१ को जग्गा बाटो कायम हुन नसक्ने भएकाले कि.नं. १२१ लाई बाटो देखाई खडा गरिएको वादी दाबीको मिति २०५०।०९।१८ को घरसारको लिखत दुषित देखिँदा सो लिखतले कानूनी मान्यता पाउन नसक्ने भनी तत्कालीन पुनरावेदन अदालत पाटनबाट भएको फैसला कानूनसम्मत रहेकोले अन्यथा मान्न मिल्ने देखिएन। सो समेतका आधारमा पुनरावेदक/प्रतिवादीहरूकातर्फबाट उपस्थित विद्वान् कानून व्यवसायीहरूको बहस जिकिरका साथै यस अदालतबाट प्रत्यर्थी झिकाउँदा लिइएका आधार कारणहरूसँग समेत सहमत हुन नसकिने।

विवादित कि.नं. १२१ को जग्गामा बाटो कायम हुने भनी मिति २०५०।०९।१८ को घरसारको लिखतलाई कानूनी मान्यता दिई सुरू काठमाडौं जिल्ला अदालतको मिति २०६९।११।३० मा भएको फैसलालाई उल्टी गरी वादी दाबी बमोजिम उक्त लिखत दुषित ठहरेकाले बदर हुने गरी मिति २०७२।०२।१७ मा तत्कालीन पुनरावेदन अदालत पाटनबाट भएको फैसला मिलेको देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत: गोविन्द आचार्य
कम्प्युटर : सुप्रभा अर्याल
इति संवत् २०८० साल मङ्सिर १० गते रोज १ शुभम्।

साथै यसै लगाउको निम्न मुद्दाहरूमा पनि यसैनुसार फैसला भएका छन्।

- ०७२-CI-०६१८, दा.खा. नामसरी बदर, भगवतीप्रसाद डालमिया समेत वि. काठमाडौं जिल्ला, काठमाडौं महानगरपालिका, वडा नं. १० मा रहेको बंगलादेश बैंक समेत
- ०७२-CI-०६१७, दुषित धितो लिलाम बदर, भगवतीप्रसाद डालमिया समेत वि. काठमाडौं जिल्ला, काठमाडौं महानगरपालिका, वडा नं. १० मा रहेको बंगलादेश बैंक केन्द्रिय कार्यालय समेत

९

**मा.न्या.श्री प्रकाशमान सिंह राउत र मा.न्या.श्री बालकृष्ण ढकाल,** *०६७-CR-१०४५, नकबजनी चोरी, नेपाल सरकार वि. जितबहादुर गुरूङ*

वादी नेपाल सरकारले प्रतिवादीलाई अभियोग दाबी भन्दा घटी बिगो कायम गरी सजाय गरेको फैसला त्रुटिपूर्ण रहेको भन्ने जिकिर लिएकाले सो सम्बन्धमा हेर्दा, वादी नेपाल सरकारले अभियोग दाबीबमोजिम चोरीको बिगो रू.२०,२००।- बरावर धनमाल चोरी भएको भनी प्रतिवादी जितबहादुर गुरूङउपरमा दाबी लिएकोमा प्रतिवादी जितबहादुरबाट जम्मा रू.१२,२००।- बराबरको धनमाल बरामद भएको देखिन्छ। सो धनमाल जाहेरवालाले बुझी लगेको मिसिल संलग्न कागजातबाट देखिने।

प्रतिवादीले मौकामा बयान गर्दा मिति २०६५।१०।२४ गते राति घरमा मानिसहरू निदाएको मौका पारी मैले जिल्ला तनहुँ भानु गा.वि.स. वडा नं. ५ स्थित जाहेरवालाको दिलमाया वाग्लेको घरको

ढोका फोरी घरभित्र रहेको कालो ब्रिफकेश थान १, उक्त ब्रिफकेशभित्र रहेको नगद रू.१०,०००।- र इमरजेन्सी लाईट थान १, व्ल्याङ्गकेट थान १, सेम्फु, सारी, पाउडर समेत गरी १०,२००।- बराबरको धनमाल चोरी गरेको हुँ भनी जाहेरी तथा अभियोगदाबी बमोजिमको कसुर स्वीकार गरी बयान गरेको देखिन्छ। निजले अदालतमा बयान गर्दा बरामद भएको सामान र नगद रू.७५०।- मात्र चोरी गरेको हुँ भनी बयान गरेको देखिन्छ। सो बयान बेहोरा आफ्ना साक्षीबाट समर्थन गराउन सकेको देखिँदैन । जाहेरवाला अदालतसमक्ष उपस्थित भई जाहेरी बेहोरा समर्थन गरी बकपत्र गरेको देखिन्छ । यसरी सुरू तनहुँ जिल्ला अदालतले यी प्रतिवादीलाई १ महिना १५ दिन कैद र रू.१८,६०५।- जरिवाना हुने ठहर गरेकोमा कैद गरेको हदसम्म सो फैसला मिलेकै देखिएको र जरिवाना गरेको हदसम्म सो फैसला केही उल्टी गरी यी प्रतिवादीले जाहेरवालाको नगद रू.१०,०००।- समेत चोरी गरेको ठहराई बरामद भएको बिगो रू.१२,२००।- बराबरको धनमाल जाहेरवालाले बुझिसकेको हुँदा बरामद नभएको बिगो रू. १०,०००।- डेढी रू.१५,०००।- जरिवाना गर्ने गरी तत्कालीन पुनरावेदन अदालत पोखराबाट भएको फैसला मिलेकै देखिने।

तत्कालीन पुनरावेदन अदालत पोखराबाट मिति २०६७।८।१२ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत: सुशिल आचार्य

कम्प्युटर : सुप्रभा अर्याल

इति संवत् २०८० साल पौष २२ गते रोज १ शुभम् ।

१०

**मा.न्या.श्री प्रकाशमान सिंह राउत र मा.न्या.श्री बालकृष्ण ढकाल,** *०७९-RC-००८७, कर्तव्य ज्यान, नेपाल सरकार वि. रामबहादुर तामाङ*

मौकामा तत्काल पक्राउ परेका प्रतिवादीमध्येका खिलनाथ बस्नेतले अनुसन्धानका क्रममा बयान गर्दा वारदात मिति २०६८।८।२३ मा जिल्ला काभ्रेपलाञ्चोक देविटार गा.वि.स वडा नं. २ स्थित वनदेवी मन्दिरमा लागेको जात्रामा वखत स्थानीय रामशरण राउतको घरमा राति बसेको बेलामा रामबहादुर तामाङ र मृतक सानुबाबु भन्ने विष्णु महतबिच झगडा भई प्रतिवादी रामबहादुर तामाङले मृतकको टाउकोमा पिर्काले पटक पटक प्रहार गरेकोले मृतकको मृत्यु भएको हो भन्ने बेहोरा लेखाई बयान गरेको देखिन्छ भने अदालतमा बयान गर्दा पनि प्रतिवादी रामबहादुर तामाङले नै मृतकलाई कुटपिट गरेको कारणबाट मृत्यु भएकाले म र अर्का प्रतिवादी विदुर भन्ने विष्णुप्रसाद न्यौपानेको उक्त वारदातमा संलग्नता छैन भनी बयान गरेको देखिन्छ। प्रतिवादी खिलनाथ बस्नेतका साक्षी सहदेव भण्डारीले मृतकलाई प्रतिवादीमध्येका राम बहादुर तामाङले पिर्काले हिर्काई मारेको हुँदा यी प्रतिवादी खिलनाथ बस्नेत निर्दोष छन् । निजको घटनामा संलग्नता नभएकोले अभियोग दाबीबाट निजले सफाइ पाउनु पर्छ भनी प्रतिवादीमध्येका खिलनाथ बस्नेतको वारदातमा संलग्नता नरहेको मृतकलाई प्रतिवादी रामबहादुरले पिर्काले हानी मारेको भन्ने खिलनाथ बस्नेतको इन्कारी बयानलाई समर्थन गरी बकपत्र गरेको देखिने।

प्रतिवादी विदुर भन्ने विष्णु प्रसाद न्यौपानेले अदालतमा बयान गर्दा घटना रामबहादुर तामाङले गराएको, प्रतिवादी रामबहादुर तामाङले मृतकलाई पिर्काले प्रहार गरी सोही चोटबाट मृत्यु भएको हो भनी सह अभियुक्त खिलनाथ बस्नेतले भनेपछि थाहा पाएँको हुँ मैले मृतकलाई कुटपिट गरेको छैन। वारदात हुँदा म जात्रामा मेला हेर्न भनी गएको थिएँ। मेलामा घटनाको बारेमा हल्ला सुनेपछि मलाई पनि आरोप लाग्छ भन्ने ठानी म त्यतैबाट भागेको हुँ भन्ने बेहोरा लेखाएको देखिन्छ। प्रतिवादी विदुर भन्ने विष्णुप्रसाद न्यौपानेले अदालतमा गरेको बयानलाई आफ्नो साक्षी भक्तबहादुर तामाङको अदालतसमक्षको बकपत्रबाट

समर्थन भएको पाइने।

प्रतिवादीहरू रामबहादुर तामाङ, विदुर भन्ने विष्णुप्रसाद न्यौपाने, खिलनाथ बस्नेत र राधिका थापा राउत वारदात हुँदा वारदात स्थल रामशरण राउतको घरमा रहेकोमा प्रतिवादी रामबहादुर र सानुवाबु भन्ने विष्णु महतबिच भनाभन हुँदा विवाद बढ्दै गई प्रतिवादी रामबहादुरले पिर्काले मृतक विष्णु भन्ने सानुवावु महतको टाउकोमा २ पटक प्रहार गर्दा सोही चोटबाट मृतकको मृत्यु भएको भन्ने कुरा सहप्रतिवादीहरू खिलनाथ बस्नेत र विदुर भन्ने विष्णुप्रसाद न्यौपानेको पोल बयानबाट देखिन्छ। तत्काल वारदात स्थलमा रहेकी राधिका थापा राउतले अनुसन्धान अधिकारीसमक्ष कागज गर्दा यी प्रतिवादीहरूले मृतकलाई हानेको कारण टाउकोमा चोट लागि सोही चोट पीडाबाट मृतकको मृत्यु भएको भनी लेखाएको देखिन्छ भने अदालतमा बकपत्र गर्दा अनुसन्धान अधिकारीसमक्ष भएको कागज बेहोरालाई समर्थन गर्दै प्रतिवादीहरूमध्ये कसले हानेको भन्ने आफूले नदेखेको भनी आफ्नो बेहोरा लेखाएको देखिएबाट तत्काल वारदात स्थलमा रहेका सहप्रतिवादीहरूको बयानलाई ग्राह्य प्रमाणको रूपमा लिनुपर्ने ।

प्रतिवादी रामबहादुर तामाङ विरूद्ध सहप्रतिवादीहरू खिलनाथ बस्नेत र विदुर भन्ने विष्णुप्रसाद न्यौपानेले पोल गरी बयान गरेको, प्रतिवादी रामबहादुर तामाङ हालसम्म फरार रहेको अवस्था समेतबाट निज प्रतिवादी रामबहादुर तामाङ समेतले मृतक विष्णु भन्ने सानूबाबु महतलाई काठको पिर्काले टाउकोमा प्रहार गरी कुटपिट गरेकोमा सोही चोटबाट मिति २०६८।८।२४ गते विहान ८.०० बजेको समयमा मृत्यु भएको भन्ने जाहेरी बेहोरा, मृतकको लास प्रकृति मुचुल्काबाट टाउको र अनुहारमा परेको चोटको प्रकृति हेर्दा पनि पिर्का जस्तै वस्तुले हानेको चोटको प्रकृति देखिएको, शव परीक्षण प्रतिवेदनबाट मृत्युको कारणमा Blunt Force Injuries to head भन्ने लेखिएको समेतका आधारहरू र अनुसन्धानको क्रममा बुझिएका मानिसहरूले यी प्रतिवादी रामबहादुर तामाङले पिर्काले हानेको कारणबाट मृतकको मृत्यु भएको भनी गरेको बकपत्र समेतबाट प्रतिवादी रामबहादुर तामाङले अभियोग दाबीबमोजिम कसुर गरेको ठहराई प्रतिवादी रामबहादुर तामाङलाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १३(३) नं. बमोजिम जन्मकैद सजाय हुने ठहराई काभ्रेपलाञ्चोक जिल्ला अदालतबाट मिति २०७३।३।२८ भएको फैसला सदर हुने ठहराई उच्च अदालत पाटनबाट मिति २०७५।१२।५ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा साधक सदर हुने ।

इजलास अधिकृतः सुशिल आचार्य

कम्प्युटर : सुप्रभा अर्याल

इति संवत् २०८० साल पौष २२ गते रोज १ शुभम् ।

## इजलास नं. ५

११

**मा.न्या.श्री सपना प्रधान मल्ल र मा.न्या.डा.श्री कुमार चुडाल,** *०७५-CI-०३८९, निर्णय बदर, बिसबहादुर सितिखु वि. केदारप्रसाद जोशीसमेत*

विवादित कि.नं. २८१ को जग्गाको मोही पुनबहादुर सितिखु र जग्गाधनी रत्नकुमारी जोशी भएकोमा विवाद छैन । निज पुनबहादुर सितिखु पुनलालका छोरा भएको र वादी विसबहादुर सितिखु पनि निजै पुनलालका छोरा भई वादी विसबहादुर सितिखु र प्रतिवादी पुनबहादुर सितिखु दाजु भाई नाताका रहेकोमा पनि विवाद देखिँदैन। प्रस्तुत विवाद दाजु नाताका पुनबहादुर मोही भएको जग्गा निज मोहीले जग्गाधनीलाई मोही हक छाडिदिएउपर भाई समेतको मोही हक हुने जग्गा भएकोले निजले मात्र मोही हक छाडिदिएको कानून विपरीत भएको भनी प्रस्तुत फिराद परेको देखिन्छ। विवादको मोही हक बाबुबाजे देखि नामसारी हुँदै आएको अवस्था नभई वादीका

दाजु/प्रतिवादीका नाममा भएको मोही हक दाजुले हक छाडेको अवस्था देखिएको छ। प्रस्तुत फिराद मोही हक पनि पैतृक सम्पत्ति सरह दाजु भाईको समेत हक लाग्ने भन्ने आधारमा परेको देखिन्छ। मोही हक कसैको जग्गा आफ्नो श्रमले कमाएबापत प्राप्त हुने अधिकार भएको देखिन्छ। यस्तो मोही हक अधिकार पनि दाजुभाईकै बिचमा पनि पूर्ण (Absolute) पूर्ण अधिकार नभएको अवस्था भूमिसम्बन्धी ऐन, २०२१ को दफा २६(१) मा मोहीले कमाई आएको जग्गामा मोहीसम्बन्धी हक निजपछि निजको एकासगोलका पत्नी, छोरा लगायतका व्यक्तिहरूमध्ये जग्गावालाले पत्याएको व्यक्तिलाई प्राप्त हुने कानूनी व्यवस्थाबमोजिम मोहीको मृत्यु भएमा जग्गा धनीले छोराहरूमध्येलाई पत्याउनु पर्ने व्यवस्था रहेको देखिन्छ। मोही हक अपुताली जस्तो स्वतः प्राप्त नभई पुनः स्थापना हुने र मोही दायित्व समेतका आधारमा सर्ने भोगाधिकार हकको रूपमा रहेको पाइने।

साबिक कि.नं. २८१ का मोहीले जग्गाधनीसँग रकम लिई वा सर्त वा परित्याग गरी मोही लगत कट्टा गर्न पाउन सक्छन् वा सक्दैनन् भन्ने कानूनी व्यवस्थाका सम्बन्धमा हेर्दा भूमिसम्बन्धी ऐन, २०२१ को दफा २६(१)(क) ले मोहीले चाहेमा जग्गा कमोद गर्न छाड्न सक्ने व्यवस्था गरेको छ। भूमिसम्बन्धी ऐन, २०२१ को दफा २६ग को कानूनी व्यवस्थाबमोजिम हेर्दा मोही र जग्गाधनीको मञ्जुरीमा मोही वा जग्गाधनीको नाममा एकलौटी दर्ता गरी मोही लगत कट्टा गर्न सकिने व्यवस्था छ। प्रस्तुत मुद्दामा मोही लगत कट्टा गरी जग्गाधनीको नाममा एकलौटी दर्ता गर्न भनी मिति २०७१/०१/३० मा मोही र जग्गाधनीको संयुक्त दरखास्त परेको अवस्था छ। मोहीले म बृद्ध भएकोले जग्गा कमाउन नसक्ने भनी मोही लगत कट्टा गर्न मञ्जुर भई निवेदन दिएको तथा जग्गाधनी समेत मञ्जुर भई संयुक्त निवेदन दिएको आधारमा भूमिसुधार कार्यालयबाट मोही लगत कट्टा हुने निर्णय भएको देखियो। विवादित जग्गाका मोही पुनबहादुरले उक्त जग्गामा मोही नामसारीबाट मोही प्राप्त गरेको जग्गा नभई निज पुनबहादुर प्रारम्भदेखि नै मोही पाएको जग्गा भन्नेमा विवाद छैन। यस्तो अवस्थामा जग्गाको मोही हक मोहीले आफूखुश छाड्न कानूनले बन्देज लगाएको देखिँदैन। सो जग्गाको मोही हक निज पुनबहादुरले छाड्दा अन्य अंशियार हकवालाको मन्जुरी लिनुपर्ने भन्ने भूमिसम्बन्धी ऐनले व्यवस्था गरेको देखिँदैन। यसरी मोही र जग्गाधनीको संयुक्त निवेदनको आधारमा कानूनबमोजिम भएको मोही लगत कट्टा गर्ने भूमिसुधार कार्यालय, भक्तपुरको मिति २०७१/०२/०६ को निर्णय र सो निर्णय सदर गरेको उच्च अदालत पाटनको फैसला कानूनसम्मत देखिने।

भूमिसुधार कार्यालय, भक्तपुरको मिति २०७१/०२/०६ को निर्णय बदर गर्ने गरी सुरू भक्तपुर जिल्ला अदालतबाट भएको फैसला उल्टी भई भूमिसुधार कार्यालय, भक्तपुरको उक्त निर्णय सदर कायम हुने गरी भएको उच्च अदालत पाटनको मिति २०७४/०३/१३ मा भएको फैसला सदर हुने।

इजलास अधिकृत: रूद्रप्रसाद अर्याल/ हिरामाया अवाल

कम्प्युटर : चन्द्राबती तिमल्सेना

इति संवत् २०८१ जेठ ३१ गते रोज ५ शुभम्।

- यसै लगाउको ०७५-WO-०३०३, उत्प्रेषणायुक्त परमादेश समेत, बिसबहादुर सितिखु, वि. तुल्सीमाया सितिखुसमेत भएको मुद्दामा पनि यसैअनुसार फैसला भएको छ।

१२

**मा.न्या.श्री सपना प्रधान मल्ल र मा.न्या.डा.श्री कुमार चुडाल,** *०७५-CR-०६३६, चेक अनादर, राजाराम साख वि. सुनिल कार्की*

विपक्षी राजाराम साखले लिएको रकम रू.९,६९,०००।- (नौ लाख उनान्सत्तरी हजार) बराबरको रकम भुक्तालीको लागी नविल बैङ्कको

चेक दिएकोमा निजको खातामा रकम नभएकोले उक्त चेक सटही हुन नसकी अनादर भएकोले चेकमा उल्लिखित रकम भरिभराउ मितिसम्मको ब्याजसमेत विपक्षीबाट दिलाई भराई विनिमय अधिकारपत्र ऐन, २०३४ को दफा १०७(क) बमोजिम हदैसम्मको सजाय गरिपाउँ भन्नेसमेत बेहोराको फिराददाबी रहेकोमा वादी दाबीबमोजिमको रू.९,६९,०००।- (नौ लाख उनानसत्तरी हजार रूपैयाँ) र सो चेकको मितिदेखिको कानूनबमोजिमको ब्याज प्रतिवादीबाट दिलाई भराई पाउने र प्रतिवादीलाई रू.३,०००/- (तीन हजार रूपैयाँ) जरिवानासमेत हुने ठहर्छ भनी काठमाडौं जिल्ला अदालतबाट मिति २०७३।२।३ मा भएको फैसलामा चित्त नबुझाई प्रतिवादी राजाराम साखले उच्च अदालत पाटनमा पुनरावेदन गरेकोमा उच्च अदालत पाटनबाट सुरू अदालतको फैसलालाई सदर गर्ने गरी फैसला भएको देखिन्छ। उक्त फैसलामा चित्त नबुझाई विपक्षी राजाराम साखले यस अदालतमा मुद्दा दोहोर्‍याइ हेरी पाउँ भनी निवेदन दिएकोमा उक्त निवेदनमा मुद्दा दोहोर्‍याई हेर्ने अनुमति प्रदान भई प्रस्तुत मुद्दा पुनरावेदनको रोहबाट दर्ता भइ पेस भएको पाइने।

आफ्नो खातामा के कती रकम छ सो को दायित्व खातावाल स्वयममा हुने नै हुँदा खातामा पर्याप्त रकम नहुँदा नहुँदै चेक काट्नु र चेकको रकम धारकले भुक्तानी नपाउनु विनिमेय अधिकारपत्र ऐन, २०३४ को दफा १०७क. बमोजिमको कसुर गरेको मान्नुपर्ने हुन्छ। वादीले चेकको रकम एवम् अन्य कुनै पनि रकम आफूले प्राप्त नगरेकोले वादी दाबीबमोजिम हुनुपर्ने जिकिरसहित यस अदालतमा समेत लिखित प्रतिवाद गरेको पाइने।

वादीले दाबीबमोजिमको रू.९,६९,०००।- (नौ लाख उनानसत्तरी हजार रूपैयाँ) र सो चेकको मितिदेखिको कानूनबमोजिमको ब्याज प्रतिवादीबाट दिलाई भराई पाउने र प्रतिवादीलाई रू.३,०००/-(तीन हजार रूपैयाँ) जरिवाना समेत हुने ठहर्छ भनी काठमाडौं जिल्ला अदालतबाट भएको फैसला सदर गर्ने गरी उच्च अदालत पाटनबाट मिति २०७४।०२।२६ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृतः देविबहादुर प्रधान
कम्प्युटर : चन्द्राबती तिमल्सेना
इति संवत् २०८१ भदौ २० गते रोज ५ शुभम्।

**१३**

**मा.न्या.श्री सपना प्रधान मल्ल र मा.न्या.श्री नहकुल सुवेदी,** *०७९-WH-०१६०, बन्दीप्रत्यक्षीकरण, अशोक सिजापती वि. जिल्ला अदालत, बबरमहल काठमाडौंसमेत*

रिट निवेदक विरूद्ध काठमाडौं जिल्ला अदालतमा दायर भएको लागु औषध (गाँजा) मुद्दामा निवेदक मिति २०६७।०५।१७ को थुनछेकको आदेशले धरौटीमा छुटेको र मिति २०६८।०३।०५ मा फैसला हुँदा १ वर्ष कैद र रू. ५,०००।- (पाँच हजार रूपैयाँ) जरिबाना ठहर भएकोमा सो फैसला भएको एघार (११) वर्षभन्दा लामो अवधिसम्म फरार रही मिति २०७९।०९।०६ मा मात्र प्रहरीले पक्राउ गरेको देखिँदा निवेदक आफू विरूद्ध चलेको मुद्दामा न्यायिक प्रक्रियामा समर्पित भई अदालतलाई सहयोग गरेको नदेखिएको स्वयं निवेदक विरूद्ध लागु औषध ओसारपसार तथा कारोबारसम्बन्धी कसुर ठहर भएकोमा त्यस्तो कसुरमा बालबालिका बाहेक अन्य कसुरदारलाई भएको कैद सजाय निलम्बन गर्न नसकिने भन्ने फौजदारी कसुर (सजाय निर्धारण तथा कार्यान्वयन) ऐन, २०७४ को दफा २४ को उपदफा (३) को व्यवस्था समेतको सन्दर्भमा निवेदकले मुलुकी फौजदारी कार्यविधि संहिता, २०७४ को दफा १५५ बमोजिमको सुविधा पाउन सक्ने अवस्था नदेखिएकोले काठमाडौ जिल्ला अदालतबाट त्यस्तो सुविधा प्रदान गर्न नमिल्ने भनी भएको आदेशलाई सदर गरी उच्च अदालत, पाटनबाट आदेश भइसकेको परिप्रेक्ष्यमा

निवेदकको मागबमोजिम मुलुकी फौजदारी कार्यविधि संहिता, २०७४ को दफा १५५ बमोजिमको सुविधा प्रदान गर्न मिल्ने अवस्था नदेखिने।

यस अदालतबाट प्रतिपादित सिद्धान्त समेतका आधारमा रिट निवेदक रिता सिजापतिलाई निज विरूद्ध दायर लागु औषध (गाँजा) मुद्दामा काठमाडौं जिल्ला अदालतबाट भएको फैसला कार्यान्वयनको सिलसिलामा पक्राउ गरी रीतपूर्वको कैदी पुर्जी दिई थुनामा राखिएको र निज न्यायिक प्रक्रियामा समर्पित भई सहयोग गरेको अवस्था समेत नहुँदा मुलुकी फौजदारी कार्यविधि संहिता, २०७४ को दफा १५५ बमोजिमको सुविधा प्रदान गर्न मिल्ने अवस्थासम्म नहुँदा निवेदन मागबमोजिमको आदेश जारी गर्न मिल्ने देखिएन। रिट निवेदन खारेज हुने ।

इजलास अधिकृतः- उदवीर नेपाली

कम्प्युटर - सरस्वती दाहाल

इति संवत् २०७९ फागुन २९ गते रोज २ शुभम्।

**१४**

**मा.न्या.श्री सपना प्रधान मल्ल र मा.न्या.श्री शारङ्गा सुवेदी,** *०८१-WO-००३७, उत्प्रेषणयुक्त परमादेशसमेत, विरेन्द्र दाहाल वि. नेपाल सरकार श्रम रोजगार तथा सामाजिक सुरक्षा मन्त्रालय, सिंहदरबार, काठमाडौं समेत*

मिति २०८०।०९।०६ को सम्झौताको बुँदा नं. २२ मा दोस्रो पक्ष (निवेदक युनिभर्सल टूर्स एण्ड ट्राभल्स प्रा.लि.) ले सम्झौतामा उल्लिखित बुँदा अनुसारको प्रावधानहरू कार्यान्वयन नगरेमा पहिलो पक्ष (वैदेशिक रोजगार विभाग, ई.पी.एस कोरिया शाखा) ले दोस्रो पक्षलाई एक महिना अगाडि जानकारी दिई सम्झौता रद्द गर्न सक्ने स्पष्ट प्रावधान रहेकोमा सम्झौता रद्द भए गरेको अवस्था समेत देखिन आएको छैन । वैदेशिक रोजगार विभाग, ई.पि.एस. कोरिया शाखाको लिखितजवाफ बेहोरा हेर्दा, सम्झौताको अवधि बढीमा एक वर्ष हुने भनी सम्झौतापत्रमा उल्लेख भएकोले एक वर्ष नै हुनुपर्ने बाध्यात्मक व्यवस्था नभएको भनी जिकिर लिइएको देखिन्छ । सम्झौतापत्रको बुँदा नं २२ बमोजिम सम्झौता रद्द नभएको अवस्थामा बुँदा नं २३ बमोजिमको अवधिलाई सम्झौताको अवधि मान्नुपर्ने हुन आयो । हवाई सम्झौताको नविकरण आर्थिक वर्षको आधारमा नभएको सन्दर्भमा रोजगार अनुमति प्रणालीमार्फत दक्षिण कोरिया जाने नेपाली श्रमिकहरू लैजान टेन्डर गर्दा नेपाली आर्थिक वर्षलाई आधार लिई एक आर्थिक वर्षको लागि सम्झौता गर्ने र सोपश्चात् नियमानुसार नयाँ सम्झौता वा नविकरण गर्दा पनि एक आर्थिक वर्षको लागि नै गर्ने भनी मिति २०८१।०२।१८ मा मन्त्रीस्तरको निर्णय भएको भन्ने समेत प्रत्यर्थीहरूको लिखित जवाफ बेहोराबाट देखिन आयो। लिखित जवाफ बेहोराबाट रिट निवेदक प्रा.लि.ले सम्झौतापत्रमा उल्लिखित सर्तहरू पालना नगरेको भन्ने अवस्था विद्यमान रहेको देखिँदैन । निवेदक प्रा.लि.को कार्य सम्पादन सन्तोषजनक नरहेको भन्ने अवस्था पनि लिखित जवाफ बेहोराबाट देखिन आएको छैन । करार सम्झौता रद्द समेत नगरी, करार अवधि बाँकी हुँदैको अवस्थामा सम्झौताको बाँकी अवधिको निमित्त समेत नयाँ बोलपत्र आह्वानको प्रक्रिया अगाडि बढाई बोलपत्र आह्वानको सूचना प्रकाशित गरिएको भन्ने देखिन आएकाले प्रत्यर्थीहरूबाट भएको उक्त कार्य सम्झौताको मर्म विपरीत भई न्यायोचित नदेखिने ।

प्रत्यर्थीहरूबाट सम्झौताबमोजिमको ठेक्का अवधि कायम रहँदाकै अवस्थामा सो सम्झौता रद्द समेत नगरी सम्झौताको बाँकी अवधि समेतको निम्ति मिति २०८१।०२।१८ को मन्त्रीस्तरको निर्णयको आधारमा मिति २०८१।०३।२७ मा गोरखापत्र राष्ट्रिय दैनिक पत्रिकामा प्रकाशित बोलपत्र आव्हान गर्ने सूचना तथा सो सूचनाबमोजिम भए गरेका सम्पूर्ण कार्यहरू उत्प्रेषणको आदेशले बदर हुने ठहर्छ । साथै, निवेदक प्रा.लि. र ई.पी.एस कोरिया शाखाबिच मिति २०८०।०९।०६ मा भएको सम्झौता अवधि व्यतित नहुँदै सो सम्झौता

बमोजिमको समयभित्रको कार्य सम्पादनमा प्रतिकूल प्रभाव पर्ने गरी रोजगार अनुमति प्रणाली (EPS) अन्तर्गत गणतन्त्र कोरियामा नेपाली कामदारहरूलाई नेपालको त्रिभूवन अन्तर्राष्ट्रिय विमानस्थल, गौचरबाट दक्षिण कोरियाको सिओल(Incheon Airport) सम्म हवाई उडान मार्फत कोरिया पुऱ्याउने प्रयोजनका लागि पुन: बोलपत्र आव्हान गर्ने समेतको कार्य नगर्नु नगराउनु भनी प्रत्यर्थीहरूको नाममा परमादेशको आदेश जारी हुने ।

इजलास अधिकृतः सुख्याती मल्ल

कम्प्युटर : चन्द्राबती तिमल्सेना

इति संवत् २०८१ साल भदौ २८ गते रोज ६ शुभम् ।

१५

**मा.न्या.श्री सपना प्रधान मल्ल र मा.न्या.श्री नित्यानन्द पाण्डेय,** *०७६-CR-०८५७, अपहरण तथा जबरजस्ती करणी, नेपाल सरकार वि. उमेश साह*

प्रमाण ऐन, २०३१ को दफा २५ अनुसार प्रतिवादीउपरको कसुर प्रमाणित गर्ने भार वादी पक्षको हुन्छ । प्रतिवादीउपर गरिएको अभियोजन वा अभियोग दाबी स्वतन्त्र एवम् वस्तुनिष्ठ प्रमाणबाट शंकारहित तवरबाट पुष्टि गर्ने दायित्व अभियोजन पक्षको हुन्छ । स्वतन्त्र एवम् निश्चयात्मक प्रमाणको अभावमा आरोपित कसुर कायम गर्नु फौजदारी न्ययका मान्य सिद्धान्त अनुरूप हुन सक्दैन । प्रस्तुत मुद्दामा प्रतिवादी आरोपित कसुरमा इन्कार रही बयान गरेको अवस्था छ । प्रतिवादीका साक्षीको बकपत्रबाट प्रतिवादीको इन्कारी बेहोरा समर्थित देखिन्छ । वादी पक्षका साक्षी जाहेरवाला अदालतसमक्ष उपस्थित भई बकपत्र गर्दा प्रतिवादीले आफ्नो छोरीलाई जबरजस्ती करणी नगरेको भनी जाहेरी बेहोरा खण्डीत हुने गरी बेहोरा लेखाएको देखियो । वादी पक्षका अन्य साक्षीहरू राम श्रेष्ठ साह, बैनाथ चौधरीले पनि प्रतिवादीले जबरजस्ती करणी नगरेको भनी अभियोग दाबी खण्डीत हुने गरी वकपत्र गरिदिएको देखिन्छ । जबरजस्ती करणी वारदातमा प्रत्यक्ष प्रमाणको रूपमा रहने पीडित अदालतसमक्ष उपस्थित भई बकपत्र गर्न सकेको देखिँदैन । निज पीडितको शारीरिक परिक्षण प्रतिवेदनबाट पनि पीडितलाई करणी भए नभएको यकिन गर्न नसकिएको, योनी वरीपरी घाउ चोट पटक नील डाम नदेखिएको, योनीभित्र वीर्य नपाएको, प्रतिवादीको शारीरिक परीक्षणबाट पनि कोतरिएको घाउ नभएको, करणी गरेको लिङ्गमा संकेत नदेखिएको भन्ने समेत बेहोरा खुलेको देखिएबाट समेत अभियोग दाबी बमोजिमको कसुर बस्तुनिष्ठ, विश्वसनीय एवम् निश्चयात्मक तवरबाट पुष्टी हुन सकेको नदेखिँदा प्रतिवादी उमेश साह तेलीले अभियोग दाबीबाट सफाइ पाउने ठहरी रौतहट जिल्ला अदालतबाट भएको फैसला सदर हुने ठहरी उच्च अदालत जनकपुर, अस्थायी इजलास विरगञ्जबाट भएको फैसला मिलेकै देखियो । प्रतिवादीलाई अभियोगदाबी बमोजिम सजाय गरीपाउँ भन्ने वादी नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकीर एवम् यस अदालतबाट मुद्दा दोहोऱ्याई हेरी पाउने गरी आदेश गर्दा लिइएका आधारसँग उपरोक्त विवेचित कारणबाट सहमत हुन नसकिने ।

प्रतिवादीको इन्कारी बयान, जाहेरी बेहोरा र अभियोग दाबी झुठा हो भनी जाहेरवालाले अदालतमा उपस्थित भई गरेको बकपत्र, पीडितलाई करणी भएको छ, छैन यकिन गर्न सकिएन, निजको योनी वरीपरी घाउ, चोटपटक, निलडामहरू देखिएको छैन भन्ने पीडितको शरीरिक परीक्षण प्रतिवेदन, Seman could not be confirmed भन्ने केन्द्रीय प्रहरी विधिविज्ञान प्रयोगशालाको प्रतिवेदन समेतका माथि विवेचित आधार प्रमाणबाट प्रतिवादी उमेश साह तेलीले अभियोग दाबीबाट सफाइ पाउने ठहऱ्याई सुरू रौतहट जिल्ला अदालतबाट मिति २०७५/२/२९ मा भएको फैसला सदर गर्ने गरी भएको उच्च अदालत जनकपुर,

अस्थायी इजलास वीरगन्जबाट मिति २०७५/१२/५ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।
इजलास अधिकृतः-रूद्रप्रसाद अर्याल
कम्प्युटर :-सरस्वती दाहाल
इति संवत २०८१ साल मङ्सिर २० गते रोज ५ शुभम्।

## इजलास नं. ६

१६

**मा.न्या.श्री सुष्मालता माथेमा र मा.न्या.श्री तिलप्रसाद श्रेष्ठ,** *०७२-CI-१९३९, ०७३-CI-०३२६, हक कायम दर्ता, आशाकाजी तुलाधर समेत वि. सत्यमाया नेपाली समेत, सत्यमाया नेपाली वि. आशाकाजी तुलाधर समेत*

नापीका समयमा फिल्डबुकमा ३ वटै कित्ताका जग्गामा मोहीका हैसियतले श्रीकृष्ण दमाईले नापी गराएको देखिन्छ। नापी हुँदा कित्ता नं.४५ र ४६ मा श्रीकृष्ण दमाईले आफू मोही देखाई जग्गाधनीमा हारे/दारे/हरि भनी लेखाएको देखिन्छ भने कित्ता नं.४७ मा श्रीकृष्ण दमाईले भाइ गोरे दमाई मोही रहेको देखाई नापी गराएको देखिन्छ । यसरी प्रतिवादीहरूका पिता पुस्ताका श्रीकृष्ण दमाईले नै आफू तथा भाइ गोरेलाई मोहीको रूपमा देखाई नापीका बखत फिल्डबुकमा लेखाएको देखिएको स्थितिमा अहिले आएर दोस्रो पुस्ताका प्रतिवादीहरूले उल्लिखित जग्गामा जग्गाधनी आफूहरू नै भएको र जग्गाधनीको रूपमा आफूहरूको हक कायम हुनुपर्छ भन्ने जिकिरलाई मान्यता दिन नमिल्ने।

पुनरावेदक राम नेपाली (मु.स. गर्ने सत्यमाया) ले दाबीको कित्ता नं.४५, ४६ र ४७ को जग्गामा मेरो हजुरबुवा तथा बुवाको हकको रहेकोले सो जग्गा मेरो नाउँमा हककायम दर्ता हुनुपर्छ भनी छुट्टै दाबी गरेको र प्रस्तुत मुद्दामा सोही बेहोराको प्रतिवाद गरेको अवस्था छ, सोतर्फ हेर्दा प्रत्यर्थी राम नेपालीले दाबी गर्दा जग्गाको फिल्डबुकलाई हकको मूल प्रमाण देखाई दाबी गरेको देखिन्छ। जग्गाको फिल्डबुकको किसान महलमा उल्लेख भएको द्वारे भन्ने व्यक्ति मेरो हजुरबा र निजको दुई छोराका मेरो पिता पूर्णबहादुर भन्ने गोरे दमाई र काका कुम्हाले दमाई भएको, काका निःसन्तान रहेको र परलोक भइसकेकोले म मात्र हकवाला भएको हुँदा सो जग्गामा मेरो हक लाग्ने भन्ने उल्लेख गरेको देखिन्छ। दाबीको जग्गाको फिल्डबुक हेर्दा मोही महलमा उल्लेख भएको श्रीकृष्ण दमाईको विषयमा निजको कुनै विवाद रहेको नदेखिँदा सो बेहोरालाई स्वीकारै गरेको मान्नु पर्ने हुन्छ। फिल्डबुकको किसान महलमा उल्लेख भएको जग्गाधनीको नाम स्पष्ट बुझिने अवस्थाको छैन । उल्लिखित नामलाई हारे/दारे/द्वारे/हरि आदि नामले आ-आफ्नै अर्थ लगाउने गरेको पाइन्छ। उल्लिखित नामलाई जसले जे अर्थमा बुझे पनि उक्त नामले "हरि" नामसँग सामिप्यता राखेको देखिन्छ। उल्लेख भएको नाम "हरि" नामसँग सामिप्यता रहेको कुरा के बाट पनि देखिन्छ भन्ने उक्त जग्गाहरूको फिल्डबुकको मोही महलमा श्रीकृष्ण दमाई र गोरे दमाई रहेको तथा सो फिल्डबुक तयार हुँदा श्रीकृष्ण दमाईले नै उपस्थित भई सही गरेको कुरामा सबैको सहमति रहेको देखिएकोछ। उक्त जग्गा नापी हुँदाका बखत फिल्डमा उपस्थित रहेको सो जग्गा कमाउने मोहीले नै मोहीको १ नं. लगत भरेको कुरा भूमिसुधार कार्यालयको रकर्डबाट पुष्टि भएको छ। श्रीकृष्ण दमाईले दाबीको जग्गा आफ्नो वा अरूको भन्ने महलमा "अरूको" भनी उल्लेख गरेको र अरूको भए जग्गावालाको नाम भन्ने महलमा "हरितिर्थ" भनी उल्लेख गरेको देखिएबाट उक्त जग्गाको फिल्डबुकको किसान महलमा उल्लेख गरिएको हारे/द्वारे/हरि भन्ने व्यक्ति "हरि" रहेको कुरा पुष्टि हुनुका साथै उल्लिखित "हरि" नामको व्यक्ति प्रतिवादीहरूका हजुरबुवा नरहेको प्रमाणित हुन आउँछ । यसका अतिरिक्त पुनरावेदक सत्यमाया नेपालीले मालपोत कार्यालयमा छुट जग्गा

दर्ताको लागि मिति २०६४।९।१० मा निवेदन दिंदा अरू कित्ता नं. का जग्गाहरूमा दाबी नगरी कित्ता नं.४७ मा मात्र दाबी गरेको देखिने।

वादी दाबीका जग्गाहरूमध्ये कित्ता नं.४५, ४६ र ४७ को जग्गाको फिल्डबुकमा उल्लिखित बेहोरा, मोहीको हैसियतले श्रीकृष्ण दमाईले भरेको १ नं. लगत तथा भूमिसुधार कार्यालय ललितपुरबाट प्रकाशित २ नं. अनुसूची समेतका प्रमाणहरूबाट उल्लिखित जग्गाहरूको साबिक जग्गाधनी हरि तिर्थ अर्थात हरि भन्ने हृदयराज तुलाधर र तिर्थ भन्ने तिर्थराज तुलाधर देखिएको तथा निजहरूको शेषपछिको हकदार यी पुनरावेदक/वादीहरू रहेको देखिएकोबाट सो जग्गामा यी पुनरावेदक/वादीहरूको हक कायम हुने ठहर गर्नुपर्ने मा सुरू ललितपुर जिल्ला अदालतले यी जग्गाहरूमा आधा हक हिस्सा सम्ममा वादीहरूको नाममा हक कायम गर्ने गरी मिति २०७१।१।३० मा गरेको फैसलालाई उल्टी गरी वादी दाबी नपुग्ने ठहऱ्याई तत्कालीन पुनरावेदन अदालत पाटनबाट मिति २०७२।८।२३ मा भएको फैसला मिलेको नदेखिँदा उल्टी भई वादी दाबीका कित्ता नं.४५, ४६ र ४७ को जग्गाहरूमा निज वादीहरू कै मागदाबी मोहीको भाग छोडेर आधा हकहिस्सा सम्ममा रहेको देखिँदा सोही बमोजिम आधा हकहिस्सा सम्ममा वादीहरूको हक कायम भै निजहरूको नाउँमा दर्ता समेत हुने ।

इजलास अधिकृत: जानकी रमण यादव

कम्प्युटर : समी नेपाली

इति संवत् २०७९ साल मङ्सिर ११ गते रोज १ शुभम्।

यसै लगाउका निम्न मुद्दाहरूमा पनि यसैनुसार फैसला भएका छन्।

- ०७२-CI-१९४१, ०७३-CI-०३२७, हक कायमसमेत, आशाकाजी तुलाधरसमेत वि. राजेन्द्र नेपाली समेत, सत्यमाया नेपाली वि. डल्ले नेपाली (दमाई)
- ०७२-CI-१९४०, ०७३-CI-०३२८, हक कायमसमेत, आशाकाजी तुलाधरसमेत, वि. सत्यमाया नेपाली, सत्यमाया नेपाली वि.आशाकाजी तुलाधरसमेत

## इजलास नं.८

### १७

**मा.न्या.श्री हरिप्रसाद फुयाल र मा.न्या.श्री बालकृष्ण ढकाल,** *०७४-WO-०७९७, उत्प्रेषण, धर्मदत्त त्रिपाठी वि. गुठी संस्थान, प्रधान कार्यालय, त्रिपुरेश्वर, काठमाडौंसमेत*

श्री विष्णु पादुका माईस्थान विकास समिति नामक गैरसरकारी संस्था दर्ता गराई सोही संस्थाबाट मन्दिरको जग्गा तथा सम्पत्तिको संरक्षण गर्ने गरी जिल्ला प्रशासन कार्यलयबाट निर्णय भई जग्गाको दर्तावाल मोही खारेज गराउनको निमित्त गुठी संस्थानलाई लेखी पठाउने भन्ने निर्णय गरी मालपोत कार्यालयबाट समेत निर्णय भै गुठी संस्थान केन्द्रीय कार्यालय काठमाडौंमा गुठी संस्थान ऐन, २०३३ को दफा २७(क) बमोजिम गुठी जग्गा महन्थ पुजारी र भोगवाला लाई मोही कायम गर्न नपाउने गरी पत्र प्रेसित गरेको देखिन्छ। उक्त पत्रको आधारबाट गुठी संथानले मिति २०७४।१२।९ मा विष्णु पादुका माइस्थान विकास समिति नामक समिति गठन गरी उक्त समितिको काम, कर्तव्य र अधिकार समेत तोक्ने निर्णय गरेको, भूमि व्यवस्था तथा अभिलेख शाखाको च. नं. १२१५ मिति २०७४।१२।२० पत्रबाट नापी कार्यालय, कास्कीलाई "मोही महल खाली राखी श्री विष्णु पादुका गुठी हेम्जाका नाममा नक्सा गरी विष्णु पादुका गुठीको गुठी तैनाथीमा दर्ता गरी पूर्जा उपलब्ध गराईदिनु पत्र र सोही शाखाको सोही च. नं. को पत्रबाट कि. नं. १७१३ र १७१९ को फिल्डबुक उतार र नक्सा उतार पठाइदिन पत्राचार गरेकोमा मालपोत कार्यालयले मोही र संरक्षकको नाम कट्टा गरेको जानकारी गराएको देखिने।

रिट निवेदक श्री विष्णुपादुका माईस्थान मन्दिरको नाममा रहेको उल्लिखित जग्गाहरूको संरक्षक एवं मोही रहेको तथ्य मिसिल संलग्न कागजातबाट देखिन्छ । यस अवस्थामा मोहीको हकमा आघात पुऱ्याउने कुनै पनि निर्णय गर्दा वा निजउपरको मोही हकका सम्बन्धमा कुनै पनि निर्णय गर्दा निजको समेत राय बुझी निर्णय गर्नु पर्ने हुन्छ । यी रिट निवेदक मोही रहेको जग्गाको हक स्वामित्वको विषयमा सरोकारवालाहरूले निर्णय गर्दा समेत निजलाई बुझ्ने वा सुनवाईको मौका दिई प्रष्टिकरण पेस गर्ने अवसर समेत विपक्षीहरूले दिएको अवस्था छैन । यस अवस्थामा निवेदकको मालपोत कार्यालय कास्कीको मिति २०४८।१०।०२ को निर्णय अनुसार कि.नं. ४ देखी १२०३ सम्मका जग्गाहरूमा संरक्षक बागमती त्रिपाठी रहेको र कि.नं. २९ देखी कि.नं. ६९ सम्मका २६ कित्ता जग्गाहरूमा विष्णु पादुका गुठी हेम्जाको नाममा दर्ता गरी मोहीको महलमा बागमती त्रिपाठी उल्लेख हुने गरी निर्णय भए अनुसार २०७२ साल सम्म रसिदबाट मालपोत कार्यालयमा तिरो बुझाउदै आएको अवस्थामा प्रत्यर्थी गुठी संस्थानले मिति २०७४।१२।१५ मा निर्णय गर्दा उल्लिखित जग्गाहरूको संरक्षक तथा मोहीको नाम कट्टा गर्ने निर्णय र सोही निर्णयको आधारमा मालपोत कार्यालय, कास्कीबाट मिति २०७५।०१।१९ मा भएको निर्णय रिट निवेदकलाई सुनवाईको उचित मौका समेत नदिई गरेको अन्यायिक तवरले गरेको देखिएकोले उत्प्रेषणको आदेशले बदर हुने देखिने ।

उपरोक्त जग्गाको सम्बन्धमा यि निवेदकलाई सुनवाईको मौका प्रदान नगरी एकपक्षीय रूपमा गरिएको प्रत्यर्थी गुठी संस्थानले मिति २०७४।१२।१५ मा निर्णय गर्दा उल्लिखित जग्गाहरूको संरक्षक तथा मोहीको नाम कट्टा गर्ने  निर्णय र सोही निर्णयको आधारमा मालपोत कार्यालय कास्कीबाट मिति २०७५।०१।१९ मा भएको निर्णय उत्प्रेषणको आदेशले बदर हुने ।

इजलास अधिकृत : प्रकृति पराजुली
कम्प्युटरः- शंकर गुरूङ्ग
इति संवत् २०८१ साल आषाढ २० गते रोज ५ शुभम् ।

१८

**मा.न्या.श्री हरिप्रसाद फुयाल र मा.न्या.श्री बालकृष्ण ढकाल,** *०८१-WH-००७०, बन्दीप्रत्यक्षीकरण, शिला गुरूङ वि. काठमाण्डौं जिल्ला अदालत समेत*

निवेदकले आफू मुलुकी फौजदारी कार्यविधि संहिता, २०७४ को दफा १३७ (६) बमोजिमको सुविधा पाउनुपर्ने व्यक्ति भएको भन्ने दाबी लिएकोतर्फ विचार गर्दा, मुलुकी फौजदारी कार्यविधि संहिता, २०७४ को दफा १३७ (६) मा "उपदफा (२) वा (४) बमोजिम धरौट वा जमानत दिन नसकी कैदमा बसी पुनरावेदन दिने व्यक्तिको पुनरावेदनउपर त्यस्तो पुनरावेदन दर्ता भएको मितिले ६ महिना भित्र फैसला हुन नसकेमा सम्बन्धित पुनरावेदन अदालतले त्यस्तो अवधीपछि कैदबाट छाडी तारेखमा राखी पुर्पक्ष गर्नुपर्नेछ" भन्ने व्यवस्था गरेको देखिन्छ । यो कानूनी व्यवस्था एक महत्त्वपूर्ण न्यायिक संरक्षण हो, जसमा जमानत दिन नसक्ने व्यक्तिले पुनरावेदन दिएपछि, पुनरावेदन सुन्ने अदालतले पुनरावेदन दर्ता भएको मितिले ६ महिना भित्र फैसला गर्न नसकेमा, सम्बन्धित व्यक्तिलाई कैदबाट मुक्त गरी तारेखमा राख्नुपर्ने व्यवस्था गरेको छ । यस व्यवस्थाको मुख्य उद्देश्य व्यक्तिको न्यायिक अधिकारको संरक्षण गर्नु, अनावश्यक कैदबाट बचाउ गर्नु र न्यायिक प्रक्रियामा समय सीमा कायम राख्नु हो, जसले न्यायपालिकामा पारदर्शिता र प्रभावकारिता सुनिश्चित गर्दछ । तर प्रस्तुत मुद्दामा यी रिट निवेदकले कैद जरिवाना तथा क्षतिपूर्तिबापत पेस गरेको जेथा जमानतको कारबाही गर्ने गरी धरौटीमा दर्ता रहेको जेथा जमानतको सम्बन्धमा बुझ्दा उक्त धरौटी बमोजिमको जेथा रोक्का रहेकोले पुनरावेदन दर्ता गर्ने

अर्को जेथा वा बैंक ग्यारेण्टी यी निवेदकले तोकिएको समयमा पेस गर्न नसकेकोले पुनरावेदन नै दर्ता नभएको र उल्लिखित दफाले स्पष्ट रूपमा पुनरावेदन दर्ता भएको ६ महिना भित्र फैसला हुने नसके मात्रै कैदबाट छाडी तारेखमा राखी पुर्पक्ष गर्नुपर्ने व्यवस्था गरेकोले यी रिट निवेदकलाई मुलुकी फौजदारी कार्यविधि संहिता, २०७४ को दफा १३७ (६) बमोजिमको सुविधा प्रदान गर्न नमिल्ने ।

निवेदकले लेनदेन व्यवहार मिलाउन नसकेको कारणबाट थुनामा बस्नुपरेको र प्रस्तुत मुद्दा मिलापत्र समेत हुने किसिमको भएकोले थुना मुक्त गरिपाउँ भन्ने दाबी लिएको सम्बन्धमा विचार गर्दा, नेपाल सरकार वादी हुने फौजदारी मुद्दामा मुलुकी फौजदारी कार्यविधि संहिता, २०७४ को दफा ११७ बमोजिम अनुसूची-३ र अनुसूची-४अन्तर्गतका कसुरसम्बन्धी कुनै मुद्दामा पक्षहरूको मञ्जुरीले जुनसुकै अवस्थामा मिलापत्र गर्न सकिनेछ भनी महान्यायाधिवक्ताको कार्यालयबाट मिति २०८०।४।११ मा परिपत्र भएको र यस व्यवस्थाले केवल दण्ड र सजायमा मात्र जोड नदिई पक्षहरूबिच मेलमिलाप, क्षमा र पुनर्स्थापनाको भावनालाई प्रोत्साहन गरी सामाजिक सद्भाव र न्यायिक सुधारलाई बढावा दिएको हुनाले यी रिट निवेदकले आफ्नो व्यवहार मिलाई जुनसुकै अवस्थामा मिलापत्र गर्न सक्नै नै हुँदा काठमाण्डौं जिल्ला अदालतको, फैसला कार्यन्वयन शाखाबाट भए गरेका काम कारबाहीबाट निवेदकलाई सुनवाईको अवसरबाट बन्चित गराएको अवस्थाको विद्यमानता नदेखिदा रिट निवेदकको संवैधानिक र कानूनी हकमा आघात पर्न गएको अवस्था नदेखिने ।

निवेदकले बन्दी प्रत्यक्षीकरणको माग गरेको सन्दर्भमा हेर्दा, यी निवेदकउपर कानूनी प्रक्रिया पुरा गरी मुद्दा चलेको र निवेदकलाई उक्त फैसला अनुसार लागेको कैद असुल गरी जरिवानाबापत कैद राखेको देखिएको हुँदा निजको कैद गैरकानूनी रहेको अवस्था नहुँदा निवेदक माग बमोजिम बन्दी प्रत्यक्षीकरणको आदेश जारी गरिरहनु पर्ने अवस्था देखिएन । प्रस्तुत रिट निवेदन खारेज हुने ।

इजलास अधिकृतः प्रकृति पराजुली

इति संवत् २०८१ साल असोज १४ गते रोज २ शुभम् ।

१९

**मा.न्या.श्री हरिप्रसाद फुयाल र मा.न्या.श्री बालकृष्ण ढकाल,** *०७५-CR-१४१३, गैरकानूनी रूपमा सम्पत्ति आर्जन गरी भ्रष्टाचार गरेको, नेपाल सरकार वि. गम्भिरलाल श्रेष्ठ*

गम्भिरलाल श्रेष्ठको नाममा दर्ता कायम रहे भएको काठमाडौं महानगरपालिका वडा नं. २९ स्थित कि.नं. ५० क्षेत्रफल ०-१-०-३ जग्गामा निजकी श्रीमती उत्तमदेवी श्रेष्ठको नाममा घर नक्सा मिति २०५०।१०।१३ मा पास गरी निर्माण गरिएको घरको तत्कालीन निर्माण लागतका हकमा अख्तियार दुरूपयोग अनुसन्धान आयोग, वि.अ.म.०७३/०७४ च.नं. ४४८ मिति २०७३।५।८ को पत्र साथ प्राप्त हुन आएको घर कम्पाउण्ड मूल्यांकन प्रतिवेदन अनुसार उक्त घरको निर्माण खर्च रू.३७,९४,३७५।३२।– कायम गरी प्रतिवादीको व्यय कायम भएको देखिन्छ ।उक्त निर्माण खर्चमा सरकारी निर्माण सरह ठेक्का कर, ओभरहेड खर्च समेत समावेश भएको भन्ने देखिन्छ ।व्यक्तिले घर निर्माण गर्दा ठेक्का कर र ओभरहेड खर्च नहुने हुँदा व्यक्तिले निर्माण गरेको घरमा समेत घर निर्माण खर्चको नाममा त्यस्तो कर र खर्च समावेश गरिनु न्यायोचित देखिँदैन ।तसर्थ यस अदालतबाट यसै प्रकृतीको मुद्दाहरूमा प्रतिपादित भएको सिद्धान्त अनुरूप उक्त घर निर्माण खर्चमा २० प्रतिशत छुट दिनु मनासिब देखिन्छ ।यस अवस्थामा कुल घर रू.३७,९४,३७५।३२।– बाट २० प्रतिशत छुट दिई हुन आउने रू.७,५८,८७५।– प्रतिवादीको व्ययमा कम हुने ।

प्रतिवादीको आयबाट ३० प्रतिशत जीवन निर्वाह खर्च भनी कटौती गरिएको देखिन्छ भने

पारिवारिक लालन पालन, सामाजिक परम्परा लगायतमा गरिएका खर्च भनी प्रतिवादीको व्यय कायम भएको देखिन्छ ।जसमा प्रतिवादीको परिवारका सदस्यहरू लागी खानपिन तथा शिक्षा बाहेकका अतिरिक्त खर्चहरूमा २०४३ देखि ०४६ सालसम्म मासिक रू.२५०।-, २०४७ देखि २०५० सालसम्म मासिक रू.३००।-, २०५१ देखि २०५५ सालसम्म मासिक रू.५००।– २०५६ देखि २०६० साल सम्म मासिक रू.१०००।, २०६१ देखि २०६५ साल सम्म मासिक रू.२०००।– र २०६६ देखि २०७१ सालसम्म मासिक रू.४०००।- अतिरिक्त खर्च हुने भनी प्रतिवादीले बयानमा खुलाएको देखिन्छ। २०६० साल भन्दा अगाडि गरिएका यस्ता अतिरिक्त खर्चहरूका हकमा सामान्य देखिएपनि २०६१ साल भन्दा पछाडीका पारिवारिक रूपमा गरिएका अतिरिक्त खर्चहरूलाई हेर्दा निज तथा निजको परिवारका सदस्यहरूको नाममा रहे भएका बैंक खाताहरूबाट ATM (Debit Card) बाट दैनिक गरिएका खर्चहरूको बैंक स्टेटमेन्ट समेतबाट देखिएका विवरण र निज गम्भिरलाल श्रेष्ठले खुलाईदिएको बेहोरा समेतलाई अध्ययन गर्दा २०६० साल र सो भन्दा अगाडि गरिएका अतिरिक्त सामान्य खर्चहरूलाई गणना नगरी २०६१ साल भन्दा पछाडिका पारिवारिक अतिरिक्त खर्चहरूलाई निजले खुलाईदिए अनुसार गणना गर्नु उपयुक्त देखिएकोले सोहि अनुसार गणना गरिएको छ भनी निजको व्ययको विवरणमा उल्लेख भएको देखिन्छ । २०६० साल पश्चातको अवधिमा रू.३,८८,०००।– अतिरिक्त खर्चमा प्रतिवादीको व्यय भएको भनी उल्लेख भएको देखिन्छ ।यसरी प्रतिवादीको जीवन निर्वाह खर्च भनी ३० प्रतिशत पहिले नै कटौती गरिसकेको अवस्थामा पुनः पारिवारिक लालनपालन तथा सामाजिक परम्पराको नाममा निजको व्यय कायम गर्नु उचित देखिँदैन । त्यस कारण कायम गरिएको रू.३,८८,०००।– समेत प्रतिवादीको व्ययमा समावेश गर्ने गरी आयोगबाट भएको प्रतिवादीको व्यय विवरण मनासिब नदेखिने।

प्रतिवादीको कि.नं. ५० र ५१ को जग्गाको क्षेत्रफल क्रमशः ०-१-०-३ र ०-१-०-२ गरी जम्मा ०-२-१-१ जग्गाको क्षेत्रफल रहेको देखिन्छ ।कि.नं. ५० मा २०५१ सालमा र कि.नं. ५१ २०५४ सालमा विधिपूर्वक नक्सा पास गरी घर निर्माण गर्न सुरू गरेको देखिन्छ।मिसिल संलग्न प्रतिवादीको सम्पत्ति विवरणमा उक्त जग्गामा केहि तला नक्सा पास गर्नेबित्तिकै र केहि तला क्रमशः निर्माण गर्दै आ.व. ०५७/०५८ सम्ममा निर्माण कार्य सम्पन्न गरेको भन्ने देखिन्छ । करदाता सेवा कार्यालय महाराजगन्जको मिति २०७४।३।२६ र २०७४।३।२८ को पत्रबाट प्रतिवादीले उक्त घर बहालबापतको कर २०७३ सालमा मात्र चुक्ता गरेको भन्ने विधिसम्मत देखिँदैन । आ.व. ०५७/०५८ सम्ममा लैनचौर जस्तो व्यपारिक एवं व्यवसायिक रूपले महत्त्वपूर्ण क्षेत्रमा सम्पूर्ण रूपमा घर निर्माण सम्पन्न भईसकेको अवस्थामा निजले उक्त घरबाट घरभाडा नभुझेको भन्न मिलेन ।आ.व. २०५५ देखि आ.व. २०६६ सम्मको अवधिलाई दुई चरणमा विभाजन गरी आ.व. २०५५ देखि आ.व. २०५७/०५८ सम्म वार्षिक रू.१,००,०००।-, २०५८/०५९ देखि आ.व. २०६५/०६६ सम्म वार्षिक सरदर रू.१,४०,०००।– गरी कुल रू.१४,२०,०००।– घरभाडाबापतको रकम प्रतिवादीको वैध आयमा गणना गरेको मनासिब देखिने।

प्रतिवादी मिति २०५१।१।२६ मा राजपत्र अनंकित प्रथम श्रेणीको पदमा ओभरसियर पदमा स्थायी भएको भन्ने देखिन्छ भने सो भन्दा पहिला ७ वर्ष सवओभरसियर र ओभरसियर पदमा अस्थायी रूपमा कार्यरत रहेको देखिन्छ।सो अवधिभित्र करिब ११ महिना सेवाबाट अवकाश समेत भएको पाइन्छ ।आयोगबाट पेस भएको आरोपपत्रमा प्रतिवादीको उक्त अवधिमा रू.१५,६४,९५४।– आयभन्दा बढी व्यय गरेको भनी उल्लेख भएको देखिन्छ भने प्रतिवादीले गैरकानूनी

रूपले अवैध सम्पत्ति आर्जन गरेको भनी दाबी लिए पनि सो दाबीलाई पुष्टि गर्ने ठोस प्रमाण वादी पक्षबाट प्रस्तुत भएको देखिँदैन । प्रतिवादीले मिति २०४५।१।१३ मा कि.नं.५९ को ०–४–१–० जग्गा २ जनाको साझेदारीमा रू.४,०००।–, मिति २०४६।५।३० मा भक्तपुर जिल्ला, दिव्यश्वरीस्थित कि.नं.१२४९ को ०–२–०–० जग्गा रू.६,०००।–, २०४६।१०।२३ मा सोही ठाउँको कि.नं.१२४८ को ०–१–०–० जग्गा रू.५,०००।–, मिति २०४६।१०।२६ मा सोही ठाउँको कि .नं. १२६१ को ०–१–०–० जग्गा रू.५,०००।–, मिति २०४९।२।९ मा सोही ठाउँको कि.नं.१२६० को ०–१–०–० जग्गा रू.५,०००।– र मिति २०५०।५।३० मा सोही ठाउँको कि.नं.१४७५ को ०–०–२–० जग्गा रू.३८,०००।– खरिद गरेको भन्ने देखिन्छ । त्यसैगरी लैनचौरस्थित कि.नं.५० को ०–१–०–३ मिति २०५०।८।४ मा रू.५२,७००।– मा र सोही ठाउँको कि.नं.५१ को ०–१–०–२ जग्गा रू.४३,९४६।– मा खरिद गरेको भनी आरोपदाबीमा उल्लेख भएको देखिन्छ । उल्लिखित कि.नं. का जग्गाहरू प्रतिवादीले एकै पटक खरिद नगरी पटक पटक टुक्रा टुक्रा गरी खरिद गरेको भन्ने देखिन्छ । प्रतिवादीले विभिन्न मितिमा नक्सा डिजाईन तथा घर निर्माणमा प्राविधिक सल्लाह समेत उपलब्ध गराई आर्जित रकमबाट जग्गा जमिन खरीद गरी घर निर्माण समेत गरेको भन्ने प्रतिवादीको जिकिर रहेको देखिन्छ ।प्रतिवादीकि श्रीमती उत्तमदेवी श्रेष्ठको नाममा २०४७ सालमा आङछिरिङ कन्सट्रक्सन, २०५७।४।१६ मा गौरव कन्सट्रक्सन र २०५०।११।१९ मा जि.एल. कन्सलटेन्सी दर्ता भएको देखिन्छ । उक्त कन्सट्रक्सन निजको श्रीमती उत्तमदेवी श्रेष्ठद्वारा बुझाएको कर समेतको आधारमा आ.व. ०६०/६१ देखि २०७१ माघ मसान्तसम्म जम्मा रू.१६,१८,०९७।– प्रतिवादीको आय कायम गरिएको देखिन्छ तर गौरव कन्सट्रक्सन २०५७ सालमा जि.एल.कन्सट्रक्सन २०५० सालमा दर्ता भएकोमा आ.व. ०६०/६१ पछि मात्र उक्त कन्सट्रक्सनहरूको आय हिसाब गरेको देखिन्छ । प्रतिवादीले उक्त कन्सट्रक्सनहरू दर्ता हुनुपुर्व नै आफूले नक्सा डिजाईनहरू गरेकोमा उक्त डिजाईन गरेबापतको आय आयोगले गणना नगरेको भन्ने जिकिर लिएको देखिन्छ । यस सम्बन्धमा आ.व. ०६०/६१ भन्दा अघिको प्रतिवादीको नक्सा डिजाईन, विवरण हेर्दा आ.व. ०४५/४६ देखि आ.व. ०५३/५४ को अवधिमा प्रतिवादीले प्रतिवादीले जम्मा १९७ नक्सा डिजाईन गरेको भनी प्रतिवादीबाट काठमाडौं महानगरपालिकाबाट प्रमाणित भई आएको नक्सासम्बन्धी प्रमाण समेत पेस भएको देखिन्छ ।गौरव कन्सट्रक्सन, जि.एल. कन्सल्टेन्सी र कान्तिपुर ई एण्ड आर्किटेक्चल कन्सट्रक्सन गरी कुल ७२४ थान नक्साहरू रहेको पाइन्छ । प्रतिवादीले नक्सा डिजाईन गरेबापत प्रतिनक्सा रू.४,०००।– देखि रू.६,०००।-का दरले - रू.७२,५३,४००।– आम्दानी गरेको भन्ने जिकिर लिएको देखिन्छ तर प्रतिवादीको जिकिर बमोजिम प्रतिनक्साको दर रू.४५००।– कायम गर्दा समेत निजको कुल आम्दानी रू.७२,५३,४००।– नभई रू.२६,०१,०००।– हुने देखिन्छ । यसबाट जीवन निर्वाह खर्चबापत ३० प्रतिशत र कार्यालय संचालन खर्चबापत २० प्रतिशतसहित ५० प्रतिशत खर्च कटाउँदा रू.१३,००,५००।– हुने देखिन्छ । कान्तिपुर ई. एण्ड आर्किटेक्चरल कन्स्ट्रक्सनबाट डिजाईन भएको १०६ थान नक्सामध्ये १/३ नक्साको आम्दानी मात्र प्रतिवादीको भागमा पर्ने भएकोले सोबापत ३ भागको १ भाग अलग गरी बाँकी रकममा ५० प्रतिशत खर्च कटाउँदा रू.७९,५००।– थप हुने देखिन्छ ।यसबाट प्रतिवादीले नक्सा डिजाईन गरेबापतकको कुल रकम रू.१२,८०,०००।– आम्दानी गरेको देखिन्छ । तर गौरव कन्सट्रक्सन मिति २०५७।४।१६ मा मात्र दर्ता भएकोले सो भन्दा अघि उक्त कन्स्ट्रक्सनबाट भएको आम्दानी रू.१,२८,०००।– कायम गरी निजको

आयमा गणना गरिनु मनासिब देखिएन ।अब उक्त आम्दानीलाई घटाई बाँकी रू.१२,५२,०००।– प्रतिवादीको आयमा गणना गर्नुपर्ने ।

प्रतिवादीले कृषि विकास बैंकबाट OD कर्जा लिए पनि उक्त ऋण लिने र दिने एकैसाथ भएको देखिँदा उक्त कर्जालाई प्रतिवादीको आम्दानीमा गणना गर्न मिल्ने देखिएन । मिति २०६९।१२।७ मा प्रतिवादीले कृष्ण बहादुर थापासँग बैंक चेक मार्फत रू.१२,००,०००।– (बाह्र लाख रूपैया) ऋण लिएको भनी उल्लेख गरेकोमा कायम भएको जाँच अवधि आ.व. ०६९/७० मा रू.चार लाख र आ.व. ०७०/७१ मा रू. ५,००,०००।– (पाँच लाख रूपैँया) बुझाई सकेको देखिँदा उक्त रकमलाई प्रतिवादीको आयमा गणना गर्नु नपर्ने।

प्रतिवादीहरू गम्भिरलाल श्रेष्ठ र उत्तमदेवी श्रेष्ठले आरोपदाबीबाट सफाइ पाउने ठहऱ्याई सुरू बिशेष अदालत काठमाडौंको मिति २०७५|०२|१७ को फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृतः सुस्मिता भट्टराई

कम्प्युटर: शकंर गुरूङ्ग

इति संवत् २०८० साल फाल्गुन २ गते रोज ४ शुभम् ।

२०

**मा.न्या.श्री हरिप्रसाद फुयाल र मा.न्या.श्री नित्यानन्द पाण्डेय,** *०८०-CR-०४२८, बोक्सीको आरोप र कर्तब्य ज्यान, नेपाल सरकार वि. हिरा लामासमेत*

सर्वप्रथम प्रतिवादीउपरको कर्तव्य ज्यानतर्फ अभियोग दाबी बमोजिम गरिपाउँ भन्ने पुनरावदन जिकिर सम्बन्धमा विचार गर्दा, मृतक लक्ष्मी परियारलाई मिति २०७३।०८।२० गते प्रतिवादीहरू हिरा लामा, काइली लामा समेतले कुटपिट गरी घाइते बनाएको र ऐ. २४ गते मिलन परियारले कुटपिट गरेको भन्ने जाहेरी बेहोरा, मृतक लक्ष्मी परियारले प्रतिवादी हिरा लामालाई र काइली लामालाई विभिन्न अपशब्द प्रयोग गरी गाली गलौच हुँदा कुटपिट भएको भन्ने निज प्रतिवादीहरू हिरालामा र काइली लामाको अनुसन्धानमा भएको बेहोरा, ऐ. २४ गते प्रतिवादी मिलन परियारले श्रीमती लक्ष्मी परियारलाई लौरोले हानेको देखेको भन्ने छिरिङ्ग तामाङ्गको बेहोरा, प्रतिवादी मिलन परियारले लक्ष्मी परियारलाई घकेलेको भन्ने सुमन परियारको बकपत्र, प्रतिवादी मिलन परियारको बयान बेहोरा एवं मृतकको शव परिक्षण प्रतिवेदन बाट Multiple blunt force injuries all over the body भन्ने देखिई उल्लिखित चोटको संयुक्त असरबाट मृतकको मृत्यु भएको भन्ने शव परीक्षण गर्ने चिकित्सकको बकपत्र समेतका प्रमाणबाट प्रतिवादीहरू हिरा लामा र काइली लामाले मिति २०७३।०८।२० मा गरेको कुटपिट एवं प्रतिवादी मिलन परियारले मिति २०७३।०८।२४ मा गरेको कुटपिटको संयुक्त प्रभावका कारण मृतकको मृत्यु भएको देखिए पनि प्रतिवादी हिरा लामा र काइली लामाले मृतकलाई मार्नु पर्ने सम्मको पुर्व रीसइवी वा कारण नदेखिएको, मार्ने मनसाय वा पुर्व योजना रहे भएको भन्ने पनि नदेखिएको, घातक वा जोखिम हातहतियार प्रयोग भए गरेको भन्ने पनि नदेखिएको, मृतकले विभिन्न अपशब्द प्रयोग गरी गाली गलौच गरेका कारणबाट मृतकलाई कुटपिट गरेको भन्ने देखिएको, सो दिनको कुटपिट वारदात बाट मृतक थला परेको भन्ने नदेखिई विवाहको निम्तामा गएको देखिएबाट उक्त घटना पश्चात मृतक कृयाशील नै रहेको देखिएको, सो घटना २० गते भएको भनिएकोमा सोही २३ गते मिलापत्र भएको समेत देखिएको, र अर्को प्रतिवादी मिलन परियारले पनि मृतकलाई मार्नु पर्ने सम्मको कारण नदेखिएको, मार्ने मनसाय वा पुर्व योजना वा जोखिम हातहतियार प्रयोग गरेको अवस्था पनि नदेखिएको अवस्था समेतका प्रमाणलाई विचार गर्दा प्रतिवादीहरूले मृतक मर्न सक्ने कुराको होस विचार नपुऱ्याई गरेको कुटपिटका कारण निज लक्ष्मी परियारको मृत्यु भएको घटना वारदातको अवस्था

पुष्टि भइरहेको देखिँदा निज प्रतिवादीहरूलाई तत्काल प्रचलित मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धीको ६(२) बमोजिम सजाय हुने ठहरी उच्च अदालत पाटनबाट भएको फैसला अन्यथा भएको भन्न मिल्ने देखिएन । निज प्रतिवादीहरूलाई कर्तव्य ज्यानतर्फ अभियोग दाबी बमोजिम सजाय हुनु पर्ने भन्ने पुनरावेदन जिकीर मनासिब हुन नसक्ने ।

अब बोक्सीको अभियोगतर्फ प्रतिवादीहरूलाई अभियोग दाबी भन्दा कम सजाय गरेको नमिलेको भन्ने पुनरावेदन जिकीरतर्फ विचार गर्दा, प्रतिवादी हिरा लामा र काइली लामाउपर बोक्सीको आरोप (कसुर र सजाय) ऐन, २०७२ को दफा ३ (१) (छ) को कसुरमा सजाय माग दाबी लिएकोमा निज प्रतिवादी हिरा लामा र काइली लामा आरोपित कसुरमा इन्कार रही अदालतसमक्ष बयान गरेको देखिन्छ । प्रस्तुत मुद्दामा मृतक लक्ष्मी परियारले प्रतिवादी हिरा लामा र काइली लामालाई अपशब्द प्रयोग गरी गाली गरेको कारणबाट विवाद श्रृजना भई सोही जरियाबाट कुटपिट भएको अवस्था देखिन्छ । जाहेरी दरखास्तमा बोक्सीको आरोप बेहोरा खुलाएको देखिँदैन । साथै २० गते घटना भएको भनिएकोमा २३ गते मिलापत्र भएको समेत मिसिलबाट देखिन्छ । प्रस्तुत अभियोग दाबी बमोजिम बोक्सीको आरोपसम्बन्धी वारदात भएको भए उक्त मिलापत्र हुँदा सो बेहोरा खुल्नु पर्नेमा खुलेको पनि देखिँदैन । २४ गते मृतकको मृत्यु भए पश्चात मात्र बोक्सीको आरोप लगाएको अवस्था देखिएबाट पनि अभियोग दाबी बमोजिम नै वारदात कसुर भएको भन्ने कुरा वस्तुगत एवं विश्वसनीय आधारबाट पुष्टि हुन सकेको देखिएन । तसर्थ, निज प्रतिवादीहरूका हकमा बोक्सीको आरोप (कसुर र सजाय) ऐन, २०७२ को दफा ३ (१) (छ) को कसुरमा ऐ. दफा ११ (१) (ङ) बमोजिम सजाय हुने सम्मको अवस्था नदेखिई प्रतिवादीहरूले मृतक लक्ष्मी परियारलाई बोक्सीको आरोपमा गाली बेइज्जती कुटपिट गरी ऐ. को दफा ३ (१)(ख) को कसुर गरेको देखिँदा निज प्रतिवादीहरूलाई सोही ऐनको दफा ११ (१) (ख) बमोजिम जनही १ वर्ष कैद र रू.१० हजार जरिवाना हुने साथै प्रतिवादी हिरा लामा सार्वजनिक पद धारण गरेका व्यक्तिलाई ऐ. ऐन को दफा ११(४) बमोजिम थप ३ महिना कैद र रू. ५०००।- जरिवाना हुने समेत ठहरी उच्च अदालत पाटनबाट भएको फैसला अन्यथा गरी रहनु नपर्ने ।

प्रतिवादी फुलमाया तामाङले अभियोग मागदाबीबाट र प्रतिवादी निरमाया तामाङले मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धीको १७ (३) को कसुरबाट सफाइ पाउने ठहऱ्याएको हदसम्म सुरू काभ्रेपलाञ्चोक जिल्ला अदालतको मिति २०७४।५।६ को फैसला सदर हुने, मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धीको १३(३) को अभियोग मागदाबीबाट प्रतिवादीहरू हिरा लामा र काईँली लामाले सफाइ पाउने तथा प्रतिवादी मिलन परियारलाई ज्यानसम्बन्धीको ६ (२) बमोजिम ८ महिना कैद हुने ठहरेको हदसम्म सुरू जिल्ला अदालतको फैसला केही बदर गरी प्रतिवादीहरू हिरा लामा, काईँली लामा र मिलन परियारलाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धीको महलको ६(२) नं. बमोजिम जनही कैद वर्ष २(दुई) हुने तथा प्रतिवादीहरू हिरा लामा, काईली लामा र निरमाया तामाङले बोक्सीको आरोप (कसुर र सजाय) ऐन, २०७२ को दफा ३ (१) (क) को कसुरमा ऐ. को दफा ११ (१)(क) बमोजिम कैद महिना ८ (आठ) कैद र जरिवाना रू. २०,०००।-(अक्षरूपी विस हजार रूपैंया) हुने ठहऱ्याई भएको सुरू जिल्ला अदालतको फैसला केही उल्टी गरी प्रतिवादीहरू हिरा लामा र काईँली लामालाई बोक्सीको आरोप (कसुर र सजाय) ऐन, २०७२ को दफा ३ (१) (ख) को कसुरमा ऐ. दफा ११ (१) (ख) बमोजिम जनही कैद वर्ष १(एक) र जरिवाना रू. १०,०००।-(दश हजार) हुने, प्रतिवादी हिरा लामालाई ऐ. दफा ११(४) बमोजिम थप ३ (तीन) महिना कैद र जरिवाना रू.२,५००।–(दुई हजार पाँच सय) हुने तथा प्रतिवादी निरमाया तामाङलाई ऐ. दफा

३ (१) (ञ) को कसुरमा दफा ११ (१) (छ) बमोजिम कैद महिना ६ (छ) र जरिवाना रू. ५,०००।–(पाँच हजार) हुने तथा दफा १२ (४) बमोजिम मृतकका नाबालक छोराछोरीले प्रतिवादीहरू हिरा लामा र काइँली लामाबाट क्षतिपूर्ति स्वरूप जनही रू.१०,०००।–(दश हजार) तथा प्रतिवादी निरमाया तामाङबाट रू. ५,०००।–(पाँच हजार) भराई पाउने ठहऱ्याई उच्च अदालत पाटनबाट मिति २०७६।०५।२९ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृतः ललित सापकोटा

कम्प्युटर : शंकर गुरूङ्ग

इति संवत् २०८१ साल फाल्गुन २८ गते रोज ४ शुभम् ।

## इजलास नं.९

२१

**मा.न्या.डा.श्री मनोजकुमार शर्मा र मा.न्या.डा.श्री कुमार चुडाल,** *०७३-CI-१०६४, ०७३-CI-१४१५, लिखत बदर दर्ता बदर दर्ता कायम, देव सुनैर यादव वि. सतिला साहु तेली समेत, ओमप्रकाश यादव,वि. सतिला साहु तेली समेत*

दाबीका जग्गाहरू प्रतिवादी विमला कुमारी यादवले सगोलको सम्पत्तिबाट खरिद गरेको वा सगोलको सम्पत्तिबाट बढे बढाएको भन्ने प्रमाण पुनरावेदक वादीहरूले पेस गर्न सकेको देखिँदैन । जग्गा प्रतिवादी विमलाकुमारीले सगोलको सम्पत्तिबाट खरिद गरी लिएको वा सगोलको सम्पत्तिबाट बढे बढाएको भन्ने पनि देखिँदैन । यी पुनरावेदक वादीले सुरू अदालतमा फिराद दायर गर्दा दाबीको जग्गा पैतृक तथा सगोलको सम्पत्ति हो भन्ने दाबी पेस गर्न सकेको पनि देखिँदैन । तत्काल प्रचलित मुलुकी ऐन स्त्री अंश धनको महलको १ नं. मा कन्या, सधवा वा विधवा स्वास्नीमानिसले आफ्नो आर्जनको चल अचल आफ्नो खुश गर्न पाउँछन् भन्ने व्यवस्था रहेको छ । यो स्त्री अंश धनको महलको १ नं. को कानूनी व्यवस्थाले कुनै पनि स्त्रीले आफ्नो आर्जनको चल अचल सम्पत्त आफ्नो खुस गरी बेचविखन समेत गर्न पाउने नै हुने ।

देव सुनैर यादव समेतले यी प्रत्यर्थी प्रतिवादी विमला कुमारी यादव समेतउपर सप्तरी जिल्ला अदालतमा दायर गरेको संवत् २०६९ सालको CP-०६६८ को अंशदर्ता मुद्दामा मिति २०७०/११/१९ मा तायदाती माग गर्दाका अवस्थामा मिति २०६८/०२/०७ मा मानो छुट्टिएको मिति कायम गरी सप्तरी जिल्ला अदालतबाट मिति २०७२/०१/३१ को फैसला भएको देखिन्छ । तायदाति माग गर्ने गरी गरेको उक्त आदेश अन्तिम भएको मिसिल सामेत अंशदर्ता मुद्दाको फैसलाको देखिन्छ । प्रस्तुत मुद्दाको जरियाको रूपमा रहेका जिल्ला सप्तरी गा.वि.स. मलेकपुर वडा नं.८ कि.नं.१०८३ को ०-३-० र कि.नं. १०८२ को ०-५-१ जग्गाहरू प्रतिवादी विमलाकुमारी यादवले सतिला साहको छोरा अमरलाल साहबाट र.नं.२९५१ मिति २०६८/०५/२१ को राजिनामा लिखत पारित गरी खरिद गरेको देखिने ।

सोहि जग्गा निज प्रतिवादी सतिला साहु तेलीले मिति २०६८/०८/०९ मा रजिष्ट्रेसन लिखत पारित गरी प्राप्त गरेको देखिन्छ । प्रतिवादी विमला कुमारी यादवका पति ओम प्रकाश यादवले निज प्रतिवादी सतिला साहु तेलीका छोरा अमरनाथ साहबाट मिति २०६८/०५/२९ को पारित लिखत बमोजिम कि.नं. १०८५ र १०८० का क्षे.फ. ०-८-० जग्गा लिएको र निज ओम प्रकाश यादवले पनि सतिला साहुलाई कि.नं. १०८२ र १०८३ का जग्गा बिक्री गरेको देखिन्छ । उक्त जग्गाहरू सट्टापट्टा गरेको भन्ने प्रतिवादी क्रेताको जिकिर भए तापनी जग्गा विक्रेता विमला कुमारी यादव, ओम प्रकाश यादव समेत म्यादै गुजारी बसी आफूले बिक्री गरेका जग्गा सम्बन्धमा केही प्रतिवाद वा बेहोरा नखुलाई अप्रत्यक्ष रूपमा वादीलाई सघाउ पुऱ्याउने चेष्टा समेत गरेको अवस्थामा वादी

दाबी स्वच्छ हात र सफहा हृदयबाट दायर भएको भन्न शंका गर्ने अवस्था देखिन आउँछ । साथ साथै २०६९ सालको CP-०६६८ को अंश दर्ता मुद्दाको फिराद मुद्दा मिति २०६८/०८/०७ मा दायर भएको मानो छुट्टाई सके पछि प्रस्तुत फिराद मिति २०६८/०८/०९ मा दायर हुन आएकोले तत् पश्चातका सम्पत्तिमा वादीको हक रहने अवस्था देखिँदैन । उक्त अंश मुद्दाको मिसिलबाट वादीसँग प्रस्तुत जग्गा जमिन रहेको अवस्था देखिन्छ । यसरी मानो छुट्टिएको मिति पछि प्राप्त गरेको जग्गालाई अन्यथा प्रमाणित नभएसम्म निजि आर्जनको मान्नु पर्ने ।

वादीहरूले दाबी गरेको र.नं. ७५६३ बाट मिति २०६८/०८/०९ मा पारित लिखतमध्ये ३ भागको १ भाग वादी देवसुनैर यादवको र अर्को १ भाग वादी ओमप्रकाश यादवको भागमध्ये ५ भागको ४ भाग वादी दाबी अनुसार लिखत बदर भै वादीहरूका नाममा दर्ता समेत हुने ठहऱ्याएको सुरू सप्तरी जिल्ला अदालतको मिति २०७२/०१/३१ को फैसला उल्टी गरी वादी दाबी पुग्न नसक्ने ठहर गरेको पुनरावेदन अदालत राजविराजको मिति २०७३/०२/२४ को फैसला मिलेको देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत:- दुर्गादत्त लम्साल
कम्प्युटर :- प्रेमबहादुर थापा
इति संवत् २०८० साल फागुन २७ गते रोज १ शुभम् ।

## २२

**मा.न्या.डा.श्री मनोजकुमार शर्मा र मा.न्या. डा.श्री कुमार चुडाल,** *०७२-CR-०३९३, वैदेशिक रोजगारसम्बन्धी कसुर, नेपाल सरकार वि. सुनिला घिमिरे (देउजा) समेत*

प्रस्तुत मुद्दामा प्रमाणको रूपमा जाहेरवालाबाट लिखत नै पेस भएका र ती लिखत अन्यथा प्रमाणीत भएको नदेखिएकाले त्यी लिखत प्रतिवादीका विरूद्ध प्रमाणमा ग्राह्य हुनेमा अन्यथा देखिएन । प्रतिवादी सुनिला घिमिरे (देउजा) ले वैदेशिक रोजगार व्यवसाय गर्ने इजाजत प्राप्त नगरी जाहेरवालाहरूलाई वैदेशिक रोजगारमा अमेरिका पठाईदिन्छु भनि प्रलोभनमा पारी विश्वास दिलाई रकम लिई लिखत कागज गरी दिई भने बमोजिम रोजगारीमा नपठाई रकम समेत फिर्ता नगरी निजले तत्सम्बन्धी कसुर गरेको पुष्टि भएको देखिने ।

नहकुल प्रसाद दाहाल समेतले दिएको जाहेरीमा प्रतिवादी सुमन देउजा कसुरमा संलग्न रहेको भन्ने उल्लेख भएको देखिए तापनि जाहेरवाला/पीडितहरूले वैदेशिक रोजगार न्यायाधिकरणमा उपस्थित भई निज प्रतिवादीले आफूहरूलाई वैदेशिक रोजगारमा अमेरिका पठाउने भनी रकम बुझेको भनी बकपत्रमा खुलाउन सकेको पनि देखिँदैन । सह-प्रतिवादी सुनिला घिमिरे (देउजा)ले समेत बयानका क्रममा यी प्रतिवादीउपर पोल गरेको पनि देखिँदैन । फौजदारी मुद्दामा जो जसले जस्तो कसुर गर्दछ सोहि व्यक्तिले दायित्व बहन गर्नु पर्ने हुने ।

प्रतिवादीमध्येकी सुनिला घिमिरे (देउजा) लाई वैदेशिक रोजगार ऐन, २०६४ को दफा ४३ बमोजिम १।६।० (एक वर्ष छ महिना) कैद र रू.१,५०,०००।- (एक लाख पचास हजार) जरिवाना गरी जाहेरवालाहरूको अभियोग मागदाबी बमोजिम हर्जानासहितको बिगो निज प्रतिवादीबाट भरी पाउने र प्रतिवादी सुमन देउजाले आरोपित कसुरबाट सफाइ पाउने ठहर गरी वैदेशिक रोजगार न्यायाधिकरणबाट मिति २०७१/१०/०४ मा भएको फैसला मिलेको देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत:- दुर्गादत्त लम्साल
कम्प्युटर:- प्रेमबहादुर थापा
इति संवत् २०८० साल फागुन २७ गते रोज १ शुभम् ।

- यसै लगाउको ०७६-CR- ०१७०, वैदेशिक रोजगारसम्बन्धी कसुर, सुमन देउजा वि. नेपाल सरकार भएको मुद्दामा पनि यसैनुसार फैसला भएको छ ।

२३

**मा.न्या.डा.श्री मनोजकुमार शर्मा र मा.न्या.श्री विनोद शर्मा,** *०७४-CR-०८८१, नकबजनी चोरी, नेपाल सरकार वि. नवीन चौधरी समेत*

प्रस्तुत मुद्दाका प्रतिवादीहरू मिति २०७२/६/१२ गतेको चोरीको वारदात तथा मिति २०७२/८/२९ को चोरीको वारदातमा संलग्न रहेकाले पटके कायम गरिपाउँ भन्ने नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकिर सम्बन्धमा हेर्दा, प्रतिवादीमध्येका नविन चौधरीले मिति २०७२/६/१२ गतेको चोरीको वारदातमा मात्र आफू संलग्न रही रू. ८००/- नगद र एउटा सोनी मोबाइल चोरी गरेको हुँ र चोरी गर्ने अन्य व्यक्ति आफूलाई थाहा नभएको भनी सुरू अदालतको बयानमा उल्लेख गरेको पाइन्छ । अन्य प्रतिवादीहरू संकेत ०७२-८ र ०७२-८(क) ले मिति २०७२/८/२९ को वारदातमा बाहेक अन्य वारदातमा आफ्नो संलग्नता नभएको भनी बयान गरेको देखिन्छ। मिति २०७२/६/१२ गतेको चोरीको वारदात घटाएको कुरामा साबिती रहेका प्रतिवादी नविन चौधरीले २०७२/८/२९ को वारदातमा संलग्न अन्य प्रतिवादीहरू संकेत ०७२-८ र ०७२-८(क) लाई पोल गरेको अवस्था समेत देखिँदैन। साथै, यी सम्पुर्ण प्रतिवादीहरू संकेत नं.५६ इ.प्र.का. तुलसीपुर ०७२-८, संकेत नं.५६ इ.प्र.का. तुलसीपुर ०७२-८ (क), शिवराज चौधरी र नवीन चौधरीउपर प्रस्तुत मुद्दामा एउटै अभियोगबाट मुद्दा चलाइएको देखिन्छ भने प्रस्तुत मुद्दाको वारदात हुनु पुर्व यी प्रतिवादीहरूउपर छुट्टै वारदात कायम भई अभियोग दायर भई सजाय समेत पाइसकेको भन्ने जस्ता पटके कायम गर्न मिल्ने आधार तथा प्रमाणहरू वादी पक्षले पेस गर्न सकेको देखिँदैन । यस अवस्थामा अभियोग दाबी अनुसार पटके कायम गरिपाउँ भन्ने नेपाल सरकारको पुनरवेदन जिकीर स्वीकारयोग्य नदेखिने ।

प्रतिवादीमध्येका चूर्णबहादुर वलीलाई सफाइ दिने गरी भएको फैसला नमिलेकोले अभियोग दाबी बमोजिम गरिपाउँ भन्ने नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकिरको सन्दर्भमा विचार गर्दा, निजले अधिकारप्राप्त अधिकारी र अदालतसमक्ष बयान गर्दा मैले मोबाइल पसल संचालन गरि आएकोमा पुस २ गते दुईजना फुच्चेहरू मोबाइल मर्मत गर्न भनी पसलमा आई २ वटा मोबाइल मर्मतको लागि छोडी ३ दिनपछि आउने गरी गएका हुन्। केही दिनपछि पुलिसहरू आई ती मोबाइल सेटहरू र केही समय अगाडि नवीन चौधरीले मर्मतका लागि दिएको सोनी मोबाइल थान-१ समेत गरी ३ थान मोबाइल प्रहरीले बरामद गरी लगेका हुन् । ती मोवाइल चोरीका हुन् भन्ने थाहा थिएन भनी कसुरमा पूर्ण इन्कार रही बयान गरेको देखिन्छ । मिसिल संलग्न कागजातहरूबाट यी प्रतिवादीले विधाता सप्लायर्स नामको मोवाइल पसल संचालन गरी मोवाइल मर्मत समेत गर्दै आएको भन्ने देखिन्छ । बरामदी मुचुल्काबाट प्रतिवादी नबिन चौधरी समेतले चोरी गरेको भनिएकोमध्येको ३ वटा मोवाइलहरू यी प्रतिवादी चुर्णबहादुर वलीको मोवाइल पसलमा बरामद भएको देखिन्छ। तापनि उक्त मोवाइलहरूमध्ये एक वटा नविन चौधरीले र दुइवाट दुइ जना फुच्चेहरू आई मर्मत गर्न भनी छोडि गएको भनी अधिकारप्राप्त अधिकारी र अदालतसमक्ष बयान गरेबाट निजले उक्त मोबाइलहरू खरिद गरेका नभई मर्मत गर्नका लागि आफ्नो पसलमा राखेको भन्ने नै देखिन्छ । निजले चोरीको भन्ने जानीजानी उक्त मोबाइलहरू राखेका हुन् भन्ने तथ्य अन्य बस्तुनिष्ठ प्रमाणहरूबाट समर्थीत भइरहेको स्थिति देखिँदैन । निज प्रतिवादीको हकमा अभियोग दाबी पुष्टी हुन आएको अवस्था नदेखिँदा तिन थान मोबाइलहरू निजको पसलबाट बरामद भएकै आधारमा मात्र निज प्रतिवादीले उक्त मोबाइल चोरीको हो भन्ने थाहा हुँदा हुँदै खरिद गरेका हुन् भनी अनुमान गर्न मिल्ने देखिन आएन । यसरी प्रतिवादी चूर्णबहादुर वलीको कसुरमा संलग्नता नदेखिएकोले

निजलाई अभियोग दाबीबाट सफाइ दिनेगरी उच्च अदालत तुलसीपुरबाट भएको फैसलालाई अन्यथा मान्न नमिल्ने ।

सुरू अदालतबाट रू.१,००,७५०/-बिगो कायम गरी सोही बमोजिम प्रतिवादीहरू संकेत नं.५६ इ.प्र.का. तुलसीपुर ०७२-८, संकेत नं.५६ इ.प्र.का. तुलसीपुर ०७२-८ (क), शिवराज चौधरी र नवीन चौधरीलाई तत्काल प्रचलित मुलुकी ऐन, चोरीको महलको १ र ३ नं. बमोजिमको कसुरमा सोही महलको १४(१) बमोजिम सजाय गर्ने र प्रतिवादी चूर्णबहादुर वलीले अभियोग दाबीबाट सफाइ पाउने गरी सुरू अदालतबाट भएको फैसला सदर हुने ठहऱ्याइ उच्च अदालत तुलसीपुरबाट मिति २०७३।१२।२१ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत : श्रेया पौडेल

कम्प्युटर: प्रशान्त चौधरी

इति संवत् २०८० माघ २३ गते रोज ३ शुभम्।

२४

**मा.न्या.डा.श्री मनोजकुमार शर्मा र मा.न्या.श्री शारङ्गा सुवेदी,** *०७४-CR-१३२८, ०७५-CR-०४४७, ०७९-CR-०३६३, कैदी भागे भगाएको, सिकेन्द्रप्रसाद यादव वि. नेपाल सरकार, नेपाल सरकार वि. खोमराज पंगाली समेत, रविन्द्रकृष्ण रन्जित वि. नेपाल सरकार*

प्रतिवादीहरू प्रहरी जवान करन महरा र खोमराज पंगाली तथा कमान्डर प्रहरी हवल्दार सिकेन्द्र यादवले अर्का प्रतिवादी पासाङ शेर्पालाई आँखा उपचारपछि बौद्ध नयाँबस्तीमा निजको परिवार बसोबास गरेकाले निजको घरकोठामा लगेको अवस्थामा निज घरकोठाको पछाडिको कौसीबाट भागेको भनी प्रतिवादीहरूले अधिकारप्राप्त अधिकारी तथा अदालतमा बयान गरेको देखिन्छ । उपचारका लागि भनी कारगारको सुरक्षार्थ खटिएका कमान्डर प्रहरी निरीक्षकको आदेशअनुसार निज प्रतिवादी पासाङ शेर्पालाई यी प्रतिवादीहरूले कारागार बाहिर उपचारको लागि लगेको र निजको घरकोठासम्म पुऱ्याएको अवस्थामा सुरक्षाको कमजोरीका कारण प्रतिवादी पासाङ शेर्पा भागेको देखिन्छ । यसरी सुरक्षाका लागि खटिएका प्रतिवादीहरू करन महरा र खोमराज पंगालीको उक्त कार्य लापरवाहीपूर्ण भन्ने सम्म पुष्टी हुने ।

प्रतिवादीहरू सिकेन्द्रप्रसाद यादव तथा रविन्द्रकृष्ण रन्जित दुबैजनाको उल्लिखित कार्यहरू आँफूलाई तोकिएको पदीय जिम्मेवारी र दायित्वको विपरीत भएको कुरामा विवाद नदेखिएको, निजहरूले कारागारमा लागु औषध मुद्दामा कैदी जीवन विताइरहेका प्रतिवादी पासाङ शेर्पालाई उपचारको लागि आँखा अस्पताल पुऱ्याई त्यहाँबाट सुरक्षा लापरबाही गरी निजको घरकोठासम्म पुऱ्याएको र निज पासाङ शेर्पालाई खाना खान भनी हतकडी समेत नलगाई राखेकोले भागेको भन्ने देखिन आएको, यी प्रतिवादीहरूले कैदीको सुरक्षाको व्यवस्थालाई सामान्यरूपमा लिई लापरवाहीपूर्ण कार्य गरेको देखिएको स्थितिमा यी प्रतिवादीहरूले गरेको सो कार्य माथि उल्लिखित कानूनी व्यवस्थालाई हेर्दा लापरबाहीसम्म भएको मान्नु पर्ने देखिन आयो। यसर्थ, उच्च अदालत पाटनबाट निज प्रतिवादीहरूलाई कारागार ऐन, २०१९ को दफा २४ को उपदफा (१) को खण्ड (क) को देहाय (३) बमोजिम अभियोग दाबी बमोजिम २ वर्ष ६ महिना कैद सजाय हुने ठहऱ्याई भएको फैसला मिलेको देखिन आएन। त्यसैगरी, अन्य प्रतिवादीहरू करन महरा र खोमराज पंगालीको हकमा निजहरूको कमान्डर प्रतिवादीहरू सिकेन्द्रप्रसाद यादवलाई कारागार ऐन, २०१९ को दफा २४ को उपदफा (१) को खण्ड (ग) बमोजिम लापरबाहीपूर्ण कार्यमा ६ (छ) महिना कैद सजाय हुने ठहरेकोले कमान्डरको आदेश पालना गर्ने यी प्रतिवादीहरूलाई अभियोग मागदाबी बमोजिम सजाय गरिपाउँ भन्ने वादी नेपाल सरकारको

पुनरावेदन जिकिर पुग्न सक्दैन । निज प्रतिवादीहरूले पनि सोही कानूनी व्यवस्था विपरीतको कसुरजन्य कार्य गरेको देखिएबाट निजहरूलाई समेत सोही ऐनको सोही दफाबमोजिम ६ महिना कैद सजाय हुने गरी सुरू काठमाडौं जिल्ला अदालतले गरेको फैसलालाई सदर गर्ने गरी उच्च पाटनबाट भएको फैसला मिलेकै देखिने ।

प्रतिवादीहरू सिकेन्द्रप्रसाद यादव र रविन्द्रकृष्ण रन्जितलाई अभियोग दाबी बमोजिम कारागार ऐन, २०१९ को दफा २४ को उपदफा (१) को खण्ड (क) (३) बमोजिम २ वर्ष ६ महिना कैद सजाय हुने ठहऱ्याई उच्च अदालत पाटनबाट मिति २०७४।०२।३० मा भएको फैसला मिलेको नदेखिँदा केही उल्टी भई सोही ऐनको दफा २४ को उपदफा (१) को खण्ड (ग) बमोजिम निज प्रतिवादीहरू सिकेन्द्रप्रसाद यादव र रविन्द्रकृष्ण रन्जितले लापरबाहीपूर्ण कार्य गरेको देखिँदा निजहरूलाई ६ (छ) महिना कैद सजाय हुने ठहर्छ । अन्य प्रतिवादीहरू करन महरा र खोमराज पंगालीको हकमा कारागार ऐन, २०१९ को दफा २४ को उपदफा (१) को खण्ड (ग) बमोजिम ६ महिना कैद सजाय हुने गरी सुरू काठमाडौं जिल्ला अदालतले गरेको फैसलालाई सदर गर्ने गरी उच्च पाटनबाट भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत : मिनबहादुर कुँवर/श्रेया पौडेल
कम्प्युटर:- प्रेमबहादुर थापा
इति संवत् २०८० साल फागुन ६ गते रोज १ शुभम् ।

२५

**मा.न्या.डा.श्री मनोजकुमार शर्मा र मा.न्या.श्री शारङ्गा सुवेदी,** *०७६-CR-१२७०, जबरजस्ती करणी, ध्रुवे भन्ने ध्रुव सार्की (रोक्का) वि. नेपाल सरकार*

पीडितको स्वास्थ्य परीक्षण प्रतिवेदनमा पनि निजको शारीरिक मानसिक अवस्था सामान्य रहेको र प्रतिकारका संकेत समेत नभएको अवस्थामा आफूलाई जबरजस्ती करणीको अभियोगमा सजाय गर्न मिल्ने होइन भनी लिएको दोस्रो पुनरावेदन जिकिरका सम्बन्धमा हेर्दा मिसिल संलग्न पीडितको शारीरिक परीक्षण प्रतिवेदनमा “Hymen Ruptured” भन्ने उल्लेख भएको देखिन्छ । पीडित परिवर्तित नाम धादिङ २४ (२०९) को शारीरिक परीक्षण गर्ने डाक्टर विविसा बानियाँले अदालतमा आई गरेको बकपत्रको स.ज. ८ मा पीडितको Hymen Ruptured भएको देखिएको, Genitals मा घाउ नदेखिए पनि जबरजस्ती करणी भएको हुन सक्छ र स.ज. १२ मा डर त्रास देखाई जबरजस्ती करणी गरेमा पीडितले प्रतिवाद नगरेको अवस्थामा घाउ चोट नदेखिन सक्छ भनी लेखाएको देखिन्छ । पीडित परिवर्तित नाम धादिङ २४ (२०९) ले अनुसन्धान र अदालतमा कागज तथा बकपत्रमा वारदातको दिन आफू घरको कोठामा सुती रहेको अवस्थामा प्रतिवादी ध्रुवे सार्की दिउसो ३:०० बजेको समयमा कोठाभित्र पसी मेरो सम्वेदनशील अंगहरू सुम्सम्याउन थाली जबरजस्ती भुईमा लडाई सुताई मेरो लुगा खोली दिई, निज प्रतिवादीले पनि लुगा खोली ममाथि चढी म चिच्याउँदा मेरो मुख थुनी कराइस् चिच्याईस् भने मारी दिन्छु भनी निज प्रतिवादीले डर त्रासमा पारी आफूलाई करणी गरेको हो भनी किटानीका साथ लेखाएको देखिन्छ । पीडितको उक्त बेहोरा हेर्दा मूलतः प्रतिवादीले पीडितलाई डर त्रास देखाई जबरजस्ती करणी गरेको भन्ने नै देखिँदा पीडितको स्वास्थ्य परीक्षण गर्ने डाक्टरको बकपत्रको स.ज. १२ मा उल्लिखित बेहोराको सापेक्षतामा मिलेको नै देखियो । त्यसैगरी जाहेरी दरखास्त तथा बकपत्र समेतमा बारदातको मिति २०७३।०४।२६ गते भएको भनी उल्लेख गरिएको तर पीडितको स्वास्थ्य परीक्षण मिति २०७३।०५।०७ मा भएको हो भनी जिल्ला अस्पताल धादिङको च.नं. ३९ मिति २०७३।०५।०७ गतेको पत्रबाट देखिँदा लामो समयावधिको अन्तरालमा भएको पीडितको शारीरिक परीक्षण प्रतिवेदनमा

जबरजस्ती करणीका लक्षणहरू नदेखिनुलाई अन्यथा मान्न नमिल्ने ।

वारदातको वास्तविक मिति २०७३।४।२६ गते नभई ११/१२ गते भएको हुँदा वारदातको मिति फरक परेको हो भनी प्रतिवादीले तेस्रो पुनरावेदन जिकिर लिएको देखिन्छ । वारदात कहिले भयो भन्ने सम्बन्धमा अदालतले हेर्ने आधिकारिक मिति भनेको जाहेरी दरखास्तमा उल्लिखित मिति, सोका सम्बन्धमा पीडितले अनुसन्धान र अदालतसमक्ष गरेको बकपत्र तथा पीडितको स्वास्थ्य परीक्षण प्रतिवेदन समेतका मिसिल संलग्न कागज प्रमाणमा उल्लिखित मितिलाई नै हेर्नुपर्ने हुन्छ । प्रस्तुत मुद्दाका सम्बन्धमा वारदातको मिति २०७३।४।२६ गते दिउसो ३ बजेको समयमा भएको हो भनी किटानीका साथ जाहेरी दरखास्तमा उल्लेख गरेको देखिन्छ । सोही मितिलाई नै उल्लेख गरी जाहेरवाला, पीडित तथा अन्य साक्षीहरू समेतले अदालतमा आई बकपत्र समेत गरेको र पीडितको स्वास्थ्य परीक्षण प्रतिवेदनमा पनि वारदात मिति २०७३।४।२६ गते दिउसो ३ बजे भएको भनी उल्लेख भएको देखिन्छ । त्यसै गरी प्रतिवादीले अनुसन्धान र अदालतमा आएर बयान गर्दा आफू मिति २०७३/४/२६ गेत दिनको ३ बजेको समयमा पीडितको घरमा गई ढोका घचघच्याई ढोका खोली हेर्दा पीडितलाई खाटमा सुतिराखेको देखेको हो भनी लेखाएको देखिँदा वारदात मिति २०७३।४।२६ मा भएको रहेछ भन्ने नै देखियो । यसका साथै प्रतिवादीले मौकामा अनुसन्धान र अदालतमा बयान गर्दा समेत आफूले पीडितको घरको ढोका घच्घच्याएको विषयमा गाउँमा भेला भएको, त्यही भेलामा आफ्नी श्रीमतीले पीडितलाई २ थप्पड हानेको हुँदा गाउँलेहरूको अनुरोधमा आफूले रू.२५,०००/- जरिवाना तिरेको भनी उल्लेख गरेको देखिन्छ । प्रतिवादीले पीडितको घरको ढोका घचघच्याएको र प्रतिवादीको श्रीमतीले पीडितलाई २ थप्पड हानेको विषयममा मात्र पनि प्रतिवादीले पीडितलाई त्यति ठूलो रकम जरिवाना तिर्नुपरेको भन्ने विषय पत्यारलाग्दो नदेखिने ।

प्रतिवादीका विरूद्ध जाहेरवालाको किटानी जाहेरी दरखास्त, जाहेरी बेहोरालाई समर्थन गर्दै पीडित तथा जाहेरवालाको अनुसन्धान र अदालत समेतमा भएको कागज तथा बकपत्र, पीडितको स्वास्थ्य परीक्षण प्रतिवेदन, सोही परीक्षण गर्ने चिकित्सकको अदालतमा आई गरेको बकपत्र, प्रतिवादीले वारदातको मिति फरक परेको हो भनी उल्लेख गरेको बेहोरा समेतका मिसिल संलग्न प्रमाण समेतलाई दृष्टिगत गर्दा यी प्रतिवादी ध्रूवे भन्ने ध्रूव सार्की रोक्काले परिवर्तित नाम धादिङ २४(२०९) लाई  जबरजस्ती करणी गरेको भन्ने नै देखिने।

प्रतिवादी ध्रूवे भन्ने ध्रूव सार्की रोक्कालाई मुलुकी ऐन, जबरजस्ती करणीको महलको ३ नं. को देहाय (५) बमोजिम पाँच वर्ष कैद हुने, जबरजस्ती करणीको ३क. नं.अन्तर्गत थप सजायतर्फको माग दाबी पुग्न नसक्ने साथै प्रतिवादीबाट पीडित नाम परिवर्तित धादिङ २४(२०९) ले रू.३०,०००/- क्षतिपूर्ति समेत भराई पाउने ठहरी भएको सुरू धादिङ जिल्ला अदालतको फैसलालाई सदर गरेको उच्च अदालत पाटनको मिति २०७५।०५।२५ को फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत :  विष्णुप्रसाद पौडेल

कम्प्युटर : प्रशान्त चौधरी

इति संवत् २०८१ कार्तिक ६ गते रोज ३ शुभम्।

२६

**मा.न्या.डा.श्री मनोजकुमार शर्मा र मा.न्या.श्री शारङ्गा सुवेदी,** *०७६-CR-०१८६, जबरजस्ती करणी, नेपाल सरकार वि. खिमराज श्रेष्ठ*

प्रतिवादीउपर जाहेरवालाको किटानी जाहेरी रहेको देखिए तापनि मिसिल संलग्न पीडित परिवर्तित नाम बाह्रविसे “च” की आमा परिवर्तित नाम बाह्रविसे “ङ” ले इलाका प्रहरी कार्यालय बाह्रविसेमा दिएको

जाहेरीमा "..घटनाको विषयमा छिमेकीले देखी सो बेहोरा मलाई भनी..निवेदन गरेको छु.." भन्ने उल्लेख भएको देखिन्छ । जाहेरवालाको उक्त बेहोराले घटना भएको सम्बन्धमा जाहेरवाला प्रत्यक्षदर्शी नभई सूचकसम्म रहेको भन्ने देखिन्छ । घटनाका प्रत्यक्षदर्शी भनिएका व्यक्तिहरू मीना तामाङ, पेम्बा शेर्पा र मुना शेर्पाले "..जाहेरीमा उल्लिखित स्थानमा पुगेपछि अपरिचित मानिसले करणी गरेको देखी हो हल्ला गरेपछि निज व्यक्तिहरू करणी गरिरहेको ठाँउबाट उठी हतार-हतार सुरूवाल लगाई उक्त स्थानबाट भागी फरार हुन लागेपछि हतार-हतार अगाडि बढ्दा निज प्रतिवादीलाई चिनेको हौँ.." भनी कागज गरेको देखिए तापनि निजहरूले सुरू अदालतमा बकपत्र गर्दा "..प्रतिवादीले पीडितलाई जबरजस्ती करणी गरेको कुरा आँखाले देखेको होईन । प्रतिवादीले परिवर्तित नाम बाह्रविसे "ङ" लाई धकेलेको र पीडित बालिका भागिरहेको देखेको हो । पछि पीडितले आफ्नो आमालाई घटनाको विषयमा भनेकाले थाहा पाएको हौँ.." भनी लेखाएको देखिन्छ । यसरी घटनाका सम्बन्धमा प्रत्यक्षदर्शीका रूपमा रहेका भनिएका व्यक्तिहरूले नै अनुसन्धान र अदालतमा फरक-फरक बेहोरा लेखाई बेहोरामा एकरूपता रहेको देखिँदैन । निजहरूको उक्त बेहोरालाई दृष्टिगत गर्दा प्रतिवादीले पीडित परिवर्तित नाम बाह्रविसे "ङ" लाई जबरजस्ती करणी गरेको भन्ने कुरा विवाद रहित रूपमा पुष्टी हुन नसकेको ।

त्यसैगरी पीडितको स्वास्थ्य परीक्षण प्रतिवेदनमा जबरजस्ती करणीका पर्याप्त लक्षण हुँदा हुँदै पनि प्रतिवादीलाई आशय करणीमा सजाय गर्ने गरी भएको उच्च अदालतको फैसला मिलेको छैन भन्ने अर्को पुनरावेदन जिकिरका सम्बन्धमा हेर्दा सुरू मिसिल संलग्न प्राथमिक स्वास्थ्य सेवा केन्द्र बाह्रविसे सिन्धुपाल्चोकको च.नं. १६५ मिति २०७३।०१।१५ गते सुरू अदालतलाई प्रेषित पत्र संलग्न पीडित बालिका वर्ष ११ की परिवर्तित नाम बाह्रबिसे "च" को स्वास्थ्य परीक्षण प्रतिवेदनमा "..no evidences of laceration abrasion or other injuries in vulva vagina and inner part, no evidence of bleeding from vulva and vagina, hymen membrane appear Intact on Inspection, looks Normal.." भन्ने समेत बेहोरा उल्लेख भएको देखिन्छ । जाहेरी दरखास्त र अदालत समेतमा जाहेरवालाले वकपत्र गर्दा प्रतिवादीले ५ मिनेटसम्म पीडितको योनीमा आफ्नो लिङ्ग घुसारी भित्र बाहिर गराएको भनी लेखाएको देखिए तापनि पीडितको स्वास्थ्य परीक्षण प्रतिवेदनलाई दृष्टिगत गर्दा पीडितको शरीरमा सो किसिमका कुनै पनि संघर्षका अवस्थाको विद्यमानता रहेको देखिँदैन । यस आधारमा पनि स्वास्थ्य परीक्षण प्रतिवेदनमा जबरजस्ती करणीका पर्याप्त लक्षण रहेको भन्ने पुनरावेदकको सो हदसम्मको पुनरावेदन जिकिर मनासिब नदेखिने ।

प्रतिवादी खिमाराम भन्ने खिमराज श्रेष्ठलाई मुलुकी ऐन, जबरजस्ती करणीको महलको १ नं. विपरित ३ नं. को देहाय २ नं. बमोजिमको कसुरमा सोही महलको ३ नं. को देहाय २ नं. बमोजिम सजाय गरी १० नं. बमोजिम क्षतिपूर्ति समेत दिलाई भराई पाउँ भनी पेस भएको अभियोगमा प्रतिवादीलाई मुलुकी ऐन, आसय करणीको १ नं. बमोजिम १ महिना कैद र रू. ५००।- (पाँच सय रूपैयाँ) जरिवाना हुने र पीडितले प्रतिवादीबाट रू. ३५,०००।- क्षतिपूर्ति भराई पाउने ठहऱ्याई भएको सुरू अदालतको फैसलालाई सदर गरेको उच्च अदालत पाटनको मिति २०७५।०१।११ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत : विष्णुप्रसाद पौडेल

कम्प्युटर : प्रशान्त चौधरी

इति संवत् २०८१ कार्तिक ६ गते रोज ३ शुभम् ।

२७

**मा.न्या.डा.श्री मनोजकुमार शर्मा र मा.न्या.श्री शारङ्गा सुवेदी,** *०७९-WO-०३५५, उत्प्रेषण*

*परमादेश, टंकप्रसाद आचार्य वि. काठमाडौं महानगरपालिका, बागदरवार, काठमाडौंसमेत*

निवेदकले निवेदनमा उल्लेख गरे बमोजिमको कम्पनी Seven and Eleven Megha Agriculture Food Products Pvt. Ltd. लाई सोझै सरकार तथा स्थानीय निकायले फोहरमैला व्यवस्थापनको जिम्मेवारी दिन सकिने अवस्था रहेको नदेखिएको र सोका लागि निवेदकले स्थानीय तहमा निवेदन दिनुपर्ने र सो तहले पनि बोलपत्र आह्वानको माध्यमबाट प्रतिस्पर्धा गराई उपयुक्त कम्पनीलाई छनौट गरी आवश्यक जिम्मेवारी दिन सक्ने व्यवस्था रहे भएकै देखियो । विपक्षीमध्येका काठमाडौं महानगरपालिका तथा ललितपुर नगरपालिका समेतको लिखित जवाफमा समेत यी निवेदकले उक्त निकायमा पुगी सो सम्बन्धमा निवेदन दिएको भन्ने पनि देखिँदैन। यसरी यी रिट निवेदकले स्थानीय सरकार सञ्चालन ऐन, २०७४ तथा फोहरमैला व्यवस्थापन ऐन, २०६८ ले व्यवस्था गरेबमोजिमको प्रक्रियाबाट प्रतिस्पर्धामा सहभागी हुन गएको भन्ने बेहोरा पनि मिसिल संलग्न कागजातहरूबाट नदेखिएको र निवेदकले रिट निवेदनमा उठाएको विषयवस्तुका सन्दर्भमा साधारण अधिकार क्षेत्रको माध्यमबाट सम्बोधन हुन सक्ने नै देखिँदा रिट क्षेत्राधिकारको माध्यमबाट यस अदालतमा प्रवेश गर्नु कानूनसम्मत समेत नदेखिने ।

यी निवेदकले आफूलाई फोहरमैला व्यवस्थापनको लागि सरकारले १०,००० रोपनी जग्गामा हदबन्दी छुट दिनुपर्छ भनी लिएको दोस्रो जिकिरका सम्बन्धमा हेर्दा, भूमिसम्बन्धी ऐन, २०२१ को दफा १२ मा "जग्गाको अधिकतम हदबन्दीमा छुट दिन सकिने" प्रावधान रहेको त्यसैगरी जग्गाको हदबन्दी छुट दिनेसम्बन्धी आदेश, २०७८ को दफा ३ मा "हदभन्दा बढी जग्गा खरिद गर्न स्वीकृतिका लागि भूमि व्यवस्थापन तथा अभिलेख विभागमा निवेदन दिनुपर्ने" व्यवस्था रहेको देखिन्छ। यसरी निवेदकले दाबी गरेजस्तो जग्गामा हदबन्दीमा छुटका लागि भूमि व्यवस्थापन तथा अभिलेख विभागमा निवेदन दिन सक्ने र सो सम्बन्धमा नेपाल सरकारले विश्लेषण गरी आवश्यक निर्णय गर्न सक्ने नै देखिँदा सो सम्बन्धमा समेत थप आदेश गर्नुपर्ने नदेखिने।

फोहोरमैलाको स्थायी समाधान गर्न निवेदक कम्पनी Seven and Eleven Megha Agriculture Food Products Pvt. Ltd. सम्झौता गरी सोको लागि आवश्यक पर्ने १०,००० रोपनी जग्गामा हदबन्दी छुट दिन विपक्षीहरूका नाममा परमादेशको आदेश जारी गरिपाऊँ भनी पेस भएको प्रस्तुत रिट निवेदन खारेज हुने ।

इजलास अधिकृत:- विष्णुप्रसाद पौडेल
कम्प्युटर:- प्रशान्त चौधरी
इति संवत् २०८१ कार्तिक ५ गते रोज २ शुभम् ।

२८

**मा.न्या.डा.श्री मनोजकुमार शर्मा र मा.न्या.श्री शारङ्गा सुवेदी,** *०७५-CR-०८५९, वैदेशिक रोजगार कसुर, नेपाल सरकार वि. सन्ध्या के.सी समेत*

जाहेरवालाको किटानी जाहेरी दरखास्त, प्रतिवादीको मौका र न्यायाधिकरणमा गरेको बयान तथा साक्षीहरूको बकपत्रबाट प्रतिवादीहरूले अभियोग दाबी बमोजिमको कसुर गरेको पुष्टि भइरहेको अवस्थामा निज प्रतिवादीहरूलाई सफाइ दिने गरी भएको फैसला त्रुटिपूर्ण रहेकोले बदर गरी निज प्रतिवादीहरूलाई अभियोग मागदाबी वमोजिम सजाय गरिपाउँ भन्ने नेपाल सरकारको मुख्य पुनरावेदन जिकिर रहेको देखिन्छ । झिकाई आएको सुरू मिसिल संलग्न जाहेरवाला शकुन्तला पराजुलीले वैदेशिक रोजगार न्यायाधिकरणमा गरेको बकपत्रको स.ज. ८ मा "..मैले सन्ध्या के.सीमार्फत उपेन्द्रराज खनाललाई रकम दिएको हो.." स.ज. १० मा "..प्रतिवादीमध्येकी सन्ध्या के.सी.लाई सजाय हुनुपर्ने होइन.." र स.ज. ११ मा "..प्रतिवादी सन्ध्या के.सी. असल चाल चलनकी व्यक्ति

हुनुहुन्छ..” भनी लेखाएको देखिन्छ । जाहेरवालाले सुरूमा किटानी जाहेरी दिएको देखिए तापनि वैदेशिक रोजगार न्यायाधिकरणसमक्ष उपस्थित भई बकपत्र गर्दा प्रतिवादी सन्ध्या के.सीलाई सजाय हुनुपर्ने होइन भनी बकपत्र गर्नुको अर्थ प्रस्तुत वारदातका सम्बन्धमा प्रतिवादी सन्ध्या के.सी को संलग्नता रहेनछ भनी मान्नुपर्ने देखिन्छ । यस आधारमा प्रतिवादी सन्ध्या के.सी.उपरको किटानी जाहेरी दरखास्त जाहेरवाला स्वयंले न्यायाधिकरणमा गरेको बकपत्रको रोहमा खण्डित हुने देखियो । यस्तो अवस्थामा प्रतिवादी सन्ध्या के.सीलाई अभियोग दाबी बमोजिम सजाय गरिपाउँ भन्ने पुनरावेदक वादी नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकिर मनासिब नदेखिने ।

प्रतिवादी उपेन्द्रराज खनालका हकमा विचार गर्दा जाहेरीमा निजले वा निजको कन्सल्टेन्सी (एरो ईमिग्रेशन कन्सल्टेन्सी) ले जाहेरवालालाई वैदेशिक रोजगारमा दक्षिण अफ्रिका पठाउन भनी रकम लिएको भन्ने उल्लेख भएको देखिँदैन । प्रतिवादीले जाहेरवालाबाट रकम बुझी कुनै कागज गरिदिएको वा निजको कन्सल्टेन्सीको नाउँबाट रसिद काटी रकम भुक्तान भएको पनि देखिँदैन । केवल सहअभियुक्त सन्ध्या के.सी.ले मैले प्रतिवादी उपेन्द्रराज खनाल सञ्चालक भएको एरो ईमिग्रेशन कन्सल्टेन्सीमा काम गर्दा जाहेरवालाबाट रकम लिई उपेन्द्रराज खनाललाई दिएको हुँ भनी पोल गरेको आधारमा मात्र निजउपर मुद्दा चलाइएको देखिन्छ । निज प्रतिवादीले अनुसन्धान अधिकृत र न्यायाधिकरणसमक्ष बयान गर्दा “जाहेरवालासँग चिनजान, लेनदेन केही छैन । मैले वैदेशिक रोजगारको कारोबार गर्दिन । एरो इमिग्रेशन कन्सल्टेन्सी मेरो नाउँमा दर्ता भए पनि सञ्चालनमै नआएकोले सन्ध्या के.सी.ले किन मलाई रकम बुझाएको भनिन् मलाई थाहा छैन” भनी आरोपित कसुरमा इन्कार रही बयान गरेको देखिन्छ । यसरी निज प्रतिवादी उपेन्द्रराज खनालउपर किटानी जाहेरी परेको पनि नदेखिएको तथा निजको तर्फबाट रकम बुझी जाहेरवालालाई कुनै भरपाई गरिदिएको सम्बन्धमा ठोस प्रमाण जाहेरवालाले पेस गर्न सकेको पनि नदेखिएको अवस्थामा निजउपरको आरोपित कसुर वस्तुनिष्ठ रुपमा पुष्टी हुन नसक्ने ।

जाहेरवाला शकुन्तला पराजुलीले ३ महिनाभित्र विदेश जानको लागि भनी प्रतिवादीलाई मिति २०७०।०१।१८ मा रकम बुझाएको भनी सोसम्बन्धी लिखत जाहेरी दरखास्त साथ पेस गरेको देखिएता पनि निजले वैदेशिक रोजगार न्यायाधिकरणमा मिति २०७१।०८।०४ मा बकपत्र गर्दाको मितिसम्म पनि पासपोर्ट बनाएको छैन भनी स.ज.१२ मा लेखाएको देखिन्छ । यसरी जाहेरवालाले आफू विदेश जानको लागि भनी प्रत्यर्थी प्रतिवादीहरूलाई रकम दिएको भने तापनि निजले रकम दिँदाको अवस्थासम्म पनि पासपोर्ट बनाएको नदेखिँदा उक्त कुरा पत्यार लायक देखिन आउँदैन । यसै सन्दर्भमा नेपाल सरकार वि. शिव विन्दुलाल कायस्थ को मुद्दामा “विदेश जान इच्छुक जाहेरवालाले राहदानी समेत नबनाएको अवस्थामा निजले प्रतिवादीलाई सोही प्रयोजनको लागि रकम दिएको भन्ने कुरा पत्यारलायक देखिन आउँदैन” भनी व्याख्या भएको पाइन्छ । प्रस्तुत अवस्थाले जाहेरवालाले प्रतिवादीलाई रकम दिएको भनी गरिएको लिखत कागजको वैद्यता पुष्टी हुन सकेको देखिँदैन । यस आधारमा पनि प्रतिवादीहरूलाई आरोपित कसुरबाट सफाइ दिने गरी वैदेशिक रोजगार न्यायाधिकरणबाट भएको फैसला मनासिब नै देखिने ।

सुरू वैदेशिक रोजगार न्यायाधिकरणबाट प्रतिवादीहरू सन्ध्या के.सी. र उपेन्द्रराज खनाललाई वैदेशिक रोजगार ऐन, २०६४ को दफा १० र ४३ विपरितको कसुरमा सोही ऐनको ४३ बमोजिम सजाय गरिपाउँ भनी पेस भएको अभियोग माग दाबीबाट निजहरूले सफाइ पाउने ठहऱ्याई मिति २०७४।१०।२२ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा

सदर हुने ।

इजलास अधिकृत:- विष्णुप्रसाद पौडेल

कम्प्युटर अपरेटर:- प्रशान्त चौधरी

इति संवत् २०८१ कार्तिक ६ गते रोज ३ शुभम् ।

२९

**मा.न्या.डा.श्री मनोजकुमार शर्मा र मा.न्या.श्री शारङ्गा सुवेदी,** *०७०-RB-००२८, आयकर (२०५८/०५९), ठूला करदाता कार्यालय हरिहरभवन, ललितपुर वि. बोटलर्स नेपाल लिमिटेड बालाजु, काठमाडौं*

मूलतः Bonus को खर्च र कर्मचारीको आवास व्यवस्था खर्चको विषयमा राजश्व न्यायाधिकरणको फैसला त्रुटिपूर्ण हुँदा उल्टी हुनुपर्छ भनी जिकिर लिएको हुँदा उक्त विषयहरूलाई छुट्टाछुट्टै रूपमा विश्लेषण गर्नुपर्ने देखियो। पुनरावेदकले जिकिर लिएको पहिलो विषय Bonus को खर्चको सम्बन्धमा हेर्दा, करदाताले आ.ब.२०५७/५८ सम्म प्रोभिजन भएको बोनस रकम आ.ब २०५८/०५९ मा रू. ५६,५०,६१०।-वितरण गरी बाँकी रू. ५,९२,८५७।- Labour Relation Committee मा हस्तान्तरण गरेको रकमलाई पनि ठूला करदाता कार्यालयले आयमा गणना गर्नुपर्ने भनी निर्णय गरेको देखिन्छ। बोनस ऐन, २०३० को दफा ७ मा कर्मचारीले बोनस पाउन सक्ने विभिन्न अवस्थाको उल्लेख गरेको र सोही ऐनको दफा १३ मा "..बोनसबापत छुट्याइएको रकमबाट बोनस वितरण गरी बाँकी रहन गएको रकममध्ये तीस प्रतिशत राष्ट्रिय स्तरको कल्याणकारी कोषमा र बाँकी सत्तरी प्रतिशत रकम प्रतिष्ठान स्तरको कल्याणकारी कोषमा जम्मा गर्नु पर्ने" भन्ने व्यवस्था रहेको छ । करदाताले बोनस ऐन, २०३० को दफा ७ अनुसार वितरण गरी बाँकी हुन आएको रू. ५,९२,८५७।– श्रम ऐन, २०४८ को दफा ३७ बमोजिम खडा गरिएको कल्याणकारी कोषमा विभिन्न मितिमा रकम बुझाएको भनी उल्लेख गरेको देखिन्छ। यसरी करदाताले उक्त रकम labour relation committee मा हस्तान्तरण गरेपछि सो रकममा निज करदाताको कुनै हक लाग्ने स्थिति पनि देखिँदैन । यसरी करदाताले बोनसलाई provision गरेको अवस्था तथा कानूनको परिधिभित्र रहेर बोनस वितरण गरेको अवस्थामा त्यस्तो रकममा खर्च कट्टी गर्न पाउने कुरालाई अन्यथा भन्न नमिल्ने ।

पुनरावेदकले जिकिर लिएको दोस्रो विषय कर्मचारीको आवास व्यवस्था खर्चको सम्बन्धमा हेर्दा, आ.व. २०५७।५८ सम्मको कर्मचारी आवास व्यवस्था रू. २६,६१,९७६।– सोही आ.व.मा आयकर प्रयोजनका लागि खुद आयमा समावेश गरेकोले उक्त रकम खुद आय निर्धारण गर्दा आयकर ऐन, २०५८ को दफा १३ अनुसार खर्चको रूपमा छुट लिएकोमा एक आ.ब.मा व्यवस्था गरी पुनः खुद आयमा समावेश गरी सकेको रकम वास्तविक रूपमा खर्च नभै labour relation committee को कोषमा भुक्तानी गरेकै कारणबाट उक्त रकम खर्चको रूपमा छुट दिन नमिल्ने भनी ठूला करदाता कार्यालयबाट कर निर्धारण भएको देखिन्छ। श्रम ऐन, २०४८ को दफा ४१ मा "व्यवस्थापकले कामदार तथा कर्मचारीको लागि स्वास्थ्यकर बासस्थानको प्रवन्ध गर्न प्रत्येक वर्ष प्रतिष्ठानको कूल मुनाफाको पाँच प्रतिशतमा नघट्ने गरी रकम छुट्याई क्रमशः बासस्थानको प्रवन्ध गर्दै जानुपर्छ" भन्ने व्यवस्था रहेको छ। करदाताले विगतको आ.व.को कानूनबमोजिम छुट्याइएको तर खर्च नभएकोले खुद आयमा समावेश गरी कर तिरिएकोमा प्रस्तुत आ.व.मा.सो रकम खर्च भएको हुँदा त्यस्तो कर तिरिएको रकमलाई पुनः खुद आयमा समावेश गर्न मिल्ने होइन भनी उल्लेख गरेको देखिन्छ। यसरी श्रम ऐनमा कर्मचारीको वासस्थानको लागि खुद मुनाफाको ५ प्रतिशत रकम छुट्याउनु पर्ने भनी व्यवस्था गरेको र सो व्यवस्था अनुसार छुट्याइ खर्च गरेको रकमलाई आयकर ऐन, २०५८ को दफा १३ समेतले करदातालाई खर्चको रूपमा छुट दिने कानूनी व्यवस्था

गरेको देखिँदा त्यस्तो रकमलाई अमान्य गरी आयमा गणना गर्नुपर्ने भनी भएको साबिकको कर निर्धारण आदेश सदर हुनुपर्छ भन्ने पुनरावेदकको दोस्रो पुनरावेदन जिकिर समेत मनासिब नदेखिने।

Bonus को खर्च र कर्मचारीको आवास व्यवस्था खर्चको विषयमा सुरू ठूला करदाता कार्यालय तथा आन्तरिक राजश्व विभागको कर निर्धारण आदेशलाई परिवर्तन गरी सो शीर्षकलाई करयोग्य आयमा समावेश गर्नु नपर्ने भनी राजश्व न्यायाधिकरण काठमाडौंबाट मिति २०६७।५।२० मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत:- विष्णुप्रसाद पौडेल
कम्प्युटर :- प्रशान्त चौधरी
इति संवत् २०८१ कार्तिक ६ गते रोज ३ शुभम् ।

## इजलास नं.१०

### ३०

**मा.न्या.डा.श्री कुमार चुडाल र मा.न्या.डा.श्री नहकुल सुवेदी,** *०७५-CI-००४३, अंश, कुहुरा मिश्र समेत, वि. केशबराम मिश्रसमेत*

२०५८ सालको मुद्दा नं. १७८१ को केशबराम मिश्रले सियाराम मिश्रलाई दिएको मुद्दामा लक्ष्मी नारायण मिश्र समेतलाई साबिक मुलुकी ऐनको अ.वं. १३९ नं. बमोजिम बुझिएकोमा उक्त फैसलाले लक्ष्मी नारायणलाई प्रतिवादी कायम गरेकोमा उनको पुनरावेदन नपरेको तथा उक्त फैसलाउपर लक्ष्मी नारायणको कुनै उजुर वाजुर रहेको नदेखिने ।

प्रतिवादीमध्येका स्व. सियाराम मिश्रतर्फका प्रतिवादी केशबराम मिश्रले २०५१।२।१३ पुर्व हामी प्रतिवादीहरूका नाउमा बन्डा गर्नु पर्ने कुनै सम्पत्ति नभएको भनी फाँटवारीमा उल्लेख गरेका र स्व. रघुनन्दन मिश्रको पत्नी लिलावती मिश्रले २०४६।४।३ पुर्व बाबु रघुनन्दन मिश्रका नाउँमा कि.नं. ९३८ समेतका ९ कित्ता जग्गा रहेको। हाम्रो पति/पिताले अंश छुटयाइ लिई पाएको सम्पत्ति अंश बन्डा गरी सकेको छौ भनी फाँटवारीमा उल्लेख गरेको पाइएको । पेस भएको फाँटवारीको कि.नं.९३८ समेतका ९ कित्ता जग्गाहरूमा यी वादीका बाबु स्व. लक्ष्मी नारायण मिश्रको अंश हक रहेको देखिइ लक्ष्मी नारायणका समान पुस्ताका अन्य २ अंशियारले अंशबापत रघुनन्दन मिश्रको नाउँमा रहेको जग्गा समेत लिई उक्त कित्ताहरू स्व. लक्ष्मी नारायण मिश्रको अंश हक भई यी वादीहरूले रघुनन्दन बाहुनको नाउँमा रहेको बाँकै गनापुर वडा नं. ५ को कि.नं. ९३८, ९४३, ९३९, ९४४, १०, ११, ९४१, ९४६ ऐ. वडा नं. ८ को कि.नं. ६६६ को जग्गाहरूबाट मात्र अंश छुटयाई लिन पाउने देखिएकोले वादीले उक्त जग्गाबाट ७ भागको ४ भाग अश छुटयाई लिन पाउने र स्व. सियाराम मिश्रको हाँगातर्फको केशबराम मिश्र समेतको र स्व. रघुनन्दन मिश्रको हाँगातर्फका प्रतिवादी लिलावती मिश्र समेतको अन्य सम्पत्तिमा वादीहरूको अंश भाग नलाग्ने गरी भएको फैसला मिलेकै देखिने।

सुरू बाँके जिल्ला अदालतले मिति २०७२।०२।२४ मा गरेको फैसला सदर हुने ठहऱ्याई मिति २०७३।०२।०४ मा पुनरावेदन अदालत, नेपालगञ्जले गरेको फैसला मिलेको देखिदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत : रमेश बहादुर कुँवर
कम्प्युटर: संदिप अवाल
इति संवत् २०८० साल मार्ग ४ गते रोज २ शुभम्।

यसै लगाउको निम्न मुद्दाहरूमा पनि यसैनुसार फैसला भएका छन्।

- ०७५-CI-००४४, लिखत दर्ता बदर, शितल प्रसाद मिश्र बाहुन वि. केशबराम मिश्र समेत
- ०७५-CI-००४५, लिखत बदर, मालिकराम मिश्र वि. केशबराम मिश्र समेत
- ०७५-CI-००४६, लिखत बदर, रामदेव

मिश्र समेत वि. केशबराम मिश्र समेत

- ०७५-CI-००४७, अंश, शितल प्रसाद मिश्र, वि. केशबराम मिश्र समेत
- ०७५-CR-०१६६, जालसाजी, शितल प्रसाद मिश्र बाहुन, वि. केशबराम मिश्र समेत
- ०७५-CR-०१६७, जालसाजी,रामदेव मिश्र, वि. केशबराम मिश्र समेत
- ०७५-Cr-०१६८, जालसाजी, मालिकराम मिश्र, वि. केशबराम मिश्र समेत
- ०७८-WO-१३८७, उत्प्रेषण परमादेश, मालिकराम मिश्रसमेत वि. विन्दु मल्ल समेत

३१

**मा.न्या.डा.श्री कुमार चुडाल र मा.न्या.श्री तिलप्रसाद श्रेष्ठ,** *०७५-CR-१७३०, वैदेशिक रोजगार कसुर, नेपाल सरकार वि. रमेश कमर*

जाहेरवालाहरू हुमकान्त न्यौपाने समेत ४ जनाले दिएको जाहेरीमा प्रतिवादी रमेश कमरले हामी जाहेरवालाहरूलाई वैदेशिक रोजगारमा अजरबैजान देशमा पठाई रोजगार दिलाइदिने भनी प्रति व्यक्ति रू.४,१४,५००।- का दरले जम्मा रकम रू.१६,५८,०००।- रकम बुझिलिई हामीमध्येको रिम बहादुर गुरूङ्गलाई मात्र उक्त मुलुक पठाई भने बमोजिमको काम, कम्पनी र सेवा सुविधा नदिलाई स्वदेश फर्किनु परेको र बाँकी तीन जनालाई भारतको दिल्लीसम्म पुर्‍याई अलपत्र पारी फर्किनु परेकोमा हामी जाहेरवालाहरूबाट लिए खाएको रकम समेत फिर्ता नगरी वैदेशिक रोजगार ऐन, २०६४ विपरीत कार्य गरेको हुँदा ऐन बमोजिम निज प्रतिवादी रमेश कमरलाई पक्राउ गरी हामीबाट लिएको बिगो र हर्जना रकम समेत दिलाई भराई पाऊँ भन्ने बेहोराको जाहेरीबाट प्रस्तुत मुद्दाको उठान भएको देखिन्छ। प्रतिवादी रमेश कमरले अनुसन्धान अधिकृतसमक्ष जाहेरवालासँग उक्त रकम लिएको स्वीकार गरी बयान गरेको देखिन्छ। प्रतिवादीले वैदेशिक रोजगार न्यायाधिकरणसमक्ष बयान गर्दा धन बहादुर कार्की जाहेरवाला सुमन कार्कीका बुवा हुन् । निज धन बहादुर कार्कीसँग मैले गाडी किन्नको लागि रू.११,९०,०००।- (एघार लाख नब्बे हजार रूपैयाँ) ऋण लिएको थिएँ। धन बहादुर कार्कीसँग सो लिएको रकम मैले समयमै फिर्ता गर्न नसकेपछि जाहेरवालाहरू सुमन कार्की, हुमकान्त न्यौपाने र प्रेम बहादुर राउतले डरधम्की दिएर जबरजस्ती वैदेशिक रोजगारको लिखत कागजमा सहीछाप गर्न लगाएका हुन् । सोही लिखत कागजको आधारमा मलाई यो झुठो अभियोग लगाइएको होला मैले जाहेरवालाहरू कसैलाई वैदेशिक रोजगारमा पठाउँछु भनी रकम, पासपोर्ट लिएको छैन तथा निजहरूलाई मैले विदेश पठाएको होइन भनी इन्कारी बयान गरेको देखिन्छ । जाहेरवालाहरूले समेत न्यायाधिकरणसमक्ष बकपत्र गर्दा आफूहरूले प्रतिवादीलाई वैदेशिक रोजगारका लागि रकम दिएको नभई लेनदेनका क्रममा रकम दिएको र उक्त रकम असूल गर्न सजिलोको लागि वैदेशिक रोजगारसम्बन्धी कागज बनाई जाहेरी दिएको हो र उक्त रकम आफूहरूले पाइसकेको भनी बकपत्र गरेको देखिन्छ। यसरी निज जाहेरवालाहरूले नै जाहेरी बेहोरा समर्थन नगरी उक्त वारदात वैदेशिक रोजगारको सम्बन्धमा नभएको भनी प्रतिकूल रही बकपत्र (Hostile Statement) गरेको अवस्थामा केवल जाहेरीकै आधारमा मात्र यी प्रतिवादीले वैदेशिक रोजगार कसुर गरेकै रहेछ भनी निष्कर्षमा पुग्न नसकिने।

प्रस्तुत मुद्दामा वैदेशिक रोजगार न्यायाधिकरणबाट मिति २०७५।४।२८ मा प्रतिवादीले सफाइ पाउने ठहर्‍याई यी जाहेरवालाहरूलाई जनही रू. ५,०००/- (पाँच हजार रूपैयाँ) जरिवाना गर्ने गरी भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत : अमृता बोगटी

कम्प्युटर: जगदिश दर्जी

इति संवत् २०८१ साल साउन २१ गते रोज २ शुभम्।

**३२**

**मा.न्या.डा.श्री कुमार चुडाल र मा.न्या.श्री विनोद शर्मा,** *०७६-CR-०९४९, कर्तव्य ज्यान, मनोज चौधरी वि. नेपाल सरकार*

मिसिल संलग्न घटनास्थल तथा लाश जाँच मुचुल्काबाट मृतकको टाउँकोको बिच भागमा तालु देखि पछाडीतर्फ ३ इन्चको धारिलो हतियारले काटेको जस्तो देखिने घाउँचोट रहेको देखिएको । मृतकको मृत्युको कारण Fatal Head Injury भन्ने उल्लेख भई मृतकको टाउँको र घाँटीको परिक्षणबाट Cut Injury over perito-occipital region (१०x६ cm) occipital bone fracture, Haematoma present around ६x६cm. blood oozing out from injury site भन्ने उल्लेख भई शवपरिक्षण प्रतिवेदनबाट चोटपटक देखिएको यस अवस्थामा मृतकको मृत्यु सामान्य नभई कर्तव्यबाट भएको हो भन्ने देखिन आएको । वारदात स्थलबाट रगत जस्तो रातो तरल पदार्थ लागि सुकेको अवस्थामा रहेको २० से.मी. लम्बाई ९ से.मी. चौडाई भएको त्रिकोण आकारको ढुङ्गा बरामद भएको भन्ने बरामदी मुचुल्काबाट देखिएको, उक्त बरामदित ढुङ्गामा लागेको रगत Human Blood was detected भन्ने केन्द्रिय प्रहरी विधि विज्ञान प्रयोगशालाको परिक्षण प्रतिवेदन समेतको प्रमाणबाट यी प्रतिवादीले मौकामा पुलबाट खसाली ढुङ्गा हानी मारेको हुँ भन्ने बयानलाई समर्थन र पुष्टि गरी दिएको पाइने।

यी प्रतिवादीको मौकाको बयान, प्रतिवादी संगसंगै नाच हेर्न गएको दिपक घिमिरेको बकपत्र, लाश जाँच मुचुल्का, शवपरिक्षण प्रतिवेदन, चप्पल बरामदलाई सनाखत कागज समेतमा उल्लेख भएको बेहोरा एकआपसमा मेल खाएको समेतका आधार कारणबाट यी प्रतिवादीलाई जन्मकैदको सजाय हुने ठहर्‍याई उच्च अदालत तुलसीपुरबाट मिति २०७६।०३।१७ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत : राम चन्द्र मंडल (खत्बे)
कम्प्युटर: जगदिश दर्जी
संवत् २०८१ साल भदौ १७ गते रोज २ शुभम्।

**३३**

**मा.न्या.डा.श्री कुमार चुडाल र मा.न्या.श्री विनोद शर्मा,** *०७६-CR-०७४८, जबरजस्ती करणी, परिवर्तित शिवनगर (क) ०७५/०७६ वि. नेपाल सरकार*

मिति २०७५।०४।१५ गते राती घरमा सुतिरहेको अवस्थामा प्रतिवादी बुबाले बाहिरबाट रक्सी खाई आई मलाई खाटबाट तानी आफ्नो खाटमा लगी सुताई सम्पूर्ण लुगाहरू खोली जबरजस्ती करणी गर्दा योनीबाट रगत आयो। विगत एक वर्ष देखि बुबाले करणी गर्दै आएकोमा डरले कसैलाई बताएकी थिइन । उक्त दिनको घटना माहिली बहिनीलाई बताएकीमा निजले आमालाई बताई छलफल पश्चात उजुर गर्न आएको हुँ । प्रतिवादीलाई कानूनबमोजिम कारबाही गरिपाउँ भन्ने पीडितको किटानी जाहेरी पश्चात प्रस्तुत मुद्दामा अनुसन्धान प्रारम्भ भएको देखिन्छ । मिसिल संलग्न कागजातहरूबाट १२ वर्षकी पीडित प्रतिवादीको जेठी छोरी नाताकी देखिन्छिन। पीडितको आमा विरामी भई माइत गएको अवस्थामा प्रतिवादी बुबाले बाहिरबाट रक्सी खाई आई आफूलाई जबरजस्ती करणी गरेको भन्ने पीडितले दिएको किटानी जाहेरी बेहोरालाई प्रत्यक्षदर्शी वारदातको दिन संगै रहेको पीडितको बहिनी परिवर्तित नाम शिवनगर (घ) ले आमा र कान्छी बहिनी मामा घरमा जानुभएको अवस्थामा जेठी दिदि शिवनगर (ख) ०७५/०७६ खाना खाई भान्सा कोठा नजिकै रहेको अवस्थामा बाबाले एक्कासी दिदिको हात तानेर आफू सुत्ने खाटमा लगि दिदिले लगाएको सम्पूर्ण कपडाहरू खोली आफ्नो सुसु गर्ने झिकेर दिदिको सुसु गर्ने ठाउँमा छिराउनु भयो। दिदिको मुख हातले थुनी चिच्याउन दिनु भएन । कोही कसैलाई

नभन भनी दिदिलाई म सुत्ने खाटमा गएर सुत्न भन्नु भयो । भोलीपल्ट म र दिदि संगै मामा घर गई आमालाई भनेको हो भनी जाहेरी बेहोरालाई समर्थित हुने गरी मौकामा कागज गरेको र सो लाई पुष्टि हुने गरी अदालतमा बुबाले दिदिलाई करणी गर्नु भयो भन्ने समेत बकपत्र गरी दिएकोबाट वारदात पुष्टि भएको देखिने ।

प्रस्तुत मुद्दामा पनि कसुरको प्रकृति जबरजस्ती करणी भएको, परिवार बिच घटना भएको, वारदात स्थलमा पीडक पीडित एउटै खाटमा सुतेको एवंम निजहरू बिचको सम्बद्ध कुरा ,प्रत्यक्ष दर्शी पीडितकी बहिनीको अदालतसमक्षको वकपत्र, पीडितको स्वास्थ्य परीक्षण, जाहेरी दरखास्त दिनु पर्ने कारण लगायत तमाम पक्षको सादृश्यता समेतको आधार कारणबाट पीडित एवंम अन्य मौकामा कागज गर्ने पीडितकी आमा लगायतको जाहेरी दरखास्त विपरीत वकपत्र (hostile statement) को प्रमाणिक ग्राहयता रहे भएको मान्न सकिएन ।उपरोक्त तथ्य प्रमाणको मूल्याङ्कनबाट प्रतिवादीको कसुर शंकारहित तवरबाट पुष्टि भएकोले उच्च अदालत पोखराबाट भएको फैसला मिलेकै देखिने ।

यी प्रतिवादी शिवनगर (क) ०७५/०७६ लाई तत्कालीन मुलुकी ऐन, जबरजस्ती करणीको महलको ३(२) नं. बमोजिम ९ वर्ष कैद र हाडनाता करणीको महलको १ नं. बमोजिम १० वर्ष कैद समेत थप हुने गरी जम्मा १९ वर्ष कैद सजाय हुने तथा क्षतिपूर्तिबापत रू. एक लाख पीडितलाई भराई दिने गरी उच्च अदालत पोखराबाट मिति २०७६।३।२५ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत : राम चन्द्र मंडल (खत्बे)

कम्प्युटर : शंकर सापकोटा

इति संवत् २०८१ साल भदौ १७ गते रोज २ शुभम् ।

३४

**मा.न्या.डा.श्री कुमार चुडाल र मा.न्या.श्री शारङ्गा सुवेदी,** *०७५-CR-०९७४, कर्तव्य ज्यान, नेपाल सरकार वि. राहुल कुमार कर्ण*

घटनास्थलमा फेला परेको लाश दुर्गन्धित भई सदगत भइसेकको अवस्थामा फेला परेको डायरी र लाशको फोटोको आधारमा मृतकको सनाखत भएको स्थितिमा निजको मृत्यु कर्तव्यबाट भएको भन्ने देखिन आए तापनि सो वारदात कसले घटाएको हो? वारदातमा को कसको कस्तो संलग्नता रहेको भन्ने सप्रमाण पुष्टि हुनुपर्ने हुन्छ । प्रतिवादी राहुल कुमार कृणबाट निज विरूद्ध प्रमाण लाग्ने कुनै पनि ठोस प्रमाण रहे भएको देखिँदैन । मृतकलाई क्यामराको लागि मारेको भन्ने देखिन्छ तर क्यामरा कहीँकतै बरामद वा ठेगान लागेको अवस्था छैन । कर्तव्य ज्यान जस्तो संगीन अपराधमा प्रतिवादीको कसुर शङ्का रहित तवरबाट पुष्टि हुन पर्ने हुन्छ । यदि शङ्काको अवस्था भएमा सो को सुविधा प्रतिवादीले प्राप्त गर्ने फौजदारी न्यायको मान्य सिद्धान्त रहेको पाइन्छ । निज प्रतिवादीले नै मृतक दिपनारायण यादवको हत्या गरेको हो भनी सप्रमाण प्रमाणित हुन नसकेको, वारदातमा प्रत्यक्षदर्शी कोही नभएको, निज प्रतिवादीले अदालतसमक्ष कसुरमा इन्कारी बयान गरेको अवस्थामा यी प्रतिवादीले नै कर्तव्य गरी मारेको भन्ने पुष्टी हुन सकेको नदेखिई उच्च अदालत जनकपुरबाट भएको फैसला मिलेकै देखिने ।

भौतिक दशी प्रमाण र प्रमाणको रोहमा बकपत्र गर्ने व्यक्तिहरूले प्रतिवादी राहुललाल कर्णको कसुर शङ्का रहित तवरबाट पुष्टि हुन नसकेको देखिँदा उच्च अदालत जनकपुरबाट निज प्रतिवादी राहुललाल कर्ण भन्ने राहुल कुमार कर्णले अभियोग दाबीको कसुर सजायबाट सफाइ पाउने ठहऱ्याई मिति २०७४।०३।२८ मा भएको फैसला मिलेको देखिई सदर हुने ।

इजलास अधिकृत : अमृता बोगटी

कम्प्युटर: जगदिश दर्जी

इति संवत् २०८१ साल साउन २२ गते रोज ३ शुभम् ।

३५

**मा.न्या.डा.श्री कुमार चुडाल र मा.न्या.श्री शारङ्गा सुवेदी,** *०७६-CR-०७८८, लागु औषध, नेपाल सरकार वि. राजेन्द्र किस्कु*

प्रतिवादी राजेन्द्र किस्कुको साथबाट बरामद भएको लागु औषधको परिमाण हेर्दा उक्त बरामदित लागु औषध बिक्री वितरण गर्ने उद्देश्यले ल्याएको भनी निर्विवाद वस्तुनिष्ठ प्रमाणबाट पुष्टि गर्न नसकेको र निज प्रतिवादीहरू सेवनकर्ता समेत भएको स्थितिमा प्रतिवादीहरूले उक्त लागु औषध सेवनको लागि निजहरूले सँगसाथमा लिएको भन्ने अवस्था देखिन आयो । यसरी बरामदी मुचुल्कामा OZOTRON लेखिएको खोल भित्र नाईट्रोशन ३ वटा पत्तामा ३० टेवलेट र अर्को OZOTRON लेखिएको खोल भित्र लुपेजेसिक-३, डाइजेल्याव-३, एभिल-३ बरामद गरिएको भन्ने बेहोरा उल्लेख भई उक्त बरामदित लागु औषधको परिमाणका साथै प्रतिवादी राजेन्द्र किस्कुले अदालतमा सेवनतर्फको कसुरमा साविति रही बयान गरेको अवस्था देखिएको समेतको सन्दर्भबाट उच्च अदालत विराटनगरबाट निज प्रतिवादीहरूलाई आरोपित कसुरबाट सफाइ हुने ठहऱ्याई मिति २०७५।०२।१५ मा भएको फैसला मिलेको नदेखिने।

प्रस्तुत मुद्दामा मोरङ जिल्ला अदालतबाट मिति २०७३।१०।२६ मा प्रतिवादीहरूले आरोपित कसुरबाट सफाइ पाउने ठहऱ्याई भएको फैसला सदर गरी उच्च अदालत विराटनगरबाट मिति २०७५।०२।१५ मा भएको फैसला मिलेको नदेखिँदा उल्टी भई निज प्रतिवादीहरूले लागु औषध (नियन्त्रण) ऐन, २०३३ को दफा १४(१)(ज) बमोजिम जनही दुई महिना कैद र दुई हजार रूपैयाँ जरिवाना हुने ।

इजलास अधिकृत : अमृता बोगटी

कम्प्युटर : जगदिश दर्जी

इति संवत् २०८१ साल साउन २२ गते रोज ३ शुभम्।

३६

**मा.न्या.डा.श्री कुमार चुडाल र मा. न्या श्री महेश शर्मा पौडेल,** *०७५-CR-१६९३, ०७६-CR-०९३४, लागु औषध (चरेस), लालमाया बुढामगर वि. नेपाल सरकार, अम्बर बहादुर बस्नेत वि. नेपाल सरकार*

पुनरावेदक प्रतिवादीहरूमध्ये लालमाया बुढामगर अनुसन्धानको क्रममा पक्राउ नपरी अभियोग दर्ता भएपश्चात अदालतमा हाजिर भएको र अर्का पुनरावेदक प्रतिवादी अम्बर बहादुर बस्नेत सहअभियुक्त पहलमान घलेको पोलमा अनुसन्धान कै क्रममा पक्राउ परेको देखिन्छ । यी प्रतिवादीहरू कसुर गर्नमा इन्कार रहेका र प्रतिवादीहरूकोसंग साथबाट आरोपित लागु औषध बरामद भएको अवस्था मिसिल संलग्न कागजातहरूबाट नदेखिने।

सहप्रतिवादी पहलमान घलेले अनुसन्धानको क्रममा अनुसन्धान अधिकारीसमक्ष तथा अदालत समेतमा बयान गर्दा बरामदीत लागु औषध प्रतिवादी लालमायाको झोलाबाट बरामद भएको भनी बयान गरेको तथ्य स्थापित नभएको र बरामदीत लागु औषध प्रतिवादी पहलमान घलेको घर कोठाबाट बरामद भएको अवस्था देखिन्छ । प्रतिवादी लालमाया बुढामगरको बयान बेहोरा हेर्दा, पित्त थैलीको विरामी भई करिब दुई वर्ष पहिला काठमाडौ आएकी थिए । पहलमान घले भन्ने व्यक्तलाई देखे चिनेजानेको छैन । निजलाई मेरो नाम कसरी थाहा भयो मलाई जानकारी छैन । लागु औषध कारोबार गरेको छैन। अभियोग दाबीबाट सफाइ हुनुपर्दछ भनी निजले गरेको इन्कारी बयानलाई निजका साक्षी सुनिलकुमार रोक्का मगर, नविन रोक्का मगर समेतले पुष्टि प्रमाणित हुने गरी अदालतमा उपस्थित भई बकपत्र गरिदिएको पाइने।

अर्का पुनरावेदक प्रतिवादी अम्बर बहादुर बस्नेत समेतलाई सह-अभियुक्त पहलमान घलेले पोल गरी अनुसन्धान अधिकारीसमक्ष बयान गरेको र निज

प्रतिवादीले अधिकार प्राप्त अधिकारीसमक्ष सावित रही बयान गरे तापनि सहअभियुक्त पहलमान घलेले अदालतमा बयान गर्दा यी प्रतिवादी अम्बर बहादुर बस्नेतसंग पहिले देखि चिनजान रहेको भन्ने तथ्यसम्म स्वीकार गरेको तर अभियोग दाबीको कसुरमा निजको संलग्नता नरहेको भनी बयान गरेको देखिन्छ। प्रतिवादी अम्बर बहादुर बस्नेत समेतले अदालतमा बयान गर्दा कसुरमा इन्कार रही बयान गरेको र निजका साक्षीहरू सम्पुर्ण स्थापित, हरिभक्त न्यौपाने र टेकबहादुर पोखरेल समेतले अम्बर बहादुर बस्नेत निर्दोष छ भनी निजको यी प्रतिवादीले अदालतमा गरेको बयानलाई समर्थन हुने गरी अदालतमा बकपत्र गरी दिएको अवस्था देखिन्छ । निज प्रतिवादीबाट लागु औषध बरामद नभएको, यी प्रतिवादी लागु औषध बरामद हुँदा संग संगै पक्राउ नपरेको, यी प्रतिवादीको हकमा अर्का सहअभियुक्तले मौकामा गरेको पोल समेतलाई खण्डन हुने गरी अदालतमा गरिदिएको बयान समेतबाट निज प्रतिवादीउपर मिसिल संलग्न स्वतन्त्र एवं वस्तुनिष्ठ प्रमाणबाट अभियोग दाबी समेत समर्थित र पुष्टि हुन नसकेको अवस्था देखिने।

दुवैजना पुनरावेदक प्रतिवादीहरूउपर कुनै ठोस प्रमाणको आधारमा अभियोग लगाएको नभई केवल सहअभियुक्तको पोलको आधारमा मात्र मुद्दा चलाएको निजहरूसंग लागु औषध समेत बरामद नभएको अवस्थामा पनि प्रतिवादीहरूमध्ये लालमाया बुढा मगरलाई मतियारमा र अर्का प्रतिवादी अम्बर बहादुर बस्नेतलाई दुरूत्साहनतर्फ कसुरदार ठहराई सजाय गरेको सुरू काठमाडौ जिल्ला अदालतको फैसलालाई सदर गर्ने गरी उच्च अदालत पाटनबाट मिति २०७५।३।१८ मा भएको फैसला सो हदसम्म मिलेको नदेखिने ।

पुनरावेदक प्रतिवादीहरूमध्ये लालमाया बुढामगरलाई मतियारमा र अर्का पुनरावेदक प्रतिवादी अम्बर बहादुर बस्नेतले दुरूत्साहनमा कसुरदार ठहराई सजाय गर्ने गरी काठमाडौ जिल्ला अदालतबाट भएको फैसलालाई सदर गर्ने गरी उच्च अदालत पाटनबाट मिति २०७५।३।१८ मा भएको फैसला यी प्रतिवादीहरूको हकसम्ममा मिलेको नदेखिँदा केही उल्टी भई यी प्रतिवादीहरू लालमाया बुढामगर र अम्बर बहादुर बस्नेत अभियोग दाबीबाट सफाइ पाउने ।

इजलास अधिकृत : राम चन्द्र मंडल (खत्बे)
कम्प्युटर : जगदिश दर्जी
इति संवत् २०८१ साल भदौ १६ गते रोज १ शुभम्।

**३७**

**मा.न्या.डा.श्री कुमार चुडाल र मा.न्या.श्री महेश शर्मा पौडेल,** *०८१-WH-०२०७, बन्दीप्रत्यक्षीकरण, रिन्कु श्रेष्ठ वि. काठमाडौं जिल्ला अदालत, बबरमहल, काठमाडौं समेत*

काठमाडौं जिल्ला अदालतबाट मिति २०८१।०५।०६ मा थुनछेक आदेश हुँदा प्रतिवादी जितेन्द्र श्रेष्ठले सहकारीको सञ्चालक समितिको सहसचिव भई निजले आफ्नो दाई भाईराजा श्रेष्ठले उक्त सहकारीबाट रू.९० लाख रूपैंया ऋण लिँदा जमानी बसेको कुरा स्वीकार गरी अदालतमा बयान गरेको अवस्था, कसुरको मात्रा, कसुर ठहर भएमा अभियुक्तलाई हुन सक्ने सजाय समेतलाई मध्यनजर गर्दा, यी प्रतिवादीलाई मुलुकी फौजदारी कार्यविधि संहिता, २०७४ को दफा ६७(१)(ख) बमोजिम हाल मुद्दा पुर्पक्षको लागि थुनामा राख्नुपर्ने अवस्थाको विद्यमानता देखिएको भनी आदेश भएको देखिन्छ। वेरितको आदेश बदर गरिपाउँ भनी निवेदक प्रतिवादीको उच्च अदालत पाटनमा निवेदन परी मिति २०८१।०६।१० मा प्रतिवादी जितेन्द्र श्रेष्ठले मौकामा अनुसन्धान अधिकारीसमक्ष बयान गर्दा आफू महाबौद्ध बचत तथा ऋण सहकारी संस्थाको सहसचिव पदमा मिति २०७७।०९।१६ मा निर्वाचित भएको लगायत उक्त सहकारी संस्थाको बचत रकम, बचतकर्ताको संख्या एवम् बचत फिर्तासम्बन्धी विवरण

समेत उल्लेख गरी बयान गरेको, मौकामा कागज गर्ने गणपतिलाल श्रेष्ठ, रस्मी सिखाकार, रब्बु स्थापित समेतका व्यक्तिहरूले गरेको घटना विवरण कागजबाट यी प्रतिवादी समेत सहकारी संस्थाको कारोवारमा संलग्न रहेको भन्ने देखिएको समेतका तत्काल प्राप्त प्रमाण एवम् प्रस्तुत मुद्दामा प्रतिवादीको कसुरमा रहेको संलग्नता, कसुरको मात्रा समेतका आधारमा प्रतिवादी जितेन्द्र श्रेष्ठलाई थुनामा राखी मुद्दाको पुर्पक्ष गर्ने भनी त्यहाँ अदालतवाट मिति २०८१।०५।०६ मा भएको आदेश बेरीतको नदखिँदा परिवर्तन गरिरहनु परेन भनी आदेश भई सोही आदेश अनुरूप निवेदक पुर्पक्षका लागि थुनामा रहेको देखिने।

प्रस्तुत निवेदनमा यी निवेदकउपर सहकारी ठगीमा जाहेरवालाहरूको रू.२५,८७,६८,९३१.३।- (पच्चीस करोड सतासी लाख अठसट्ठी हजार नौ सय एकतीस रूपैयाँ तीन पैसा) रकम हिनामिना गरेको भनी निजउपर किटानी जाहेरी परी कानूनबमोजिम अख्तियारप्राप्त अधिकारीबाट रीतपूर्वक अनुसन्धान भई सो अनुसन्धानका आधारमा अभियोजन गरी साधिकार जिल्ला अदालतबाट नियमित प्रक्रियाबमोजिम भएको थुनछेक आदेश उच्च अदालत पाटनबाट समेत सदर भई सो आदेशानुसार यी निवेदकलाई पुर्पक्षका लागि थुनामा राखेको अवस्था देखिने।

निज निवेदकले आफूलाई काठमाडौं जिल्ला अदालतबाट कसुर गरेको देखिने कुनै तथ्ययुक्त प्रमाणलाई आधार नलिई केवल गोश्वारा विषयलाई आधार बनाइ थुनामा पठाएको र प्रस्तुत सहकारी ठगी मुद्दामा प्रतिवादी बनाइएका अन्य प्रतिवादीहरू मेनकादेवी तुलाधर, मञ्जु बज्राचार्य लगायतबाट धरौट लिई तारेखमा रहेको हुँदा आफूलाई भने असमान आदेश गरेको भनी जिकिर लिएको देखिन्छ । यी निवेदक उक्त सहकारी संस्थाको सहसचिव पदमा रहेको, आफ्नो नाम उक्त सहकारीको सहसचिव पदबाट हटाउनको लागी निवेदन समेत दिएको देखिन आउँछ। निजको उक्त सहकारीमा सहसचिवको भूमिका देखिए तापनि सहकारीको रकम हिनामिना गर्ने सन्दर्भमा यकिन संलग्नता देखिने गरी निजलाई थुनामा राखी मुद्दाको पुर्पक्ष गर्ने आदेशमा उल्लेख भएको देखिँदैन । निज निवेदकका दाई भाइराजा श्रेष्ठले उक्त सहकारीमा जग्गा धितो राखी उक्त सहकारीबाट रू.९० लाख ऋण लिएको र सो ऋण लिँदाका बखतमा यी निवेदक जमानत बसेको भन्ने आधारमा निजलाई थुनामा राख्ने आदेशमा कारण उल्लेख भएको देखिन्छ । धरौटमा छाडिएका अन्य प्रतिवादीहरू र यी निवेदक प्रतिवादीको तत्काल प्राप्त प्रमाणहरूमा रहेको अन्तर पनि थुनछेक आदेशबाट स्पष्ट हुन नसकेको अवस्था रहेको समेत देखिन्छ । तसर्थः प्रस्तुत मुद्दा नियमित अदालतमा विचाराधीन रही निरन्तर थप प्रमाण बुझ्ने समेतको कार्य भइरहेको देखिएको परिप्रेक्ष्य तथा प्रत्यर्थी अदालतले निज निवेदकका सम्बन्धमा पर्याप्त आधार प्रमाण नखोली थुनछेक आदेश भएको देखिन आएको र यस अदालतबाट माथि उधृत ०८१-WH-००२८ तथा ०७२-WH-००५१ मा भएका व्याख्या समेतका सन्दर्भबाट निवेदकलाई मुद्दा पुर्पक्षको क्रममा थुनामा राख्ने गरी मिति २०८१।०७।०७ मा काठमाडौं जिल्ला अदालतबाट भएको आदेश र सो आदेशलाई सदर गर्ने गरी उच्च अदालत पाटनबाट मिति २०८१।०६।१० मा भएका आदेशहरू उत्प्रेषणको आदेशद्वारा बदर गरिएको छ । अब निवेदकका हकमा भएको थुनछेकको आदेशमा पुनर्विचार गरी थुना मै राखी मुद्दाको पुर्पक्ष गर्नुपर्ने भए पर्याप्त आधार र कारण खोली पुनः थुनछेकको आदेश गर्नु भनी काठमाडौं जिल्ला अदालतको नाममा परमादेशको आदेश जारी हुने ठहर्छ। निजउपर मुद्दा विचाराधीन रहेको र प्रचलित कानूनबमोजिम पुन: थुनछेक आदेश हुने नै देखिएकोले बन्दीप्रत्यक्षीकरणको निवेदन माग सम्बन्धमा केही गर्न

नमिल्ने ।

इजलास अधिकृत:- सीता अधिकारी

कम्प्युटर अपरेटर:- संदिप अवाल

इति संवत् २०८१ साल माघ ८ गते रोज ३ शुभम् ।

३८

**मा.न्या.डा.श्री कुमार चुडाल र मा.न्या.श्री महेश शर्मा पौडेल,** *०७३-WO-००८२, उत्प्रेषणयुक्त परमादेश समेत, सोनाम लामा समेत वि. श्री जिल्ला वन कार्यालय सोलुखुम्बु, सल्लेरी समेत*

जग्गा प्राप्ति ऐन, २०३४ को दफा ३ मा नेपाल सरकारले कुनै सार्वजनिक कामको निमित्त जग्गा प्राप्त गर्न आवश्यक ठहऱ्याएमा यस ऐन बमोजिमको मुआब्जा दिने गरी नेपाल सरकारले जुनसुकै ठाउँको जतिसुकै जग्गा प्राप्त गर्न सक्नेछ भन्ने कानूनी व्यवस्था रहेको छ । सोही ऐनको दफा १२ मा अधिग्रहण गर्ने निर्णय गरी सूचना प्रकाशन भएपश्चात उजुरी परेकोमा उजुरी टुङ्गो लागेपछि र उजुरी नपरेकोमा उजुर गर्ने म्याद नाघेपछि जुनसुकै बखत स्थानीय अधिकारीले सम्बन्धित जग्गालाई कब्जामा लिई जुन कार्यालय वा संस्थाको निमित्त जग्गा प्राप्त गरिएको हो, सो कार्यालय वा संस्थालाई दिन सक्ने छ र तत्पश्चात सो जग्गालाई सम्बन्धित कामको निमित्त उपयोगमा ल्याउन सकिनेछ भन्ने व्यवस्था रहेको देखिन्छ । पर्वतीय पर्यटनको विकास, विस्तार र प्रवर्द्धन तथा जनशक्ति उत्पादन गर्न तालिम, प्रशिक्षण तथा शैक्षिक कार्यक्रम समेतको सञ्चालन गर्ने उद्देश्यले विकास समिति ऐन, २०१३ बमोजिम मिति २०५९।०२।१६ मा नेपाल राजपत्रमा सूचना प्रकाशित गरी गठन आदेश जारी गरिएको र नेपाल सरकारद्वारा "यस नेपाल पर्वतीय प्रशिक्षण प्रतिष्ठान (नेपाल माउण्टेन एकेडेमी) को गठन भएको देखिन्छ । पर्वतीय प्रशिक्षण प्रतिष्ठान विकास समिति (गठन) आदेश, २०५९ को दफा ४ ले निर्दिष्ट गरेका लक्ष्यहरूको प्राप्तिका लागि आवश्यक पर्ने भौतिक संरचना निर्माणको लागि गुरूयोजना तयार भई उक्त गुरूयोजनाबमोजिमको निर्माण कार्य सोलुखुम्बु जिल्लाको गार्मा गा.वि.स.को वडा नं.१, ६ र ७ मा बन्दै गरेको र प्रतिष्ठान गठन भएपछि प्रतिष्ठानलाई आवश्यक पर्ने जग्गा प्राप्तिको लागि जग्गा प्राप्ति ऐन, २०३४ को दफा ५ बमोजिमको प्रारम्भिक कारबाही चलाउन पाउने अधिकारीमा प्रतिष्ठानका तत्कालीन कार्यकारी निर्देशक उमेश कुमार सिंहलाई तत्कालीन श्री ५ को सरकार संस्कृति पर्यटन तथा नागरिक उड्डयन मन्त्रालयको मिति २०५९।०३।३२ को निर्णयानुसार मिति २०५९।०४।०३ को पत्रद्वारा तोकेको देखिन आयो । निज प्रारम्भिक कारबाही चलाउने अधिकारीबाट मिति २०५९।०५।०४ मा सोलुखुम्बु जिल्ला गार्मा गा.वि.स. वडा नं. १, ६ र ७ समेतमा पर्ने विभिन्न कित्ता गरी जम्मा २७७० रोपनी जग्गा प्राप्तिको लागि संस्कृति, पर्यटन तथा नागरिक उड्डयन मन्त्रालयसमक्ष पत्र प्रेषित गरी तत्कालीन श्री ५ को सरकारबाट मिति २०५९।०५।०६ मा जग्गा प्राप्ति गर्ने निर्णय भए अनुरूप जग्गा प्राप्ति ऐन, २०३४ को दफा ९ बमोजिम जिल्ला प्रशासन कार्यालय सोलुखुम्बुबाट मिति २०५९।०५।१६ मा सोही ऐनको उपदफा (२) बमोजिम सूचना टाँस भई मिति २०५९।०५।२० को गोरखापत्र दैनिकमा समेत प्रकाशित भएको देखिने ।

विपक्षीमध्ये निवेदक सोनाम लामाले निजको नाउँमा अद्यावधिक दर्ता रहेको भनी जिल्ला सोलुखुम्बुको गार्मा गा.वि.स. वडा नं.७ को कि.नं. ४२९ को क्षेत्रफल १०, १३५ वर्गमीटर, ऐ.कि.नं. ४३० को क्षेत्रफल ३,३१० वर्गमीटर, ऐ.कि.नं. ४३५ को क्षेत्रफल १२,४५० वर्गमीटर, ऐ.कि.नं. ४३६ को क्षेत्रफल ६,३३५ वर्गमीटर समेतको उल्लिखित चारै कित्ता जग्गाहरू प्रतिष्ठानको लागि कानूनबमोजिम प्राप्त भइसकेको देखिन्छ । त्यस्तै निवेदक कामी लामाले दाबी लिएको ऐ.ऐ. कि.नं. १९९ को क्षेत्रफल ४९५, ऐ.ऐ. कि.नं.३८९ को क्षेत्रफल ३१५, ऐ. कि.नं. ३९० को क्षेत्रफल ३८३५, ऐ.ऐ. कि.नं. ४०३ को क्षेत्रफल

२८८० समेतको चार कित्ता जग्गा अधिग्रहणभित्र नपरेको र ऐ.ऐ. कि.नं. ४३१ को क्षेत्रफल ४११० को एक कित्ता जग्गा मात्र अधिग्रहणभित्र परी जग्गा प्राप्ति ऐन, २०३४ बमोजिम प्राप्त भई प्रतिष्ठानको भोगाधिकारमा आइसकेको देखिँदा र कि.नं. १९९, ३८९, ३९० र ४०३ को जग्गाको हकमा प्रतिष्ठानकोतर्फबाट दाबी, भोगचलन र रोक्का समेत नरहेको र उक्त चार कित्ता जग्गा गुरूयोजना भित्र समेत नपरेको हुँदा निवेदकले कानूनबमोजिम सो जग्गा भोगचलन गर्नमा प्रतिष्ठानकोतर्फबाट कुनै बाधा अवरोध गरिएको अवस्था समेत नदेखिने

निवेदकहरूका नाउँमा दर्ता रहेका हालसम्म कहीँ कतैबाट रोक्का समेत नरहेको, दाबीका जग्गाहरू अधिग्रहण भई मुआब्जा लिन पटक पटक सूचना जारी गरेको, जग्गा अधिग्रहण गर्दा रूख पनि कानूनको परिभाषाभित्र पर्ने भएको, निवेदकहरूले प्रचलित कानूनबमोजिम मुआब्जा प्राप्त गर्नसक्ने अवस्था देखिँदा प्रत्यर्थीहरूको कामकारबाहीबाट निवेदकको हक गएको भन्न सकिने अवस्था नभएकोले रिट निवेदनको मागबमोजिमको कुनै आदेश जारी गर्नुपर्ने अवस्था नभएकोले प्रस्तुत रिट निवेदन खारेज हुने ।

इजलास अधिकृत:- सीता अधिकारी

कम्प्युटर:- संदिप अवाल/जगदिश दर्जी

संवत् २०८१ साल कार्तिक २१ गते रोज ४ शुभम्।

३९

**मा.न्या.डा.श्री कुमार चुडाल र मा.न्या.श्री महेश शर्मा पौडेल,** *०७७-WO-०८२२, उत्प्रेषणयुक्त परमादेश समेत, जगतमोहन गौचन वि. काठमाडौं जिल्ला, काठमाडौं महानगरपालिका वडा नं. ११ बबरमहल स्थित प्रभु बैंक लि. समेत*

विपक्षी बैंकले निवेदकले लिएको कर्जा चुक्ता गर्ने बारे भनी मिति २०७१।०२।०६ मा निवेदकको नाममा लेखेको पत्रमा तहाँले बैकबाट उपभोग गर्नुभएको व्यक्तिगत धनजमानी कर्जा रकमको ब्याज तथा विलम्ब दस्तुर समयमा चुक्ता नगर्नुभएको हुँदा यस पत्रको मितिले १५ दिनभित्र बैंकमा सम्पर्क गरी कर्जाको साँवा, ब्याज र विलम्ब दस्तुर समेत चुक्ता भुक्तानी गर्न हुन भनी ताकेता गरेको देखिन्छ । त्यस्तै मिति २०७२।०२।२७ मा सम्पूर्ण कर्जा चुक्ता फछर्यौट गर्ने बारेको ७ दिने अत्यन्त जरूरी सूचना भन्दै पत्राचार गरेको समेत देखियो । यसरी निवेदकले विपक्षी बैंकबाट उपभोग गर्नुभएको ऋण कर्जाबापत प्रचलित कानून एवम् कर्जा लिँदाका बखत बैंकलाई गरिदिएको सर्त कबुलियतबमोजिम कर्जाको साँवा ब्याज नतिरी नबुझाई कर्जा खिलाफी गरेको र कर्जाको साँवा, ब्याज, किस्ता तिरी कर्जा नियमित गर्न तथा कर्जा चुक्ता फर-फारक गर्नका लागि भनी मिति २०७१।०२।०६, मिति २०७२।०२।२७, मिति २०७२।१२।१४, मिति २०७३।०४।०७ मा लिखित रूपबाट पत्राचार समेत गरिएको मिसिल संलग्न कागज पत्रबाट देखिन्छ । विपक्षी बैंकबाट निवेदकलाई कर्जा चुक्ता गर्ने बारे भनी लेखिएको मिति २०७१।०२।०६ को पत्र निवेदकको एकाघरकी श्रीमती सुशिला गौचनले मिति २०७१।०२।०७ मा बुझिलिएको भन्ने मिसिल संलग्न भरपाईबाट समेत देखिन्छ । यसरी निवेदकलाई कर्जा चुक्ता गर्न आउन बारे भनी बारम्बार ताकेता गर्दा समेत बैंकको कर्जा नतिरी वेवास्ता गरी कर्जा नियमित तथा फर-फारक नगरेको कारण मिति २०७३।०८।०२ को कमाण्डर पोष्ट दैनिक पत्रिका, मिति २०७३।१०।०४ को मध्यान्ह राष्ट्रिय दैनिक र मिति २०७३।११।०२ को आर्थिक राष्ट्रिय दैनिकमा ऋण कर्जा चुक्ता गर्नेसम्बन्धी सार्वजनिक सूचनाहरू प्रकाशित गरी तत् तत् मितिमा नै लिखित रूपबाट जानकारी समेत गराइएको देखिने ।

निवेदकले बैंकलाई तिर्नु बुझाउनुपर्ने रकम तिरी बुझाई कर्जा नियमित तथा चुक्ता फर-फारक नगरेको कारण विपक्षी बैंकले आफ्नो कर्जा असुलीका लागि बैंक तथा वित्तीय संस्थाको ऋण असुली ऐन,

२०५८ को दफा १४, १५ समेत बमोजिम क्षेत्राधिकार भएको प्रत्यर्थीमध्येको ऋण असुली न्यायाधिकरणमा कानूनबमोजिम उजुरी गरेको देखिन्छ। बैंकको उजुरी परे पछि उक्त न्यायाधिकरणले बैंक तथा वित्तीय संस्थाको ऋण असुली ऐन, २०५८ तथा नियमावली, २०५९ लगायतका प्रचलित कानूनबमोजिम उजुरीमा कारबाही गरी निर्णय गरेको देखिन्छ । उजुरीको कारबाहीको सन्दर्भमा उक्त न्यायाधिकरणबाट निवेदकको नाममा जारी भएको प्रतिउत्तर फिराउने म्याद बैंक तथा वित्तीय संस्थाको ऋण असुली नियमावली, २०५९ को नियम ८ बमोजिम तामेल भएको देखिन्छ। निवेदकले आफू मुद्दा नं. १०१।०७४।१०४, १०१।०७४।१०६ लगायतका मुद्दाहरूमा सोही न्यायाधिकरणमा तारेखमा रहेको, मुद्दा नं. १०१।०६९।२९० को मुद्दामा मिति २०७१।०३।१८ मा प्रतिउत्तरपत्रसहित हाजिर भई मिति २०७७।०९।१३ मा निर्णय हुँदासम्म तारेखमा रहेकोमा फाँटले जानकारी नगराएको भनी निवेदकको जिकिर रहेको भए तापनी वित्तीय संस्थाको ऋण असुली नियमावली, २०५९ को नियम ८(५) मा उल्लिखित व्यवस्थाबमोजिम सूचना प्रकाशित भई निवेदकको नामको म्याद तामेल भएको देखिन्छ । ऋण असुली न्यायाधिकरणबाट निवेदकको नाममा जारी म्याद बेपत्ते तामेल भएको कारण राष्ट्रिय दैनिक पत्रिकामा पुनः सूचना प्रकाशित गरी म्याद तामेल गरेकोमा निवेदकले कानूनको म्यादभित्र प्रतिउत्तर नफिराई म्याद गुजारी बसेको कारण न्यायाधिकरणबाट कानूनबमोजिम निर्णय भएको देखिने।

निवेदकको मागबमोजिमको आदेश जारी हुने नहुने अन्तिम प्रश्नको सन्दर्भमा विचार गर्दा, निवेदकले विपक्षी बैंकसँग कर्जा लिएकोमा विवाद नदेखिएको, कर्जाको साँवा, ब्याज, किस्ता तिरी कर्जा नियमित गर्न तथा कर्जा चुक्ता फर-फारक गर्नका लागि भनी पटक पटक मौखिक रूपबाट र मिति २०७१।०२।०६, मिति २०७२।०२।२७, मिति २०७२।१२।१४, मिति २०७३।०४।०७ मा लिखित रूपबाट पत्राचार गर्दा समेत निवेदकले कर्जा चुक्ता गर्नको लागि कुनै अग्रसरता नदेखाएको, विपक्षी बैंकबाट निवेदकलाई कर्जा चुक्ता गर्ने बारे भनी लेखिएको मिति २०७१।०२।०६ को पत्र निवेदकको एकाघरकी श्रीमती सुशिला गौचनले मिति २०७१।०२।०७ बुझिलिएको, निवेदकलाई कर्जा चुक्ता गर्न आउन बारे भनी बारम्बार ताकेता गर्दा समेत बैंकको कर्जा नतिरी बेवास्ता गरी कर्जा नियमित तथा फर-फारक नगरेको कारण मिति २०७३।०८।०२ को कमाण्डर पोष्ट दैनिक पत्रिका, मिति २०७३।१०।०४ को मध्यान्ह राष्ट्रिय दैनिक र मिति २०७३।११।०२ को आर्थिक राष्ट्रिय दैनिकमा ऋण कर्जा चुक्ता गर्नेसम्बन्धी सार्वजनिक सूचनाहरू प्रकाशित गर्दा समेत निवेदकले बैंकको कर्जा तिर्नेतर्फ कुनै तत्परता नदेखाएबाट विपक्षी बैंकले विपक्षी ऋण असुली न्यायाधिकरणमा उजुरी निवेदन दर्ता गरेको देखिन्छ । ऋण असुली न्यायाधिकरणको मिति २०७४।१२।०४ मा तामेल हुँदाको म्याद बेपत्ते तामेल भएको मिति २०७५।०५।२१ मा बदर भई मिति २०७५।०५।०४ मा गोरखापत्र दैनिकमा निजको ठेगाना उल्लेख गरी सार्वजनिक सूचना समेत प्रकाशन भएको देखिन्छ। ऋण असुली न्यायाधिकरणबाट मिति २०७४।१२।०४ मा जारी भएको म्याद काठमाडौं जिल्ला, काठमाडौं महानगरपालिका-११ बस्ने भएकोमा बेपत्ते देखिन्छ भने सोही काठमाडौं जिल्ला, काठमाडौं महानगरपालिका-११ मा जारी भएको मिति २०७७।११।०९ को म्याद निज स्वयंले बुझिलिएको देखिने।

प्रस्तुत रिट निवेदनबाट निवेदकको मागबमोजिमको कुनै आदेश जारी गर्नुपर्ने अवस्था नभएकोले प्रस्तुत रिट निवेदन खारेज हुने ।

इजलास अधिकृत:- सीता अधिकारी

कम्प्युटर :- संदिप अवाल/जगदिश दर्जी

इति संवत् २०८१ साल कार्तिक २६ गते रोज २ शुभम्।

**४०**

**मा.न्या.डा.श्री कुमार चुडाल र मा.न्या.श्री महेश शर्मा पौडेल,** *०७५-CR-२६०१, ०७५-CR-२६०४, ०७५-CR-२६०७, लागु औषध (अफिम), सकुन्तला बुढामगर वि. नेपाल सरकार, विषमाया बुढा वि. नेपाल सरकार, कामना पुन मगर वि. नेपाल सरकार*

आवश्यक कारबाहीको लागि बरामद लागूऔषधसहित मानिस पक्राउ गरी दाखिला गर्ने प्रतिवेदक प्र.स.नि. लक्ष्मण सेन वलीले अदालतमा उपस्थित भई म समेतको प्रहरी कर्मचारी नेपाल भारत सिमानाका बेलदिया रूपन्देहीमा ड्युटीमा रहेको अवस्थामा नेपालबाट भारततर्फ प्रवेश गर्न थालेका गाउँले परिवेशका ३ जना युवती सकुन्तला बुढामगर, विषमाया बुढा र कामना पुन मगरलाई शंका लागि निजको शरीर खानतलासी गर्दा प्रत्येकको शरीरबाट लागूऔषध चरेस जस्तो देखिने पदार्थ ५ किलो ३६० ग्राम बरामद भएको हो भनी बकपत्र समेत गरि दिएको अवस्था देखिन आउँछ ।केन्द्रिय प्रहरी विधि विज्ञान प्रयोगशालाको सुरू मिसिल संलग्न मिति २०७४।३।२७ को पत्र साथ पठाएको मिति २०७४।३।२३ गतेको जाँच प्रतिवेदनमा बरामदित वस्तुमा अफिम पाइएको भन्ने उल्लेख भई आएको तथा यस अदालतको मिति २०८०।१०।१८ गतेको आदेशानुसार यस अदालतमा उपस्थित भई उक्त कालो पदार्थ जाँच गर्ने विशेषज्ञ प्र.उ. योग बहादुर पालले जिल्ला प्रहरी कार्यालय रूपन्देहीको च.नं. ५४४८ मिति २०७४।३।३ को पत्र साथ प्राप्त भएको नमुना खाममा ४ ओटा शिल रहेको, ३ ओटा कार्यालयको छाप रहेको र ९ स्थानहरूमा दस्तखत रहेको खाम खोली हेर्दा blackish resinous Substances रहेको जुन blue Poythene bag लाई brown colour को कार्टुन टप फेरी राखिएको अवस्थामा थियो । परिक्षणार्थ नमुनालाई Colour test र Thin layer chromatography technique (TLC) विधि र UNODC बाट प्राप्त Control Samples लाई आधार मानी परिक्षण गरिएको हो । परिक्षण गर्दा लागूऔषध अफिम पाइएको हो भन्ने समेत बेहोरा उल्लेख गरी बकपत्र गरी दिएको देखियो । यसबाट बरामदित कालो गिलो पदार्थ अफिम होइन भन्न सक्ने अवस्था देखिँदैन । अनुसन्धानको शिलशिलामा तयार पारिएको कागजातबाट यी प्रतिवादी पुनरावेदकहरूका शरीरबाट चरेस जस्तो देखिने कालो गिलो पदार्थ वस्तुत अफिम बरामद भएकोमा विवाद देखिँदैन ।लागु औषध स्वयमा Possessory Crime भएकोले विवादको लागु औषध प्रतिवादीहरूबाट नै बरामद भएकोले सो सम्बन्धमा अन्यथा जिकिर प्रमाणित गर्ने भार निजै प्रतिवादीहरूउपर रहन जाने हुन्छ । उक्त लागु औषध चरेश भनी बोकेकोमा अफिम रहेछ भनी तथ्यको भूल (Mistake of Fact) को जिकिर पुनरावेदकको रहेको छ । लागु औषधको बरामद अवस्था हेर्दा दुवै खुट्टाको तिघ्रामा Knee-cap लगाई साप्रो तथा छातीमा समेत लुकाई आफूले नियमति प्रयोग नगर्ने मोबाईल समेत बोकी पूर्व तयारी र योजनका साथ उक्त लागु औषधको कारोबार गरेको स्थापित अवस्थामा रहेको पाइन्छ।उक्त बरामद बस्तुको परीक्षण प्रतिवेदन मिसिल सलग्न रहेको तथा उक्त परीक्षण गर्ने विशेषज्ञले यस अदालतमा उपस्थित भई बकपत्र गर्दा अफिम पाइएको हो भनी बकपत्र समेत गरिदिएको देखिने ।

पुनरावदेक प्रतिवादीहरूले नियतपूर्वक लागु औषध योजनाबद्धरूपमा शरीरमा लुकाई राखी भारतको सुनौलीतर्फ लैजाने क्रममा प्रहरीले चेकजाँच गर्ने क्रममा पक्राउ भई लागुऔषध बरामद भएको, सो बरामद तथ्यलाई यी प्रतिवादीहरूले अदालतमा बयान गर्दा भएको चरेश भनी स्वीकार गरेको, बरामदीत गिलो कालो पदार्थ अफिम भएको अवस्था परीक्षण प्रतिवेदनबाट पुष्टी भएको, तथा निज प्रतिवादीहरूका

कसुर शंकारहित तवरबाट पुष्टि भएको समेतको स्थितिमा यी प्रतिवादीहरूलाई अभियोग माग बमोजिम कसुर ठहर गरी लागूऔषध (नियन्त्रण) ऐन, २०३३ को दफा १४ (१) (छ) (३) बमोजिम जनही १५ वर्ष कैद तथा रू.५,००,०००।- (पाँच लाख मात्र) जरिवाना तथा बरामदमध्ये कलर्सको मोबाइल थान-१ र भारू.४,५००।- सोही ऐनको दफा १८(क) बमोजिम जफत हुने ठहराई भएको सुरू फैसलालाई सदर गर्ने गरी उच्च अदालत तुलसीपुर, बुटवल इजलासबाट मिति २०७५।१०।०८ मा भएको फैसला मिलेको देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत : राम चन्द्र मंडल (खत्वे)

कम्प्युटर : शंकर सापकोटा

इति संवत् २०८१ साल भदौ १६ गते रोज १ शुभम् ।

४१

**मा.न्या.डा.श्री कुमार चुडाल र मा.न्या.श्री महेश शर्मा पौडेल,** *०७९-CI-०४६२, सम्पत्ति फिर्ता, सरस्वतीदेवी वाग्ले वि. चन्द्रकला वाग्ले*

वादी प्रतिवादी एकै परिवारको सासू/हजुरआमा, बुहारी र नाति नाताको व्यक्ति रहेको, प्रत्यर्थी वादी चन्द्रकला वाग्लेको उमेर अवस्था पनि वृद्ध रहेकोमा वादीको आफ्नो नामको अंश हिस्सामा परेको सम्पत्ति कुनै मूल्य नतिरी हालैदेखिको बकसपत्रमार्फत हक हस्तानतरण गरिसकेपछि सम्पत्ति लिने व्यक्तिले आफ्नो सासू/हजुरआमालाई गर्नुपर्ने दायित्वबाट उन्मुक्ति पाउन सक्दैन । आफ्नो सासू/हजुरआमाबाट सम्पत्ति नलिएको खण्डमा समेत आफ्नो आर्थिक हैसियत अनुरूप पालनपोषण, स्वास्थ्य, सुरक्षा, हेरचाह गर्नुपर्ने कानूनी व्यवस्था भएको परिप्रेक्ष्यमा सम्पत्ति लिइसकेपछि यस्तो दायित्व अझै आत्मबोध हुनुपर्ने कानूनले समेत खम्बिर गरेको अवस्था देखिन्छ। वादीले यसरी आफूले हस्तान्तरण गरेको सम्पत्ति आफैं फिर्ता माग्ने अवस्था सृजना हुनु आफैंमा मनन योग्य विषय रहेको देखिन्छ भने वादी प्रतिवादीहरूबाट पालनपोषण, स्वास्थ्य, सुरक्षा, हेरचाहको अपेक्षा राख्नु वैद्य अपेक्षा (Legitimate Expectation) नै देखिने ।

ज्येष्ठ नागरिकसम्बन्धी ऐन, २०६३ को दफा ४ मा ज्येष्ठ नागरिकलाई आफ्नो आर्थिक हैसियत तथा इज्जत आमद अनुसार पालनपोषण तथा हेरचाह गर्नु परिवारको प्रत्येक सदस्यको कर्तव्य हुनेछ भनी गरेको कानूनी व्यवस्थाबाट पनि प्रतिवादीहरूले यी वादीलाई आफ्नो आर्थिक हैसियत अनुरूप पालनपोषण, स्वास्थ्य, सुरक्षा, हेरचाह गर्नुपर्ने कानूनी दायित्व समेत रहेबाट र प्रतिवादीहरूले सोही उद्देश्यबमोजिम वादी चन्द्रकला वाग्लेबाट हालैदेखिको बकसपत्रबाट जग्गा समेत प्राप्त गरेको स्थितिमा यी प्रतिवादीहरू आफ्नो दायित्वबाट पन्छिन मिल्दैन । यसर्थ प्रतिवादीहरूबाट निज वादी चन्द्रकला वाग्लेलाई मिति २०७५।१०।२३ देखि फैसला भएको आजको मिति २०८१।०७।०७ सम्मको प्रति महिना रू.२५,०००।- (पच्चीस हजार) को दरले र औषधी उपचारबापत एकमुस्ट रू.५,००,०००।- (पाँच लाख मात्र) दिलाई दिन ज्येष्ठ नागरिकसम्बन्धी ऐन, २०६३ को दफा ४ को मक्सद, वादी प्रतिवादीको पारिवारिक अवस्था, समन्यायको (Equity Justice) दृष्टिकोण समेतबाट उचित देखिने।

उच्च अदालत पाटन, हेटौंडा इजलासबाट मिति २०७८।०६।१३ मा भएको फैसला मिलेको नदेखिँदा सो फैसला केही उल्टी भई प्रतिवादीहरूले वादीलाई पालनपोषण खर्चबापत मिति २०७५।१०।२३ देखि फैसला भएको आजको मितिसम्म ५ वर्ष ८ महिना १४ दिनको मासिक रू.२५,०००।- (पच्चीस हजार रूपैयाँ) का दरले हुन आउने रकम रू.१७,११,६६६।६६ (सत्र लाख एघार हजार छ सय छैसठ्ठी रूपैयाँ छैसठ्ठी पैसा) तथा औषधी उपचार खर्चबापत रू.५,००,०००।- (पाँच लाख रूपैयाँ) समेत गरी जम्मा रू.२२,११,६६६।६६

(बाइस लाख एघार हजार छ सय छैसठ्ठी रूपैयाँ छैसठ्ठी पैसा) ६(छ) महिनाभित्र एकमुस्ट बुझाएमा मात्र वादी चन्द्रकला वाग्लेले प्रतिवादी सरस्वतीदेवी वाग्ले र युसत वाग्लेलाई मिति २०६३।०१।२८ मा र.नं. २४२ 'ग' बाट गरिदिएको बकसपत्र यथावत कायम रहने भएकोले बदरको दाबी पुग्न नसक्ने गरी सो लिखत ससर्त सदर कायम रहने ।

इजलास अधिकृत : रोशनी खड्का/राम चन्द्र मंडल (खत्वे)

कम्प्युटर : संदिप अवाल

इति संवत् २०८१ साल कात्तिक ७ गते रोज ४ शुभम्।

४२

**मा.न्या.श्री डा. कुमार चुडाल र मा.न्या.श्री टेकप्रसाद ढुङ्गाना,** *०७५-WO-०६९१, उत्प्रेषण परमादेश समेत, शान्ता आचार्य वि. श्री चितवन जिल्ला अदालत, भरतपुर चितवन समेत*

निवेदिकाको छोरा चन्चल देवकोटाले विपक्षी नवराज श्रेष्ठलाई जग्गा किन्न भनी दिएको सापटी रकमबापत मिति २०७३।०८।१७ मा नेपाल बंगलादेश बैंक लिमिटेड को रू.३०,००,०००।- (तीस लाख रूपैयाँ) को चेक काटिदिएको समयमा निवेदिका शान्ता आचार्य र निजको जेठा छोरा चन्चल देवकोटा एकासगोलमा नै रहे भएको देखिन आयो। विपक्षी चन्चल देवकोटाले विपक्षी नवराज श्रेष्ठलाई काटिदिएको मिति २०७३।०८।१७ को चेकको रकम आफ्नो खाता रहेको गरीमा विकास बैंकमा जम्मा गर्न जाँदा उक्त चेकमा पैसा छैन भनी मिति २०७३।०८।२२ मा नै विपक्षी नवराज श्रेष्ठलाई बैंकले चेक अनादरको विवरण दिएको देखिन्छ। यी निवेदकको छोरा चन्चल देवकोटा एकासगोलमा नै रहेको अवस्थामा चेक काटिएको र सो पछाडि मात्र निज आफ्नो अंश भागको चल सम्पत्ति हातहातै र अचल सम्पत्तिको हकमा रू.२५०००००।- (पच्चीस लाख रूपैयाँ) नगदै बुझी मिति २०७३।९।८ मा अंश भरपाईको लिखत गरेको भनी देखाएबाट पनि विपक्षी नवराज श्रेष्ठबाट विपक्षी चन्चल देवकोटाले ऋण लिँदाका बखत यी निवेदिका निज विपक्षी/प्रत्यर्थी चन्चल देवकोटासँग सगोलमा रहेको देखिने।

निवेदकको माग बमोजिमको आदेश जारी हुनुपर्ने हो वा होइन भन्ने प्रश्नतर्फ विचार गर्दा विपक्षी प्रतिवादी चन्चल देवकोटालाई विपक्षी वादी नवराज श्रेष्ठले जग्गा खरिद गर्न भनी रू.३०,००,०००।- (तीस लाख रूपैयाँ) सापटी दिएको देखिन्छ। निजले आफ्नो रकम विपक्षी प्रतिवादीसँग माग्दा मिति २०७३।०८।१७ मा नेपाल बंगलादेश बैंक लिमिटेडको चेक नं. ०००११९९६१९ को बाट रू.३०,००,०००।- (तीस लाख रूपैयाँ) को चेक काटिदिएको देखिन्छ। विपक्षी वादीले उक्त चेक बमोजिमको रकम गरीमा बिकास बैंक लिमिटेडको खातामा जम्मा गर्न खोज्दा उक्त चेकमा उल्लिखित खाता नं. बन्द भइसकेको कारण चेक सटही हुन नसकी चेक अनादर हुन गएको देखिन्छ। चेकमा उल्लिखित रकम र सोको ब्याज समेत विपक्षीबाट दिलाइ भराइ पाउँ भनी वादी नवराज श्रेष्ठकोतर्फबाट मिति २०७४।०६।०२ मा चितवन जिल्ला अदालतमा फिराद परी प्रस्तुत मुद्दा विचाराधीन रहेको देखिन आयो । प्रतिवादी चन्चल देवकोटाको एकाघरको आमा यी निवेदक शान्ता आचार्य र यी प्रतिवादी समेत सगोलमा रहेको अवस्थामा निजले रकम लिएको एवम् चेक काटेको समेतको स्थितिमा सगोलमा रहेकाले निवेदक शान्ता आचार्यको नाममा दर्ता रहेको चितवन जिल्ला देवौली गा.वि.स.वडा नं.५/ख कि.नं.७०७ को ज.वि.०-०-१६ ऐ. कि.नं.९३८ को ज.वि.०-६-९.५ ऐ. कि.नं. ९४० को ज.वि.०-०-१.५ समेतका ३ कित्ता जग्गाहरू रोक्का राखी पाउँ भनी निवेदक वादी नवराज श्रेष्ठको चितवन जिल्ला अदालतमा निवेदन परी रोक्का राख्ने भनी भएको आदेश उच्च अदालत पाटन, हेटौंडा इजलासबाट समेत सदर भएको देखिन्छ । यसरी

निवेदकको छोराले लिएको ऋण सम्बन्धमा चितवन जिल्ला अदालतमा चेक अनादर मुद्दा दायर भई निवेदकको नाउँमा रहेको कि.नं. ९४०, ९३८, ७०७ देवौली गा.वि.स. वडा नं. ५ख का जग्गाहरू रोक्का राखिएकोमा निवेदकले उक्त जग्गा फुकुवा गरिपाउँ भनी चितवन जिल्ला अदालतमा दिएको निवेदन बमोजिम रोक्का फुकवा नभएको आदेशलाई उच्च अदालत पाटन, हेटौंडा इजलासले समेत सदर गरी सकेको अवस्थामा साधारण अधिकार क्षेत्र प्रवेश गरी तह-तह अदालतले प्रमाण मूल्याङ्कन गरी गरेको आदेशहरू बदर गरिपाउँ भनी निवेदकले प्रस्तुत रिट निवेदन दिएको देखिन्छ । साथै निवेदकको छोराले मिति २०७३।०८।१७ मा रू.३०,००,०००।- (तीस लाख रूपैयाँ) चेक काटी दिएपश्चात मिति २०७३।०९।०८ गते अचल सम्पत्ति हुँदाहुँदै सोबापत नगद रकम बुझेको भनी अंश भरपाई गरेको लिखत पारित गराएको कार्य स्वच्छ र पवित्र हो होइन भन्ने प्रश्न समेत सन्निहित रहेको अवस्थामा सगोलमा भएको ऋण सगोलको सम्पतिबाट भराउनलाई नमिल्ने भन्न नमिल्ने।

साधारण अधिकारक्षेत्रअन्तर्गतको आदेश अन्तिम भएपश्चात यी निवेदक पुनः रिट क्षेत्राधिकार ग्रहण गरी अदालत प्रवेश गरेको, साधारण क्षेत्राधिकारअन्तर्गत चलिरहेको मुद्दामा साधारण क्षेत्राधिकारबाटै सक्षम निकायले निर्णय निरूपण गर्नुपर्ने अवस्था विद्यमान रहेको, सगोलमा रहँदा जग्गा खरिद गर्न भनी लिएको ऋण सगोलका व्यक्तिको दायित्व रहने एवम् सो जग्गा के कस्तो प्रकृतिको हो, सगोलबाट असूल हुनुपर्ने हो वा होइन भन्ने सवालको निरूपण प्रमाणको मूल्याङ्कनबाट हुने अवस्था कायम नै रही रहेको स्थितिमा असाधारण अधिकार मार्फत तल्लो अदालत वा निकायमा विचाराधीन मुद्दाका सम्बन्धमा यस अदालतबाट असाधारण क्षेत्र ग्रहण गरी न्याय निष्पादन गर्न मिल्ने नदेखिँदा विपक्षी कार्यालयहरूको नाममा निवेदकको माग बमोजिमको आदेश जारी गर्न मिल्ने देखिएन। प्रस्तुत रिट निवेदन खारेज हुने ।

इजलास अधिकृत:- सीता अधिकारी

कम्प्युटरर : संदिप अवाल/जगदिश दर्जी

इति संवत् २०८१ साल असार १८ गते रोज ३ शुभम्।

साथै यसै लगाउको निम्न मुद्दाहरूमा पनि यसैनुसार फैसला भएका छन्।

- ०७५-WO-०६९२, उत्प्रेषण परमादेश समेत, शान्ता आचार्य वि. श्री चितवन जिल्ला अदालत, भरतपुर चितवन समेत
- ०७५-WO-०५३२, उत्प्रेषण परमादेश समेत, शान्ता आचार्य वि. श्री चितवन जिल्ला अदालत, भरतपुर चितवन समेत

४३

**मा.न्या.डा.श्री कुमार चुडाल र मा.न्या.श्री टेकप्रसाद ढुङ्गाना,** *०७५-WO-१३१३, उत्प्रेषणयुक्त परमादेश, दिगम्बर माझीसमेत वि. गृह मन्त्रालय सिंहदरबार, काठमाडौंसमेत*

निवेदकहरूको जिकिर सि.नं.४१ र सि.नं.४२ मा पर्ने जग्गाबिचमा निर्धारित मुआब्जाको अनुपात न्यायोचित नरहेको भन्ने देखिन्छ । सो सम्बन्धमा हेर्दा, निज निबेदकहरूले आफ्नो जग्गा सि.नं.४१ मा पर्ने जग्गालाई सि.नं.४२ मा राखियो भनी दाबी लिएको अवस्था छैन् । निजहरूले आफ्नो जग्गा सि.नं.४२ मा पर्ने अवस्थालाई स्वीकार गरेको देखिन्छ। यसका अतिरिक्त मुआब्जा निर्धाण समितिद्वारा प्रकाशित सूचनाबाट नै सि.नं.४१ र ४२ मा पर्ने जग्गाहरूको राजमार्गको मापदण्ड सिमाना दुरीमा अन्तर रहेको स्पष्ट देखिन आउँछ। यसका साथै मुआब्जा निर्धारण गर्दा जग्गाको आ.ब.०६८।०६९ को न्युनतम मुल्याङ्कन पुस्तिका, बैंकले ऋण प्रवाह गर्दा गरेको मुल्याङ्कन, स्थानिय गा.वि.स., वडा कार्यालय, नगरपालिकाबाट प्राप्त विवरण, एकीकृत शहरी वातावरणीय सुधार

परियोजना आयोजना कार्यान्वयन ईकाइका लागि निर्धारण गरेको मुल्याङ्कन, चलनचल्तीको दररेट समेतको समुचित मुल्याङ्कनबाट मुआब्जा निर्धारण गरेको भन्ने नेपाल सरकार गृह मन्त्रालयको सचिवस्तरीय मिति २०७५।०४।०५ को निर्णयबाट देखिएको अवस्था छ । यसका साथै निबेदककै समान सि.नं. ४२अन्तर्गत परेको जग्गाका जग्गा धनीमध्ये अधिकांश जग्गा धनीहरूले तोकिए बमोजिमको मुआब्जा लिईसकेको अबस्था देखिने ।

मुआब्जा सम्बन्धमा निबेदकले गृह मन्त्रालयसमक्ष उजुरी गरेकोमा गृह मन्त्रालयबाट मिति २०७४।०४।२५ मा निर्णय समेत भएको देखिन्छ । निबेदकले प्रचलित कानूनबमोजिम पाउनु पर्ने मुआब्जाको रकम प्रत्यार्थीहरूले प्रदान गर्न तत्पर रहेको र अन्य समान स्थितिका व्यक्तिले मुआब्जा रकम लिई सकेको स्थितिमा वैदेशिक सहयोगमा संचालित आयोजनालाई अबरूद्ध गर्ने प्रकृतिको प्रस्तुत रिट निबेदन औचित्यपूर्ण देखिन आएन । केबल प्रस्तुत निबेदनका निबेदकहरूको मात्र निर्धारित मुआब्जा असमान भएको भन्ने जिकिर रहेको देखिन आउँछ । यसबाट प्रस्तुत निबेदनमा समान प्रकृतिको जग्गा भएका जग्गाधनीहरू बिचमा समानरूपमा नै मुआब्जा निर्धारण भएको देखिन आउँछ । प्रस्तुत निबेदनमा निबेदकले आसमान जग्गा विचमा समान मुल्याङ्कन गरी समान मुआब्जाको दाबी गरी प्रस्तुत निबेदन दायर गरेको देखिन आएकाले निबेदकको मागदाबीसँग सहमत हुन सकिएन । यसरी कानूनसम्मत, समान र उचित तवरबाट निर्धारण गरेको मुआब्जा रकमका सम्बन्धमा चलन चल्ती भन्दा अत्याधिक रकम माग गर्ने, आयोजनाहरू संचालन हुन अवरूद्ध गर्ने, तत्कालीन लागत मूल्यलाई समयमा सम्पन्न गर्न नदिई अत्याधिक बनाउने समेतका अवान्छित कृयाकलाप वा माग प्रति अदालतले अनदेखा गर्न सक्ने अवस्था पनि नरहने ।

मिति २०७२।०८।१३ को रेल्वे मार्ग निर्माण आयोजना जोगवनी विराटनगर खण्डको जग्गा अधिग्रहणसम्बन्धी मुआब्जा निर्धारण समितिको बैठकको निर्णय, मिति २०७५।०४।२५ मा नेपाल सरकार गृह मन्त्रालयको सचिव स्तरको निर्णय, मुआब्जा सम्बन्धमा प्रकाशित अन्य सूचना, ९३% भन्दा बढी व्यक्तले मुआब्जा लिई सकेका, निबेदकको जग्गाको वस्तुगत प्रकृति बमोजिम मुआब्जा रकम निर्धारण भएको, स्वभावतः जग्गाको प्रकृति बमोजिम मुआब्जा निर्धारण हुने भएको समेतका आधार कारणबाट निबेदकको कानून प्रदत्त अधिकारमा आघात परेको भन्ने देखिन नआएकाले प्रस्तुत रिट निवेदन खारेज हुने ।

इजलास अधिकृत : सलिना चापागाई पौडेल

कम्प्युटर : संदिप अवाल

इति संवत् २०८१ साल असोज ७ गते रोज २ शुभम् ।

४४

**मा.न्या.डा.श्री कुमार चुडाल र मा.न्या.श्री सुनिलकुमार पोखरेल,** *०८०-WH-०३७०, बन्दीप्रत्यक्षीकरण, प्रेम कुमार राउत वि. श्री उच्च अदालत विराटनगर, धनकुटा इजलास, धनकुटा समेत*

अभियोग पत्र तथा म्याद पूर्जीमा यी निवेदकको वतन जिल्ला भोजपुर सिद्धेश्वर गा.वि.स वडा नं.२ उल्लेख भएकोमा फरक वतन वडा नं. ८ का साक्षीको रोहवरमा म्याद पूर्जी बुझाएको तथा म्याद पूर्जी बुझाएको भनिएको व्यक्ति शान्ता राउतको सहीछाप समेत नगराई तामेल भएको उक्त म्याद पूर्जीलाई तत्काल प्रचलित मुलुकी ऐन, अ.वं. को ११० नं. को व्यवस्थाको आधारमा रितपूर्वक तामेल भएको मान्न मिल्ने देखिएन । साथै निजको अंश रोक्का भएकोले सो बाट निजले आफूउपरको अभियोगको जानकारी पाएको हो कि भन्नलाई पनि उक्त अंश रोक्काको मुचुल्का मिति २०७१।१२।१० मा भएकोमा निज सो

अवधिमा विदेशमा रहेको भई मिति २०७२।०२।०४ मा मात्र नेपाल आएको भन्ने देखिन्छ। यसरी रितपूर्वक तामेल नभएको म्यादका आधारमा सुरू धनकुटा जिल्ला अदालतबाट मिति २०७४।०७।२० मा फैसला हुँदा यी निवेदकलाई जन्मकैद सजाय हुने ठहर भई भएको फैसलालाई उच्च अदालत विराटनगर, धनकुटा इजलासबाट मिति २०७५।०६।०८ मा सदर हुने गरी फैसला भएको देखियो । सो फैसलाउपर यसै अदालतमा साधकको रोहमा पेस हुँदा समेत सुरू फैसला सदर हुने ठहऱ्याएको उच्च अदालत विराटनगर, धनकुटा इजलासबाट भएको फैसला सदर गरी सजायको हकमा सर्वस्वतर्फ मुलुकी अपराध संहिता, २०७४ बमोजिम सर्वस्व हुने गरी सजाय गर्न नमिल्ने भएकाले जन्मकैदको सजाय हुने भनी मिति २०७६।०१।१६ मा फैसला भएको देखियो । यसरी गलत ठेगानाका साक्षीको रोहवरमा म्याद पूर्जी बुझाएको व्यक्ति यी निवेदकको श्रीमती शान्ता राउतको सही छापको अभावमा निवेदककाउपर तामेल भएको म्याद रीतपूर्वक भयो र निजले सुनुवाइको मौका प्राप्त गरेको भन्न सकिने अवस्था रहेन । यस्तो म्यादका आधारमा भएको फैसलाबाट निवेदकउपर लागेको जन्मकैदको सजाय नेपालको संविधानको धारा २० समेतको प्रतिकूल हुन गएको देखिने।

निवेदकको नाममा जारी भई मिति २०७०।०४।२२ मा तामेल भएको म्याद पूर्जी र सो म्याद पूर्जीका आधारमा सुरू धनकुटा जिल्ला अदालतबाट मिति २०७५।०६।०६, उच्च अदालत विराटनगर, धनकुटा इजलासबाट मिति २०७५।०६।०८ र यस अदालतबाट मिति २०७६।१।१६ मा भएको फैसला तथा सो फैसलाको आधारमा मिति २०७९।०५।२१ मा कैदी पूर्जी जारी भई मिति २०७९।०९।२१ मा जारी संशोधित कैदी पूर्जी समेत उत्प्रेषणको आदेशले बदर गरिदिएको छ। अब, निवेदक हाल कारागार कार्यालय डिल्लीबजारमा थुनामा रहेको देखिँदा निजलाई उपस्थित गराई कानूनबमोजिम बयान लगायत सुनुवाईसम्बन्धी जो जे कारबाही गर्नुपर्ने हो गरी पुन: इन्साफ गर्नू भनी धनकुटा जिल्ला अदालतका नाउँमा परमादेशको आदेश समेत जारी गरिदिएको छ। फैसला बदर भए पनि निवेदकको विरूद्ध अभियोगपत्र कानूनबमोजिम नै दायर भई मुद्दा विचाराधीन रहेको देखिँदा बन्दीप्रत्यक्षीकरणको आदेश जारी गर्न नमिल्ने ।

इजलास अधिकृत:- अमृता बोगटी

इति संवत् २०८१ साल साउन २३ गते रोज ४ शुभम्।

४५

**मा.न्या.डा.श्री कुमार चुडाल र मा.न्या.श्री सुनिलकुमार पोखरेल,** *०७३-CI-११५७, मापदण्ड विपरीत निर्माण, आयुक्त दीपक श्रेष्ठ वि. रामदेवी मानन्धर समेत*

प्रतिवादीहरूले नगर विकास ऐन, २०४५ (संसोधनसहित) को दफा ९.१.२ विपरीत कार्य गरेको देखिएकोले सोही ऐनको दफा १८.१ अनुसार प्रतिवादीहरूलाई एक महिना कैद गर्न र सोही दफा अनुसार रू.१,००,०००।- जरिवाना गर्ने र सोही ऐनको दफा १०.१ अनुसार नक्सापास बिना मापदण्ड विपरीत छैठौ तलाको ११' X १३' को भऱ्याङ्ग छोप्ने भाग र यसको पूर्व र पश्चिमतर्फको २' को टपको भाग बाहेकको ८'६" उचाईको सम्पूर्ण भाग र सातौं तलाको सम्पूर्ण भाग ३५ दिनभित्र भत्काउन, हटाउन आदेश दिने भन्ने काठमाण्डौं उपत्यका नगर विकास योजना, कार्यान्वयन समिति काठमाण्डौंबाट मिति २०५११०६।१७ मा निर्णय भएको देखिन्छ ।सो निर्णयउपर प्रतिवादीको पुनरावेदन पर्दा काठमाडौ उपत्यका नगर विकास कार्यान्वयन समितिको मिति २०५११०६।१७ को फैसला बदर भएको देखिने।

नगर विकास समिति गठन नभएसम्म नगर

विकास समिति ऐन, २०१९ र नगर निर्माण योजना कार्यान्वयन ऐन, २०२९अन्तर्गत गठित समितिहरू यसै ऐन बमोजिम गठन भए सरह मानी कायमै रहनेछन्। यो कानूनी व्यवस्था अनुसार नगर विकास ऐन, २०२९ लाई खारेज गरी संशोधनसहित नयाँ कानूनको रूपमा नगर विकास समिति ऐन, २०४५ तर्जुमा भएको देखिन्छ ।साथै ऐ.ऐनको दफा २८.३ अनुसार नयाँ ऐन अनुसार समितिहरू गठन नभएको अवस्थामा खारेज भएको ऐनको प्रावधान लागू हुने भन्ने भई नगर योजना कार्यान्वयनका तत्कालीन कानूनबमोजिम गठित समितिलाई निरन्तरता दिएको देखिन्छ ।यसरी नगर निर्माण योजना कार्यान्वयन ऐन,२०२९ लाई बिस्थापित गरेर नगर विकास ऐन, २०४५ आएपनि सो ऐन बमोजिम समितिहरू वा सो ऐन बमोजिम भएका काम कारबाही हाल प्रचलित ऐन बमोजिम गठन भए सरह मानी कायमै रहेको मानिन आउछ । नगर निर्माण योजना कार्यान्वयन ऐन,२०२९ को दफा ४ को उप-दफा (१) ले दिएको अधिकार प्रयोग गरी नेपाल सरकारले मिति २०३३।०३।०२।०३ को निर्णय अनुसार गठित नगर विकास योजना कार्यान्वयन समिति हाल प्रचलित कानूनबमोजिम निरन्तर कायम रहने देखिन्छ ।कानूनबमोजिमको समितिमा ब्यक्ति भन्दा संस्थालाई अधिकार प्रदान गरी काम कर्तव्य र अधिकार तोकेको पाइन्छ ।यसरी अघिल्लो ऐनलाई बिस्थापित गरी पछिल्लो ऐनको निरन्तरताको रूपमा नगर विकास ऐन, २०४५ प्रारम्भ भई क्रियाशिल भएको देखिन्छ । सो ऐनको दफा ४ मा नगर विकास समिति गठन भएको र सो समितिले घर निर्माणको मापदण्ड तोक्ने, आवश्यकतानुसार नियमित नियन्त्रण, निषेध गर्न सक्ने वा कानून वा निर्देशन विपरितका निर्माण रोक्न वा भत्काउन सक्ने समेतको व्यवस्था रहे भएको देखिने।

नगर विकास ऐन,२०४५ को दफा ९.१ को कानूनी व्यवस्था अनुसार "समितिले समय समयमा स्पष्ट रूपले सार्वजनिक रूपमा सुचना प्रकाशन गरी नगर योजना क्षेत्रभित्र देहायका काम कुराहरू आवश्यकता अनुसार नियमित, नियन्त्रण वा निषेध गर्न सक्नेछ र त्यसरी नियमित, नियन्त्रण वा निषेध गरिएका काम कुराहरू समितिको पूर्व स्वीकृति विना कसैले गर्न गराउन हुदैन" भन्ने व्यवस्था रहेको देखिन्छ। त्यसैगरी ऐ.ऐनको दफा ९.१.२ को कानूनी व्यवस्था अनुसार कुनै प्रकारको भवन,कार्यालय वा अन्य कुराहरूको नयाँ निर्माण गर्न वा निर्माण भै सकेको त्यस्ता कुराहरूको बिस्तार गर्ने भन्ने कानूनी व्यवस्था रहेको देखिन्छ ।त्यसैगरी ऐ.ऐनको दफा १८.१ मा भएको कानूनी व्यवस्था हेर्दा कसैले दफा ९ अन्तर्गत समितिले नियमित, नियन्त्रण वा निषेध गरेको काम कुराहरू समितिको पूर्व स्विकृति विना गरेमा वा समितिले स्विकृति दिंदा कुनै सर्त वा मापदण्ड तोकिएको भए त्यस्तो सर्त वा मापदण्ड विपरित हुने गरी गरेमा त्यस्तो ब्यक्तिलाई समितिले अपराधको गम्भिर्यता र अभियुक्तको हैसियत हेरी बढीमा एक लाख रूपैयासम्म जरिबाना वा एक वर्ष सम्म कैद वा दुवै सजाय गर्न सक्नेछ। यी कानूनी आधारमा काठमाडौ उपत्यका नगर विकास योजना, कार्यान्वयन समिति काठमाडौबाट मिति २०५१।०६।१७ मा भएको निर्णयलाई क्षेत्राधिकार विहिन भन्न नमिल्ने।

नगर निर्माण योजना कार्यान्वयन ऐन,२०२९ को दफा ४(१)को अधिकारबाट निर्माण तथा यातायात मन्त्रालयको सुचना बमोजिम मिति २०३३।०२।०२ मा समिति गठन भएको र पछिल्लो ऐनको रूपमा रहेको नगर विकास समिति ऐन, २०४५ को दफा २८.२ तथा दफा २८.३ मा नयाँ ऐन बमोजिम समिति गठन नभएसम्म अघिल्लो ऐनले गरेको व्यवस्था बमोजिम गठित समिति मान्य हुने भनी भएको कानूनी व्यवस्थाबाट नगर विकास योजना कार्यान्वयन

समितिलाई क्षेत्राधिकार प्राप्त भई अख्तियारी भएको देखिएकोले उक्त बोर्डबाट भएको निर्णयलाई अन्यथा भन्न मिल्ने देखिएन । अतः काठमाडौ उपत्यका नगर विकास योजना कार्यान्वयन समितिबाट भएको निर्णय अख्तियारी बेगरको निर्णय भनी उक्त निर्णयलाई बदर गर्ने ठहर्‍याई पुनरावेदन अदालत पाटनबाट मिति २०७०।०५।१० मा भएको फैसला उल्टी भई काठमाडौ उपत्यका नगर विकास योजना कार्यान्वयन समितिबाट भएको निर्णय अख्तियारीसहितको निर्णय भएकोले उक्त मिति २०५१।०६।१७ को निर्णय सदर हुने ।

इजलास अधिकृत: हरि बहादुर चौधरी

कम्प्युटर : शंकर सापकोटा

इति संवत् २०८१ साल माघ १४ गते रोज २ शुभम्।

४६

**मा.न्या.डा.श्री कुमार चुडाल र मा.न्या.श्री बालकृष्ण ढकाल,** *०७४-CI-१०८७, ०८०-CI-१४९२, जग्गा हक कायम, दूषित दर्ता बदर हाल साबिक दर्ता समेत, इन्दु शर्मा वि. मिनाकुमारी मल्ल, मिनाकुमारी मल्ल वि. इन्दु शर्मा*

वादी प्रतिवादीको जग्गाको क्षेत्रफल हेर्दा वादीको भोगमा हालको कि.नं.७५ भित्र न.नं.१९, २४ र २५ को जग्गाहरू मात्र रहेका र सो जग्गाहरूको कुल क्षेत्रफल वादीको साबिक कि.नं.३३८ को क्षेत्रफल ०-७-२-० भन्दा कम नै रहेको देखिन्छ भने प्रतिवादीको भोगमा हालको कि.नं.२६ भई न.नं.५,६,७,८,२९ र ३० समेतका जग्गाहरू परेको र सो जग्गाहरूको कुल क्षेत्रफल ०-१२-०-२ भई प्रतिवादीको साबिकको कि.नं.४२० को क्षेत्रफल ०-१०-३-० भन्दा बढी भएको देखिन्छ । त्यसैगरी, विवादित जग्गाको सुरू जिल्ला अदालतको आदेशानुसार प्राप्त मिति २०७१।१२।२८ को नक्सा मुचुल्का उच्च अदालत पाटनबाट भएको मिति २०७३।०४।११ को आदेशद्वारा बदर भई पुनः मिति २०७३।०७।०४ मा भएको नक्सा मुचुल्कामा न.नं.५, न.नं.७ र न.नं. ८ मा कि.नं.७५ को वादीको भोगमा रहेको जग्गा उल्लेख भएको देखिने ।

मिसिल संलग्न नापी कार्यालयको च.नं.१७२२ मिति २०६८।०८।२८ को पत्र तथा मालपोत कार्यालयको मिति २०६८।०८।२८ को निर्णय समेतका कागजात एवम् प्रमाणहरूबाट वादीको साबिक कि.नं.३३८ हाल कि.नं.७५ भित्रको जग्गा प्रतिवादीले दर्ता नगरेको अवस्था एवं साबिकमा कि.नं.४२० हाल कि.नं.२६ को विवादित जग्गामा प्रतिवादीले वर्षौदेखि पर्खाल लगाइ भोग गरिरहेको देखिन्छ भने कि.नं.२६ भित्रको न.नं.२९ को जग्गा प्रतिवादी मिनाकुमारी मल्ललाई थप गर्दा समेत वादीको जग्गा नपुगेको देखिन्छ । न.नं.२८ को जग्गा साबिक कि.नं.३९२ को भित्रको जग्गा भई वादीको भोगमा रहेको देखिन्छ। वादीको भोगमा रहेको न.नं.२५ को क्षेत्रफल ०-४-१-०, न.नं. २८ को क्षेत्रफल ०-०-२-२ र न.नं.१९ को क्षेत्रफल ०-१-२-२ विवादित न.नं.३० को क्षेत्रफल ०-१-३-२ जोड्दा क्षेत्रफल ०-७-०-२ हुन आउँछ। साथै, साबिकमा न.नं.१९ मा मोटरबाटो नभएकोमा हाल मोटरबाटो समेत भई केही जग्गा बाटोमा परेको देखिन आउँछ । यस्तो स्थितिमा प्रतिवादीले हाल साबिक दर्ता गर्दा वादीको जग्गा समेत घुसाई दर्ता गरेकोले वादीको नाम हकका जग्गाको हदसम्मको जग्गा प्रतिवादीका नाममा दर्ता हुन नसक्ने हुँदा उच्च अदालत पाटनबाट साबिकमा कि.नं.३३८ हाल कि.नं.७५ को न.नं.३० को क्षेत्रफल ०-१-३-२ को हदसम्मको जग्गाको प्रतिवादीका नाउँको हाल साबिक दर्ता बदर भई वादीको नाउँमा दर्ता हुने ठहर गरी भएको फैसला प्रमाण, न्याय र कानूनको रोहमा मिलेको नै देखिने ।

वादी दाबी पुग्न नसक्ने ठहर गरी सुरू काठमाडौं जिल्ला अदालतबाट मिति २०७२।०५।०२

मा भएको फैसला केही उल्टी हुने ठहऱ्याई भएको उच्च अदालत पाटनको मिति २०७४।०३।११ को फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत : सुरेश खतिवडा

कम्प्युटर : संदिप अवाल

इति संवत् २०८१ साल भदौ २३ गते रोज १ शुभम् ।

## इजलास नं.१२

४७

**मा.न्या.श्री तिलप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री बालकृष्ण ढकाल,** *०७३-CR-१३६०, ०७३-CR-१२६३, वैदेशिक रोजगार कसुर, धर्मेन्द्रकुमार यादव वि. नेपाल सरकार, नेपाल सरकार*, वि. धर्मेन्द्रकुमार यादव समेत

प्रतिवादी धर्मेन्द्र कुमार यादवले अनुसन्धानको क्रममा जाहेरवालाहरूबाट जम्मा रू.१०,००,०००/- वैदेशिक रोजगारमा पठाइदिन्छु भनेर नभई घरायसी प्रयोजनका लागि लिएको हो, पीक इन्टरनेशनल एजुकेशन प्रा.लि. को रसिदको रकम र लिखत कागजको रकम एकै हो भनी बयानमा उल्लेख गरेको देखिन्छ । पुनरावेदक प्रतिवादीले के-कुन घरायसी काम कारोबारको लागि उक्त रकम लिएको भन्ने स्पष्ट खुलाएको देखिँदैन । जाहेरवालाहरूबाट लिएको रकमको भरपाईबापत निजहरूलाई पीक इन्टरनेशनल एजुकेशन प्रा.लि. को रसिद दिएको भनी पुनरावेदकले स्विकार गरेको देखिन्छ । उक्त प्रा.लि. का संचालक प्रस्तुत मुद्दाका सह-प्रतिवादी प्रेम प्रसाद नेपाल रहेको तथा सो रसिद जाहेरवालाहरूले वैदेशिक रोजगारका निम्ती सिंगापुर जानको लागि प्रतिवादीहरूलाई दिएको रकमको भरपाई भनी जाहेरी साथ प्रमाण स्वरूप पेस गरेको देखिन्छ । उक्त रसिदहरूमा visa fee भनी उल्लेख भएको समेतको अवस्थामा पुनरावेदकले जिकिर लिएको रू. १०,००,०००/- निजले जाहेरवालाहरूबाट घरायसी प्रयोजनको लागि लिएको भन्ने पुनरावेदकको कथन विश्वासनिय नदेखिने ।

प्रतिवादीहरूले जाहेरवाला जितेन्द्र सिलवाललाई वैदेशिक रोजगारको लागि झुट्टा आश्वासन दिई नक्कली भिषामा दुवईसम्म पुऱ्याएकोमा निजहरूलाई न्यूनतम पनि ३ वर्ष कैद र रू. तिन लाख जरिवाना गरिपाउँ भन्ने वादी नेपाल सरकारको मुख्य पुनरावेदन जिकिर रहेको देखिन्छ । प्रस्तुत वारदातमा जाहेरीवालामध्ये जितेन्द्र सिलवालले प्रतिवादीहरूले आफूलाई नक्कली भिषा दिई दुवई सम्म पुऱ्याएको भनी उल्लेख गरेतापनि सोको समर्थनका निम्ती निश्चयात्मक प्रमाण पेस गरेको देखिँदैन । प्रमाण स्वरूप पेस भएका नक्कली भिषाको कागजात तथा दुवई जाने जाहँजको reservation confirmation को टिकटका प्रतिलिपिहरू यी प्रतिवादीहरूले नै निज जाहेरवालालाई दिएको भन्ने देखिँदैन । प्रतिवादी धर्मेन्द्र कुमार यादवले अनुसन्धान र अदालतमा अभियोगमा इन्कार रहि बयान गरेको देखिन्छ । यी जाहेरवाला जितेन्द्र सिलवाललाई बकपत्रका निम्ती उपस्थित हुनका लागि वैदेशिक रोजगार न्यायधिकरणबाट मिति २०७२/६/१३ र २०७२/८/१६ मा पटक पटक आदेश हुँदा समेत उक्त आदेशानुसार निज बकपत्रका निम्ती उपस्थित नभई निजका एकाघरका दाई प्रचन्द्र सिलवालले जाहेरवाला जितेन्द सिलवाल दुवई गएको हुँदा बकपत्रका निम्ती उपस्थित हुन नसक्ने भनी निवेदन दिएको देखिन्छ । यसरी इजाजत पत्र विना प्रतिवादीहरूले जाहेरवालाहरूलाई वैदेशिक रोजगारमा पठाउने भनी प्रलोभनमा पारी आश्वासन दिएको देखिएतापनि जाहेरवाला जितेन्द्र सिलवाललाई दुवई पठाएको भन्ने शंकारहित तवरबाट प्रमाणित हुन नसकेको अवस्थामा वैदेशिक रोजगार न्यायाधिकरणले पुनरावेदक प्रतिवादी धर्मेन्द्र कुमार यादव समेतलाई १।६।० ( एक वर्ष छ महिना) कैद तथा

रू. १,५०,०००/- (एक लाख पचास हजार) जरिवाना गरेको फैसला अन्यथा गर्नु पर्ने नदेखिने।

सुरू वैदेशिक रोजगार न्यायाधिकरणले मिति २०७२/९/२८ मा गरेको फैसला मिलेको देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत:- सदिक्षा राउत
कम्प्युटर :- पद्मा आचार्य
इति संवत् २०८० साल चैत्र ६ गते रोज ३ शुभम् ।

४८

**मा.न्या.श्री तिलप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री बालकृष्ण ढकाल,** *०७८-CR-०१५५, ०८०-RC-००६१, हाडनाता जबर्जस्ती करणी, नेपाल सरकार वि. नाम परिवर्तित राप्ती (F), नेपाल सरकार, वि. नाम परिवर्तित राप्ती (F)*

पीडितहरू ८ वर्ष र १० वर्षका अबोध बालिकाहरू रहेका देखिन्छ । यस्ता अवोध बालिकाहरूले आफ्नै हजुरबुबाले आफुहरू माथी गरेको कार्यबाट परेको पिडा व्यक्त गरेको देखिन्छ ।प्रमाण ऐन, २०३१ को दफा १० उपदफा (१)(क)(ख) ले कुनै काम, घटना वा अवस्थाका सम्बन्धमा सो काम गर्ने वा सो काम, घटना वा अवस्था प्रत्यक्ष रूपमा देख्ने वा थाहा पाउने व्यक्ति वा सो काम, घटना वा अवस्थाबाट पीडित भएका व्यक्तिले मौकामा वा त्यसको तत्काल अघि वा पछि व्यक्त गरेको कुरा प्रमाणमा लिन हुन्छ भनी व्यवस्था गरेको छ ।जबर्जस्ती करणीको वारदातको पहिलो कडी भनेको स्वयं पीडित नै हुने हुँदा प्रस्तुत मुद्दामा पीडित बालिकाहरूले घटना विवरण कागजमा र बकपत्र गर्ने क्रममा बकेका कुराहरू प्रत्यक्ष प्रमाणको रूपमा लिनुपर्ने ।

वारदात हुँदाका बखत प्रचलित मुलुकी अपराध (संहिता) ऐन, २०७४ को दफा २१९ को उपदफा २ को स्पष्टीकरण (ग) मा "गुदद्वार वा मुखमा लिङ्ग पसाएमा, गुदद्वार, मुख वा योनिमा लिङ्ग केहि मात्र पसेको भएमा, लिङ्ग बाहेक अन्य कुनै वस्तु योनिमा प्रवेश गराएमा पनि जबरजस्ती करणी गरेको मानिनेछ" भन्ने व्यवस्था भएको र प्रस्तुत मुद्दामा यी प्रतिवादीले पीडितहरूको मुखमा लिङ्ग पसाएको भन्ने प्रतिवादीउपर किटानी जाहेरी, घटना विवरण कागज गर्ने व्यक्तिहरूको बकपत्र, पीडितहरूको मौकाको कागज र सो कागजलाई समर्थन हुने गरी गरेको बकपत्र समेतबाट प्रतिवादीले जबर्जस्ती करणीको बारदात गरेको भन्ने पुष्टि भएको देखिने।

प्रतिवादी नाम परिवर्तित राप्ती (F) लाई वारदात हुँदाका बखत प्रचलित मुलुकी अपराध (संहिता) ऐन, २०७४ को दफा २१९ को उपदफा (१) (२) र (८) एवं ऐ. को दफा २२० को उपदफा (१) र (२) (ख) को कसुरमा ऐ. को दफा २१९ को उपदफा (३) (क) बमोजिम १६ (सोह्र) वर्ष ऐ. को दफा २२० को उपदफा २ (ख) बमोजिम थप ४ (चार) वर्ष गरी जम्मा २० (बिस) वर्ष कैद र रू. ४०,०००।– (चालिस हजार) जरिवाना हुने सजाय गर्ने गरी उच्च अदालत, पाटन, हेटौंडा इजलासबाट मिति २०७७।१२।०८ मा भएको फैसला मनासिब नै देखिँदा सदर हुने ठहर्छ।साथै साधकको रोहमा पेस हुन आएको प्रस्तुत मुद्दामा समेत माथि विवेचित आधार, कारण र प्रमाणका आधारबाट प्रतिवादी नाम परिवर्तित राप्ती (F) को हकमा साधक समेत सदर हुने ।

इजलास अधिकृत:- प्रियन्का शर्मा
कम्प्युटर:- पद्मा आचार्य
इति संवत् २०८१ साल जेठ १८ गते रोज ६ शुभम्।

४९

**मा.न्या.श्री तिलप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री नित्यानन्द पाण्डेय,** *०८०-RB-०३६९, बैंकिङ्ग कसुर, हरिप्रसाद लामिछाने वि. नेपाल सरकार*

प्रस्तुत मुद्दामा उल्लिखित कृषि बिकास बैंक लिमिटेडको खाताको चेक नं. ००१९४९३६९१ बाट

रू. १३,००,०००/- (तेह्र लाख रूपैयाँ) र चेक नं. ००१९४९३६९५ बाट रू. १२,००,०००/- (बाह्र लाख रूपैयाँ) गरी जम्मा रू. २५,००,०००।- भुक्तान हुने गरी प्रतिवादीले जाहेरवालालाई थान-२ चेक काटी दिएकोमा विवाद नरहेको,

उक्त चेक भुक्तानीका लागि बैंङ्कसमक्ष पेस गर्दा खातामा प्रर्याप्त रकम मौज्दात नरहेको कारण भुक्तानी हुन नसकेको भन्ने समेत बेहोराको कृषि बिकास बैंक लिमिटेडको मिति २०७८।०७।०८ च.नं. ५१ को पत्रबाट देखिएको,

दाबीको चेक आफुले जारी गरेको कुरा स्वीकार गरी पुनरावेदक प्रतिवादीले सुरू अदालतसमक्ष उपस्थित भई बयान गरेको।

प्रतिवादीले चेकमा उल्लिखित रकम बाहेक जाहेरवालालाई रू ८ लाख दिएको भन्ने जिकिर पुष्टी हुने कुनै लिखत प्रमाण पुनरावेदनपत्रसाथ पेस दाखिल गर्न नसकेको। पुनरावेदक प्रतिवादी र जाहेरवालाविच मिलापत्रको लागि पहल भएको भन्ने कुनै लिखत बेहोरा मिसिल संलग्न रहेको नदेखिने।

प्रतिवादी हरिप्रसाद लामिछानेलाई बैंकिङ कसुर तथा सजाय ऐन, २०६४ को दफा ३(ग) को कसुरमा सोही ऐनको दफा १५(१) बमोजिम चेकमा उल्लिखित बिगो रू.२५,००,०००।– (पच्चिस लाख) प्रतिवादीबाट जाहेरवालालाई भराई प्रतिवादीलाई बिगो बमोजिम जरिवाना र ६ (छ) दिन कैद सजाय हुने समेत ठहरी उच्च अदालत पाटनबाट मिति २०७९।०९।२६ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत: लेखनाथ पौडेल

फैसला टिपोटमा सहयोगीः- भुपा राज राई

इति संवत् २०८१ साल मङ्सिर १६ गते रोज १ शुभम्।

- यसै लगाउको ०८०-RB-०३६८, बैकिङ्ग कसुर, हरिप्रसाद लामिछाने वि. नेपाल सरकार मुद्दाहरूमा यसैनुसार फैसला भएको छ।